

रेल रश्मि

अंक : 59, मार्च, 2013



पूर्वोत्तर रेलवे राजभाषा विभाग की त्रैमासिक पत्रिका



27.02.13 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
की बैठक को संबोधित करते महाप्रबंधक
श्री कृष्ण कुमार अटल
साथ में श्री एच.के.अग्रवाल, मुराधि,
श्री शैलेश कुमार सिंह, उप निदेशक/कार्यान्वयन,
गृह मंत्रालय, श्री संजय यादव, उप मुराधि



27.02.13 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
की बैठक में भाग लेते सदस्यगण



17.01.13 को मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति
की बैठक को संबोधित करते
श्री एच.के.अग्रवाल, मुराधि साथ में
श्री संजय यादव, उप मुराधि व
श्री वी.डुंगडुंग, वराधि



17.01.13 को आयोजित मुख्यालय राजभाषा
कार्यान्वयन समिति की बैठक में भाग लेते
सदस्यगण



हमारे नए महाप्रबंधक



श्री कृष्ण कुमार अटल 17 जनवरी, 2013 को इस रेलवे के महाप्रबंधक का पदभार ग्रहण कर लिया। इसके पूर्व आप पश्चिम रेलवे, मुम्बई में मुख्य यांत्रिक इंजीनियर के पद पर कार्यरत थे।

21 अगस्त, 1954 को जन्मे श्री अटल स्पेशल क्लास रेलवे अप्रेंटिस (एस.सी.आर.ए.) 1972 बैच के माध्यम से भारतीय रेलवे यांत्रिक इंजीनियरिंग सेवा (आई. आर.एस.एम.ई.) में 12 मार्च, 1977 को आये तथा आपकी पहली नियुक्ति सहायक यांत्रिक इंजीनियर के पद पर भावनगर पारा, पश्चिम रेलवे में हुई। अपने उत्कृष्ट कैरियर के दौरान श्री अटल ने अनेक महत्वपूर्ण पदों पर उल्लेखनीय सफलता के साथ कार्य किया है। आपने कार्यकारी निदेशक यांत्रिक इंजीनियरिंग (कर्षण) रेलवे बोर्ड/नई दिल्ली, मुख्य यांत्रिक इंजीनियर, काफमाऊ/ नई दिल्ली, मंडल रेल प्रबंधक, पश्चिम रेलवे/कोटा, मुख्य कारखाना प्रबंधक, पश्चिम मध्य रेलवे/भोपाल, मुख्य यांत्रिक इंजीनियर, रेल पहिया कारखाना/येलहंका, मुख्य कारखाना प्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे/रायपुर, मुख्य कारखाना प्रबंधक, दक्षिण पूर्व रेलवे/खड़गपुर तथा मुख्य यांत्रिक इंजीनियर, पूर्व तटीय रेलवे/भुवनेश्वर आदि पदों के दायित्वों का निर्वाह सफलतापूर्वक किया है। श्री अटल ने प्रतिनियुक्ति पर रिपब्लिक ऑफ जार्जिया के तिबलिसी में यू. एन. वर्ल्ड फूड प्रोग्राम में भी कार्य किया है। आपने 'ट्रेनिंग इन फ्यूल इफीशियेंट ड्राइविंग टेक्नीक्स' में प्रशिक्षण हेतु यू.के., यू.एस.ए. तथा कनाडा की यात्रा भी की है।

श्री अटल को रेल प्रबंधन एवं प्रशासन का गहन अनुभव प्राप्त है। आप रेल अधिकारियों एवं कर्मचारियों में समान रूप से लोकप्रिय हैं।

संपादक की कलम से...



किसी भी विभाग की गृह पत्रिकाएं विभागीय गतिविधियों का दर्पण ही नहीं, बल्कि वह अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा स्वरचित लेख, जीवनवृत्त, लघुकथाएं, चुटकुले, संस्मरण आदि उनकी लेखन प्रतिभा को सुधि पाठकों के बीच आपस में बांटना भी होता है। 'रेल रश्मि' पत्रिका के माध्यम से भी रचनाकारों ने पर्याप्त मनन-चिंतन के बाद ही आपके समक्ष अपने विचारों को सुलझे हुए मानसिकता से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

मेरे विचार से रचनाकारों को कभी-कभी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक परिवेश से उपजे मन के विचारों को कलमबद्ध करने के लिए मजबूर कर देता है। विभागों के परिवेश के कारण भी ऐसा ही होता है। अतः मैं समझता हूं कि किसी भी विभाग की गृह पत्रिकाएं विभागीय गतिविधियों की दर्पण होती है। पत्रिका के माध्यम से अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लेख, कविताएं, भूले-बिसरे यादें ही उनके प्रतिभा के माध्यम से उनकी अंदर की लेखन-प्रतिभा को आपके समक्ष उजागर करने का प्रयास किया गया है। पत्रिका ही ऐसा माध्यम है जिसमें अधिकारी एवं कर्मचारी अपनी साहित्यिक भावनाओं एवं रचनाओं के माध्यम से अनुभवों को आपस में आदान-प्रदान करते हैं।

यह पत्रिका आप सभी के सामूहिक प्रयास रचनाधर्मिता के फलस्वरूप एवं आपसी सहयोग से पूरा हो सका है। मुझे पूर्ण-विश्वास है कि आगे भी आपका भरपूर सहयोग मिलता रहेगा।

आप सभी सुधी-पाठकों को नव वर्ष 2013 की ढेर सारी शुभकामनाएं।

(वी. डुंगडुंग)

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

रेल रश्मि

त्रैमासिक पत्रिका

अंक : 59

मार्च, 2013

संरक्षक:

कृष्ण कुमार अटल

महाप्रबंधक



मुख्य संपादक:

एच. के. अग्रवाल

मुख्य राजभाषा अधिकारी



परामर्शदाता:

रण विजय सिंह

मुख्य परिचालन प्रबंधक



उप मुख्य संपादक:

संजय यादव

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी



संपादक:

वी. डुंगडुंग

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी



सह संपादक:

ध्रुव कुमार श्रीवास्तव

राजभाषा अधिकारी



उप संपादक व समस्त संपादन:

सुनील कुमार

वरिष्ठ अनुवादक



पता : राजभाषा विभाग

मुकाधि कार्यालय परिसर

पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर-273012

टेलीफोन- 62852 एवं 62859 (रेलवे)

0551-2203396

ई-मेल- seniorol9@gmail.com

इस अंक में

3 आपने लिखा है

7 अहा! वह बचपन, वे दिन (संस्मरण)

9 होली: प्रकृति के पुनर्नवा होने का पर्व (चिंतन)

11 अज्ञेय की साहित्य-साधना (साहित्य)

13 भारतीय ग्रामीण समाज व्यवस्था के चित्रकार: शिवमूर्ति (आलेख)

15 तुलसी एवं कबीर के 'राम' (लेख)

18 स्मृति-शेष (कहानी)

20 उसी राह पर (कहानी)

23 काम (कहानी)

25 चिराग तले अंधेरा (कहानी)

28 हर्षवर्धन ने किसी के लिए हाथ हिलाया,

किसी के लिए सिर

30 दुर्घटना बचाव और आप (तकनीकी लेख)

32 फायर (सुरक्षा)

36 दरकते मानवीय रिश्ते (लेख)

38 बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी- स्वामी विवेकानंद (लेख)

41 कंप्यूटर का हिंदी भाषा और नागरी लिपि

पर प्रभाव (लेख)

42 लघु कथाएं

43 हम वो बंजारे थे जिनको मंजिलों से डर लगा (समीक्षा)

45 पनही- कुंभनदास की (व्यंग्य)

डा. परमानंद श्रीवास्तव

डा. रामदेव शुक्ल

चेतन दुबे 'अनिल'

रणजीत कुमार सिन्हा

डा. शैलेंद्रमणि त्रिपाठी

राजेश हजेला

डा. कृष्ण चंद्र लाल

नीलम प्रभा श्रीवास्तव

कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव

सुरभि श्रीवास्तव

एन. के. सिन्हा

ए. के. सिन्हा

सुनील कुमार

श्याम बाबू शर्मा

संजीव कुमार

अमित कुमार

नूर मुहम्मद 'नूर'

रण विजय सिंह

कविता, गीत एवं गजल

47 गुज़लें

48 कविताएं

48 गीत

49 कविताएं

50 कविताएं

51 कविताएं

52 कविताएं

53 कविताएं

55 कविताएं

56 कविताएं

57 रंगों की सेल (कविता)

58 कविताएं (हास्य-व्यंग्य)

59 गतिविधियां

डा. कृष्ण कुमार सिंह 'मयंक'

सुधीर कुमार 'चंदन'

अशोक कुमार श्रीवास्तव 'ऋषि'

अनिल कुमार दत्ता

अरुण गोरखपुरी

अरुण कुमार श्रीवास्तव

नरसिंह बहादुर 'चंद' कौशिक

तारकेश्वर शर्मा 'विकास'

श्रीमती ज्योत्सना श्रीवर्मा

यशवीर सिंह

सुनील कुमार श्रीवास्तव

महेंद्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

निःशुल्क वितरण हेतु

(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं)

◆ आपने लिखा है ◆

पूर्वोत्तर रेलवे राजभाषा विभाग का स्तुत्य प्रयास है 'रेल रश्मि'। अंक 58 (दिसंबर 2012) में चित्तरंजन मिश्र का लेख पढ़कर यही कहूंगा कि सभ्यता का विकल्प हो ही नहीं सकता। हमेशा की तरह रण विजय सिंह का व्यंग्य 'जनलोकपालाय नमो नमः' धारदार है।

भाई रामदेव शुक्ल, सत्या श्रीवास्तव, सुनील कुमार एवं सूर्या शेखर के लेख पसंद आये। मुहम्मद असलम की गज़ल, वफा गोरखपुरी, कृष्ण गोपाल 'रिक्तेश' की काव्य रचनाएं आकृष्ट करती हैं। अनामिका सिंह की 'गीता पुनीता' में अच्छा संयोजन है।

आमुख को देखकर याद आया कि जहां टंड से जनवरी के पहले पखवारे में पूरा उत्तर प्रदेश सिहर रहा है और 09 जनवरी 2013 को ऋणात्मक एक से नीचे पहुंचकर टंड ने अब तक के सारे रिकार्ड तोड़ दिए हैं। आपकी और हम सबकी पत्रिका सतत् विकास की राह पर है बधाई!

डा. परमानंद श्रीवास्तव
बी-70, सूर्यकुंड कालोनी
गोरखपुर

'रेल रश्मि' के अंक 55 (मार्च 2012) काफी अच्छा है। 'मैं जिम्मेदार नहीं' व्यंग्य एवं 'सीताजी की चिट्ठी श्रीराम के नाम' बहुत ही अच्छा लगा। पर पूरे तौर से पत्रिका की हर लेख एवं कविताएं अच्छी हैं। आशा है आगे भी ऐसी ही अच्छी लेख छपती रहेगी।

अध्यापक
खड़गपुर कॉलेज (हिंदी विभाग)
खड़गपुर, पश्चिम मिदनापुर (प.बंगाल)
संपर्क: 9434153501¹²

'रेल रश्मि' का अंक 58 मिला। अंक की प्रत्येक रचना उत्कृष्ट, पठनीय एवं रोचक है। ऐसे महत्वपूर्ण संयोजन के लिए बधाई। रामदेव जी को पढ़ना एक अनुभव से गुजरने के समान है। उनका संस्मरण छोटा परंतु मार्मिक है। हर अंक में उनका संस्मरण जाए तो रेल रश्मि की गरिमा बढ़ेगी। ऐसा ही परमानंद जी के साथ भी है। उनका संस्मरण सूचनाप्रद एवं इसी पारी के साहित्यिक धरोहर को चित्रित करने वाली है। रण विजय सिंह जी का व्यंग्य हर बार की तरह उस विषय विशेष रेल रश्मि-अंक 59

पर सोचने के लिए नया कोण दे गया। अंक की एक और रचना आत्मिक सौंदर्य हृदय में गहरे उतर गयी।

पत्रिका का हर अंक जिस तरह से रचनाओं के मामले में समृद्ध है, प्रशंसनीय है। रेल रश्मि का हर अंक समृद्ध और उत्कृष्ट हो यही कामना है।

अमित कुमार
भारतीय खाद्य निगम
179/2, बेतियाहाता, गोरखपुर

रेल रश्मि का अंक 58 मिला। चित्ताकर्षक मुखपृष्ठ के आवरण में परोसी गई सामग्री मनोरम एवं रससिक्त लगी। विशेष रूप से डा. परमानंद श्रीवास्तव, चित्तरंजन मिश्र, सत्या श्रीवास्तव, प्रो. रामदेव शुक्ल एवं सूर्या शेखर के लेख पठनीय, सारगर्भित हैं। चिकित्सा एवं तकनीक विषयक लेख उपयोगी लगे। कविता खंड में प्रो. अनंत मिश्र, गणेश पांडेय, अरुण गोरखपुरी, हरीलाल, असलम, कृष्ण गोपाल एवं अनामिका की रचनाएं सामयिक एवं प्रेरक हैं।

श्री रण विजय सिंह जी का व्यंग्य 'जनलोकपालाय नमो नमः' टटके स्वाद वाला है।

नरसिंह बहादुर चंद
33 रीड्स धर्मशाला, गोरखपुर
संपर्क: 9335635326

रोचक परिकल्पना

आपकी सुप्रतिष्ठित पत्रिका रेल रश्मि का दिसंबर अंक प्राप्त हुआ। इस अंक में रण विजय सिंह का मजेदार व्यंग्य 'जनलोकपालाय नमो नमः' में कलाम साहब के वक्तव्य और नयी जेलों के बनाये जाने की परिकल्पना रोचक है। एकादशाक्षरी मंत्र की महत्ता के लिए अलग से किसी परीक्षण की वाकई कोई आवश्यकता नहीं। यह मंत्र और सुझाये गये उपाय देश से भ्रष्टाचार की महामारी को मिटाने में सक्षम होंगे। इसीतरह पुस्तक समीक्षा सहित सड़क पर शायरी (प्रभाकर मिश्र), बचपन के वे दिन (प्रो. रामदेव शुक्ल) आत्मिक सौंदर्य (सुनील कुमार) जीने में हैं पर्वों की उत्सवधर्मिता (सत्या श्रीवास्तव), खेलों में भारत का स्थान संतोषजनक नहीं (सूर्या शेखर) सामयिक, उपयोगी और पठनीय हैं।

इसी अंक में नरसिंह बहादुर चंद, अरुण गोरखपुरी,

हरिलाल मिलन, अखिलेश तिवारी, असलम, सुशील 'साहिल', कृष्ण गोपाल 'रिक्तेश' एवं अनामिका सिंह की काव्य रचनाएं मन का विरेचन करने में सफल हैं।

भारतीय नववर्ष, होली एवं रामनवमी की बधाई स्वीकारें।

अखिलेश चंद
व्यवस्थापक 'आज'
गोरखपुर

सारगर्भित लेख

विसंगति में संगति तलाशती रेल रश्मि पत्रिका का दिसंबर अंक मिला। आद्योपांत पढ़ा। साहित्यिक अनुबंधों पर खरी उतरती कहानियां, कविताएं व लेख सारगर्भित रहे। कुछ कह गुजरने की छटपटाहट मिली। बेहद रोचक इस पत्रिका के लिए संपादक एवं सहयोगियों को बधाई। कुछ और बेहतर आने की उम्मीद में...।

अचल मिश्रा
सूर्यकुंड कालोनी
संपर्क: 8601078130

संग्रहणीय अंक

रेल रश्मि का नया अंक मिला। इस अंक में शैलेंद्रमणि त्रिपाठी, सत्या श्रीवास्तव, सुनील कुमार, चित्तरंजन मिश्र, सूर्या शेखर एवं सुरेंद्र दुबे के लेख अच्छे लगे। कहानियों की कमी कुछ खटकी, कविता खंड में अरुण गोरखपुरी, कृष्ण गोपाल, अनामिका एवं नरसिंह बहादुर चंद की रचनाएं अच्छी लगी। संग्रहणीय अंक के लिए बधाई।

दिवाकर शुक्ल
तिवारीपुर, गोरखपुर
संपर्क: 9305083535

'रेल रश्मि' का अंक 58 पांप्त हुआ। अंक पठनीय एवं समाजोपयोगी है। लेख सभी अच्छे और सामयिक हैं। जीवन, समय, नववर्ष डा. शैलेंद्रमणि त्रिपाठी, पर्वों की उत्सवधर्मिता है जीने में (सत्या श्रीवास्तव) आत्मिक सौंदर्य (सुनील कुमार) बचपन के वे दिन (प्रो. रामदेव शुक्ल) खेलों में भारत का स्थान (सूर्या शेखर) सामयिक और स्तरीय लगे। रण विजय सिंह का व्यंग्य 'जनलोकपालाय नमो नमः' कुछ ज्यादा बौद्धिक हो गया है।

रेल रश्मि-अंक 59

कविताओं में कृष्ण गोपाल 'रिक्तेश', प्रो. अनंत मिश्र, नरसिंह बहादुर चंद, अरुण गोरखपुरी, हरिलाल, गणेश पांडेय और असलम की काव्य रचनाएं रोचक रही। होलिकोत्सव एवं भारतीय नववर्ष की आपको एवं सभी पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएं।

जगदीश चंद्र श्रीवास्तव
जिला अध्यक्ष

प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक जर्नलिस्ट एसोसियेशन
सूर्यकुंड, गोरखपुर
संपर्क: 9696706842

पूर्वोत्तर रेलवे राजभाषा विभाग की त्रैमासिक पत्रिका रेल रश्मि का अंक 58 (दिसंबर 2012) अवलोकनार्थ मिला। पत्रिका के अधिकांश लेख चिंतन और मनन करने योग्य हैं। उनमें संस्मरण 'क्यों कहा था फिराक ने' (डा. परमानंद श्रीवास्तव), 'बचपन के वे दिन' (प्रो. रामदेव शुक्ल) 'हिमालय के दुर्गम पथ पर' (रामचंद्र मिश्र) के अलावा 'आत्मिक सौंदर्य' (सुनील कुमार), 'जीने में है पर्वों की उत्सवधर्मिता' (सत्या श्रीवास्तव) एवं 'जीवन, समय एवं नववर्ष' (डा. शैलेंद्रमणि त्रिपाठी) बहुत पसंद आए।

अन्य लेखों में सूर्या शेखर का 'खेलों में भारत का स्थान', 'नयी तकनीक-क्रैश बफर' (पी.एन.कुमार) एवं 'पारकिंसन रोग' पर सी.पी.दुबे के लेख सामयिक एवं उपयोगी हैं। रण विजय सिंह की व्यंग्य रचना 'जनलोकपालाय नमो नमः' भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था पर आघात करने वालों की क्षुद्र मानसिकता पर जोरदार आघात करता है। इस बार कहानी खंड उपेक्षित दिखा, किंतु कविताओं में प्रो. अनंत मिश्र, नरसिंह बहादुर चंद 'कौशिक', ए.के. दत्ता, गणेश पांडेय, कृष्ण गोपाल 'रिक्तेश', अनामिका सिंह एवं अरुण गोरखपुरी ने समर्थ रचनाओं से मन मोह लिया। हरींद्र द्विवेदी की पुस्तक समीक्षा 'ये यथार्थ के दंश हमारे-डा. के.सी.लाल' अच्छी लगी जिससे पुस्तक सामग्री के विषय में रोचक जानकारी मिली। होली एवं रामनवमी पर्व की बधाई।

रविप्रकाश गोयल
ट्रस्टी, श्री श्याम प्रभु एवं
श्री राणी सती दादी ट्रस्ट
करोड़ीमल का अहाता
सुमेर सागर, गोरखपुर

‘रेल रश्मि’ पत्रिका का सितंबर 2012 का अंक-57 मिला। यह अंक पहले के अन्य अंकों की तरह स्तरीय है। इस अंक में सुरेंद्र दूबे का लेख ‘स्वाधीनता संघर्ष और हिंदी साहित्य’ स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान साहित्यकारों द्वारा भारतीय जनमानस को जगाने के कार्य को रेखांकित करता है। जगदीश नारायण श्रीवास्तव का लेख ‘हिंदी की व्यापकता के समक्ष चुनौतियाँ और संभावनाएँ’ हिंदी के प्रसार में रोड़े अटकाती समस्याओं को इंगित करता है। सुनील कुमार का लेख ‘हिंदी राष्ट्रीयता का मंत्र’ हिंदी के विकास के साथ राष्ट्रवाद के पोषण को दर्शाता है। अन्य लेख भी रुचिकर तथा चिंतन के योग्य हैं।

कविताओं में डॉ. मुरारीलाल सारस्वत की ‘सम्मान करो तुम हिंदी का’ शीर्षक कविता चिर-स्मरणीय है। सुधीर कुमार चंदन की कविता ‘हिंदी वंदन’ हिंदी प्रेम के रास्ते का मील का पत्थर है। अनिल कुमार दत्ता की कविताएं पहले की तरह ओजस्वी हैं। बी.आर. विप्लवी तथा विनय मिश्र की गज़लें मर्मस्पर्शी हैं।

इस नये अंक के लिए बधाई एवं आगामी अंकों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

पी. बी. सिंह
राजभाषा अधिकारी
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पश्चिम रेलवे, राजकोट-360001

इन दिनों आप मार्च अंक की तैयारियों में होंगे। आपकी पत्रिका ‘रेल रश्मि’ का दिसंबर 2012 अंक देखने को मिला। इसमें डा. परमानंद श्रीवास्तव, डा. शैलेंद्रमणि त्रिपाठी, सत्या श्रीवास्तव, डा. रामदेव शुक्ल, सुनील कुमार एवं रण विजय सिंह की रचनाएं विशेष रूप से प्रभावित करने वाली हैं। सूर्या शेखर ने खेलों में भारत की वर्तमान दुर्दशा के कारणों की ओर भी सही संकेत किए हैं। मैं लेख की स्थापनाओं से पूरी तरह सहमत हूँ।

कविताओं में नरसिंह बहादुर चंद, ए.के. दत्ता, प्रो. अनंत मिश्र, असलम, कृष्ण गोपाल ‘रिक्तेश’ एवं अनामिका सिंह की रचनाएं पसंद आई। आप लोगों को होलिकोत्सव एवं भारतीय नववर्ष की हार्दिक बधाई!

दीपक चक्रवर्ती निशांत
सचिव, आधारशिला, हुमायूँपुर उत्तरी, गोरखपुर
रेल रश्मि-अंक 59

विचारोत्तेजक सामग्री

‘रेल रश्मि’ के अंक 57 एवं 58 देखने-पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। दिसंबर अंक (58) में यद्यपि लेखों की बहुलता रही, किंतु सभी लेख हैं एक-से-एक विचारोत्तेजक एवं मनन करने योग्य।

अंक 58 (दिसंबर 2012) में प्रकाशित लेखों में ‘क्यों कहा था फिराक ने’ (डा. परमानंद श्रीवास्तव), ‘सभ्यता का विकल्प’ (चित्तरंजन मिश्र), ‘जीने में हैं पर्वों की उत्सवधर्मिता’ (सत्या श्रीवास्तव), ‘आत्मिक सौंदर्य’ (सुनील कुमार), ‘सड़क पर शायरी’ (प्रभाकर मिश्र), ‘खेलों में भारत का स्थान’ (सूर्या शेखर) समेत रण विजय सिंह का व्यंग्यपरक साहित्य ‘जनलोकपालाय नमो नमः’ विशेष रूप से पठनीय है। मैं सूर्या शेखर के लेख की विशेष प्रशंसा करना चाहूंगा जिन्होंने बेबाकी से खेल जगत की विषमताओं को रेखांकित किया है। इसी तरह रण विजय सिंह का व्यंग्य भी पैना और धारदार है।

‘रेल रश्मि’ के सितंबर अंक में स्वाधीनता संघर्ष और हिंदी साहित्य (सुरेंद्र दूबे), ज्योति से ज्योति (शैलेंद्रमणि त्रिपाठी), आम को खास बनाने की राह (श्याम बाबू शर्मा), विश्वभाषा बनने की दिशा में अग्रसर हिंदी (सूर्या शेखर) हिंदी: राष्ट्रीयता का मंत्र (सुनील कुमार) आजाद देश के गुलाम खेल (रामाश्रय यादव) जार्ज बुश की हिंदी सेवा (रण विजय सिंह) एवं सत्या श्रीवास्तव की कहानी ‘गौरी’ प्रशंसनीय हैं। इन दोनों अंकों की कविताओं में अनंत मिश्र, नरसिंह बहादुर चंद, ए.के. दत्ता, अरुण गोरखपुरी, कृष्ण गोपाल ‘रिक्तेश’, गणेश पांडेय, सुरभि श्रीवास्तव एवं अनामिका सिंह की कविताएं सराहनीय हैं।

महेंद्र नाथ श्रीवास्तव
मुख्य चल टिकट निरीक्षक
गोरखपुर (पश्चिम)

बधाइयां

‘रेल रश्मि’ उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर है। पत्रिका के लेख अत्यंत ही प्रभावोत्पादक हैं। विशेषकर जीने हैं पर्वों की उत्सवधर्मिता (सत्या श्रीवास्तव), आत्मिक सौंदर्य (सुनील कुमार), सड़क पर शायरी (प्रभाकर मिश्र), क्यों कहा था फिराक ने (डा. परमानंद श्रीवास्तव), खेलों में भारत का स्थान (सूर्या शेखर) एवं जनलोकपालाय नमो नमः (रण विजय सिंह)। अंक वाकई संग्रहणीय है। वैसे

भी इस पत्रिका के प्रत्येक अंक संग्रहणीय होते हैं।

इन दिनों आप 59वें अंक में होलिकोत्सव एवं रामनवमी से संबंधित सामग्री संजोने में व्यस्त होंगे। इन पर्वों की आपकी टीम और पाठक वर्ग को शुभकामनाएं। भारतीय नववर्ष की बधाइयां स्वीकारें।

वास्तव में राम और कृष्ण भारतीय संस्कृति के आधार-स्तंभ और भारतीय जन-मानस की निष्ठा एवं आस्था का केंद्र हैं। इन दोनों के ही रंगों से भारत जितना रंगा हुआ है, उतना किसी अन्य देवी-देवता या ईश्वर के रूप से नहीं। भगवान शिव भी श्रीराम की आराधना करते हैं। यह बात और कि श्रीराम भी शिव-पार्वती के निष्ठावान आराधक हैं। वह महिषासुर-मर्दिनी की पूजा करके शक्ति अर्जित करने का तरीका भलीभांति जानते हैं।

प्रत्येक भारतीय की आस्था निहित है राम और कृष्ण

में। पिछले दिनों कुंभ मेला जाने का अवसर हुआ। वहां भी 'गंगा मैया की जय' के उद्घोष के बीच 'श्रीराम जय राम जय-जय राम' और 'गोपाल कृष्ण राधे कृष्ण' का घोष सुनने को मिला जो अब भी गूंज रहा है कर्णपटों पर... जिसे राम राखे, उसे कौन चाखे! इसीलिए तो कई लोग अभिवादन में 'जय श्रीराम जी की' कहकर श्रद्धा की अभिव्यक्ति करते हैं। पुनः बधाइयां क्योंकि आप राष्ट्रभाषा हिंदी एवं हिंदी-भाषियों की अच्छी एवं सार्थक सेवा कर रहे हैं।

वी. के. श्रीवास्तव
आकाशवाणी, गोरखपुर
संपर्क: 9415854931

श्री रण विजय सिंह, मुख्य परिचालन प्रबंधक एवं परामर्शदाता
रेल रश्मि पत्रिका को रेलवे बोर्ड ने हिंदी में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए
वर्ष 2011-12 के रेलमंत्री राजभाषा पदक से सम्मानित किया है।



सत्यमेव जयते

राजभाषा विकास का सांविधिक निदेश

संविधान का अनुच्छेद-346

‘संघ में शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने के लिए तत्समय प्राधिकृत भाषा, एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच तथा किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा होगी; परंतु यदि दो या अधिक राज्य यह करार करते हैं कि उन राज्यों के बीच पत्रादि की राजभाषा हिंदी भाषा होगी तो ऐसे पत्रादि के लिए उस भाषा का प्रयोग किया जा सकेगा।’



अहा! वह बचपन, वे दिन

डा. परमानंद श्रीवास्तव

बचपन को याद करना अच्छा लगता है, किंतु उन दिनों के बारे में यथावत् लिख पाना दुष्कर। पिता का जैसा आतंक था, उसमें ज्यादातर समय तो मेरा घर के भीतर ही बीतता। स्कूल जाना, स्कूल से लौटना याद है। यही नहीं, अंग्रेजों की हुकूमत का ढंग याद है कि अचानक स्कूल बंद कर दिया गया है और डर से हम सब बच्चे चुपचाप एक ओर बंदहवास होकर भाग रहे हैं। बड़े भाई आगे निकल गये हैं और मैं छूट गया हूँ पीछे। फिर कोई पहचान कर मुझे छोड़ जाता है मेरे घर पर।

तत्कालीन कस्बे का ढंग यह है कि बीच बाजार, सड़क चौराहे पर अक्सर किसी को मार दिया जाता है। उस हत्या कांड की सनसनी महज दो-चार दिन ही रहती है। फिर सब गुम हो जाता है समय के क्रूर धूल-धक्कड़ में। 'आउट साइडर' होने के लिए अस्तित्ववाद पढ़ने की जरूरत नहीं थी। कस्बे का जो परिवेश था, उससे कोई रिश्ता कभी बना ही नहीं। एक प्रकार से पिता के साथ एक तनावभरा अपरिचय-सा बना रहा। ऐसी ही स्थिति कस्बे के साथ रही।

पिता का आतंक इसी अजनबियत को, ऊब और उदासी को, अलगाव और आत्मनिर्वासन को प्रगाढ़ करता है। अब यह सोचकर वाकई बेहद अजीब लगता है कि एकदम से बचपन के अबोध अनुभवों में यह सब कैसे घुस आया था।... इसी के मध्य पिता की असीमित कठोरता हर बार एक डरावना अनुभव दे ही जाती। कुछ राहत तब मिलती जब उन्हें शास्त्रीय संगीत के तन्मय अनुशासन में देर तक गाते देखता और सुनता।

बिना संगीत का व्याकरण जाने एक विलक्षण सांगीतिक सम्मोहन में घिरा रहता, किंतु यह रोमांचकारी आह्लाद मात्र क्षणिक ही होता था। अधिकतर तो क्रुद्ध पिता की डांट-फटकार ही सुनायी देती। हमारे समाज में अधिकतर गालियों का लक्ष्य स्त्रियां, उनकी शारीरिक बनावट आदि है। पिता का क्रोध गालियों से परहेज भला क्यों करता?

मेरे मन में गहरा विरोध तभी उत्पन्न हुआ और एक दिन पत्र लिखकर मैंने अपना विरोध पिता से जता भी दिया। अपने को तैयार करना पड़ा था कि इस पत्र पर रेल रश्मि-अंक 59

उनकी कैसी प्रतिक्रिया हो, झेल लूंगा; किंतु वे तो पत्र पाकर चुप ही लगा गये। पिता के साथ मेरे अनबन की लंबी कहानी है। मेरी कहानी 'मृत्यु' में इसकी झलक बेहद साफ है मेरी एक अन्य कहानी 'वहीं' में कुछ अंश आया है।

बचपन में सुंदरता, कोमलता, भावनात्मकता, लगाव का जो भी अहसास जगा और पनपा, पल्लवित-पुष्पित हुआ; उसकी प्रेरणा मां ही थी। मामूली कद-काठी की दुबली-पतली मां में असीमित सहनशीलता थी। पिता का दुर्दम्य क्रोध झेलती वह हमेशा सहज मिला करती थी सबसे। सबके सुख-दुख में समान रूप से शरीक। बेहद भयानक किस्म के तमाम रोगियों की सेवा में तो उनकी तत्परता चकित करनेवाली होती थी।

मां का स्वभाव कुछ ऐसा भी था कि छोटी-बड़ी तमाम लड़कियां उन्हें अक्सर घेरे ही रहा करतीं। दोपहर उनकी कुछ ऐसे बीतती जैसे कि सिलाई-कढ़ाई का कोई अनाम स्कूल खोल रखा हो उन्होंने। मेरे मन में हमेशा इस अनाम कक्षा में व्याप्त सहज उल्लास का साझा करने की इच्छा बनी रहती। कई बार लगता कि मेरा भाव-लोक उन्हीं के इर्द-गिर्द जीवित है। वहीं से जीवन-रस खींचता है। यह था मेरा निश्छल और अबोध बचपन।

इसी अबोध और निष्कलुष बचपन के मध्य किसी एक को चाहने, पत्र लिखने, उससे कई तरह के अनुभवों का साझा करने का मन भी बना। ...ओह, मेरे अबोध बचपन के दिन- कैसे-कैसे तो। कस्बे में दूर पुलिया पर किसी शाम बैठे हैं और सोच रहे हैं कि अब आज घर कतई नहीं जाएंगे। कहां जाएंगे, यह भी पता नहीं था। कुछ था जो कि मुझे सदैव भटकाव के लिए ही उकसाता रहता।

जैसा कि नियति (डेस्टिनी) ने तय कर दिया हो- सीधी पटरी पर नहीं जाना था; सो नहीं गया। अब तो मेरे जीवन में बहुतों को अनुशासन ही अनुशासन दीखता है। सुव्यवस्थित कार्य-व्यापार दीखता है। वे मेरी मुक्ति के क्षणों के बारे में भला क्या जानेंगे। पूरे जीवन में मैं मुक्ति के इन्हीं क्षणों के लिए तड़पता रहा हूँ और जब-तब इन्हें पा भी लिया है। मेरा यह सिलसिला बचपन से ही शुरू

सिलसिला अब भी जारी है तो लगता है कि एक अर्थ में तो बचपन अब भी मेरे भीतर जीवित है- सहज भाव से सुरक्षित। निश्छल अबोध बचपन को भीतर ही भीतर जीवित रखना शायद एक रचनाकार की जरूरी शर्त भी हो...।

आज मरीना त्स्वेतायेवा की कविताएं पढ़ता हूँ

अथवा प्रत्यक्षा सिन्हा की तो बचपन के दिनों से छिटककर एक नाम जेहन में अब भी आता है- तीन अक्षरों का एक नाम- जैसे हाथ पर हाथ रखी हुई कोई एक चिड़िया; जैसे जीभ पर बर्फ की डली; जैसे खट्टी-मीठी इमली; जैसे... ।

बी-70, सूर्यकुंड कालोनी
गोरखपुर-273015

अखिल रेल हिंदी निबंध, वाक् तथा टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता (आधार वर्ष-2013)

रेल कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग-प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से तथा कर्मचारियों में हिंदी में काम करने की रुचि उत्पन्न करने के लिए रेल मंत्रालय द्वारा प्रति वर्ष हिंदी निबंध, वाक्, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। पहले ये प्रतियोगिताएं क्षेत्रीय स्तर पर आयोजित की जाती हैं और इन प्रतियोगिताओं में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वालों को अखिल रेल स्तर पर आयोजित होने वाली हिंदी निबंध, वाक् और टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिताओं में शामिल किया जाता है।

पुरस्कार	हिंदी निबंध प्रतियोगिता	हिंदी वाक् प्रतियोगिता	टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता
प्रथम (एक)	3,000/-	3,000/-	3,000/-
द्वितीय (एक)	2,500/-	2,500/-	2,500/-
तृतीय (एक)	2,000/-	2,000/-	2,000/-
सांत्वना	1,500/-	1,500/-	1,500/-
	प्रत्येक (5पुरस्कार)	प्रत्येक (5पुरस्कार)	प्रत्येक (5पुरस्कार)

अतः वर्ष 2013 के लिए क्षेत्रीय स्तर पर हिंदी निबंध, वाक् तथा टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता का आयोजन 18 अप्रैल, 2013 तक करा लिया जाए और उक्त प्रतियोगिताओं में पहला, दूसरा और तीसरा स्थान प्राप्त करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों का विवरण बोर्ड कार्यालय को 10मई, 2013 तक भिजवाने की व्यवस्था करें।

उल्लेखनीय है कि अब तीनों प्रतियोगिताओं में हिंदी और अहिंदी भाषा-भाषी अधिकारी/कर्मचारी भाग ले सकेंगे। केवल 'ग' क्षेत्र के अहिंदी भाषी प्रतियोगियों को प्राप्तांक के 5% अंक अधिमान अंक के रूप में दिए जाएंगे।

प्राधिकार: रेलवे बोर्ड का दिनांक 24.01.2013 का पत्रांक हिंदी-2013/प्र.-21/1

सरकारी कामकाज (टिप्पण/आलेखन) मूल रूप से हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना

संदर्भ:- रेलवे बोर्ड का दिनांक 18.11.98 का पत्र सं. हिंदी-98/प्र.-7/3

रेल मंत्रालय, रेलवे बोर्ड ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के निर्देशानुसार सरकारी कामकाज (टिप्पण/आलेखन) मूल रूप से हिंदी में करने के लिए लागू प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत दी जाने वाली पुरस्कार राशि को निम्नानुसार बढ़ाने का विनिश्चय किया है:-

क) केंद्रीय सरकार के प्रत्येक मंत्रालय/विभाग/संबद्ध कार्यालय के लिए स्वतंत्र रूप से:

प्रथम पुरस्कार (2 पुरस्कार): प्रत्येक 2,000/-
द्वितीय पुरस्कार (3 पुरस्कार): प्रत्येक 1,200/-
तृतीय पुरस्कार (5 पुरस्कार): प्रत्येक 600/-
ख) केंद्रीय सरकार के किसी विभाग के प्रत्येक अधीनस्थ कार्यालय के लिए स्वतंत्र रूप से:
प्रथम पुरस्कार (2 पुरस्कार): प्रत्येक 2,000/-
द्वितीय पुरस्कार (3 पुरस्कार): प्रत्येक 1,200/-
तृतीय पुरस्कार (5 पुरस्कार): प्रत्येक 600/-

2. संशोधित दरें इस पत्र के जारी होने की तारीख से लागू होंगी।
3. इस योजना से संबंधित अन्य (शेष) सभी शर्तें यथावत रहेंगी।
4. यह पत्र रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) के वित्त निदेशालय की सहमति से जारी किया जा रहा है।

प्राधिकार: रेलवे बोर्ड का दिनांक 28.01.2013 का पत्रांक हिंदी-2013/प्र.-7/7

◆ चिंतन ◆
होली: प्रकृति के पुनर्नवा होने का पर्व
डा. रामदेव शुक्ल

वसंत के आगमन का प्रारंभ हमारे यहां होलिका-दहन के चालीस दिन पूर्व ही सम्मत की स्थापना करने के साथ माना जाता है। इसे श्रीपंचमी, रंगपंचमी, वसंत पंचमी भी कह सकते हैं। सांस्कृतिक आयोजनों से जुड़े लोग इस दिन माता सरस्वती का पूजन-अर्चन करने के साथ ही महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की पावन जयंती के रूप में भी मनाते हैं।

ऋतु-विभाजन के अनुसार, शिशिर ऋतु के अंतिम दिन अर्थात् फाल्गुनी पूर्णिमा को 'होलिका-दहन' करने की सदियों से चली आ रही परंपरा है। इसके बाद चैत और बैसाख- ये दो महीने वसंत के होते हैं जिन्हें क्रमशः मधुमास और माधव-मास कहते हैं। भारतीय साहित्य में विशेष रूप से इसी वसंत की महिमा 'सखि वसंत आया' जैसे गीतों के जरिये गायी गयी है जिसमें शिशिर के दुर्दमनीय शीत और भयंकर पाले के प्रकोप से मुक्त हुई प्रकृति पुनर्नवा होकर निर्द्वंद्व हो खिलखिला पड़ती है।

हमारा उतावला समाज शिशिर ऋतु के अवसान पर 'होलिका-दहन' कर लेता है और अगले दिन 'धुलेंडी' के रूप में 'विकृत होली' खेलकर वसंत ऋतु को भी विदा कर देता है। दो महीने के वसंत ऋतु के प्रभाव से आह्लादित जन-मानस दो दिन के होलिकोत्सव में सराबोर हो लेता है।

होली के अवसर पर पहले क्या होता था? कितनी मस्ती, कितना प्रेम, सद्भाव और रंग-गुलाल परस्पर फेंक कर 'रंग' खेला जाता था; कैसे वैर-भाव भुलाकर आपस में गले मिला जाता था- ये बातें अब स्मरण करने योग्य होकर रह गई हैं। प्रकारांतर से सामाजिक जीवन में ये बातें औपचारिक मात्र होकर रह गई हैं।

राजनीति का पेशा करने वाले तमाम छुटभइये नेताओं ने बहुत गहरे स्तर पर समाज को बांटने में अपनी समस्त चतुराई व्यय कर दी है। सामाजिक सद्भाव और आपसी भाईचारे को छिन्न-भिन्न कर देने में जो लोग दिन-रात लगे रहते हैं, वे होली के मौके पर होली-मिलन समारोहों के आयोजन भी करते हैं। ये समारोह इन तथाकथित नेताओं के लिए शक्ति-प्रदर्शन मात्र हैं।

इधर कुछ दिनों से हिंदू धर्म के पर्वों पर फलाहार के सामूहिक आयोजन भी होने लगे हैं। इसीतरह, होली के अवसर पर जो उल्लास दिखायी देता है, उसके लिए स्वाभाविक रूप से सहज स्फूर्तिदायक रूप में अवकाश अथवा फुर्सत नहीं है। या तो बहुत छोटे बच्चे उमंग और उत्साहपूर्वक रंग-पिचकारी और अबीर-गुलाल उड़ाकर खुश हो लेते हैं या कुछ थोड़े से बुढ़ाते और अधेड़ होते लोग।

'बागबान' फिल्म का गाना 'होरी खेलें रघुबीरा अवध में' और 'सिलसिला' का 'रंग बरसे भीगे चुनवाली' से लेकर 'सदा आनंद रहे यही-यही द्वारे मोहन खेलै फाग हो' का पारंपरिक रिवाज कुछ लोग दस-बीस घरों में आवा-जाही करके पूरा कर लेते हैं। मोबाइल युग है; सो फोनियाकर बधाइयों का आदान-प्रदान कर लिया जाता है। कौन जाए मिठाइयों और गुझियों का झमेला और टीम-टाम पालने। काम तो एस.एम.एस. भेजकर भी चल ही जाता है...

जो व्यापक वर्ग है, वह होली को मांस और मदिरा के उन्मुक्त भोग के अवसर के रूप में देखता और मनाता है। अब इसमें किसी सौहार्द्र और उल्लास की खोज जो कोई करना चाहे, कर ले।

गांव की हालत तो और भी बुरी है। जहां तक रंग और गुलाल का सवाल है, बाजार में ऐसे रंग और अबीर-गुलाल अपेक्षाकृत ज्यादा उपलब्ध हैं जो शरीर की त्वचा को नुकसान पहुंचाने वाले होते हैं। कुछ समाज-विरोधी तथाकथित व्यवसायी ज्यादा-से-ज्यादा कमाने की जुगत में पता नहीं किस केमिकल का प्रयोग करते हैं जो आंखों के साथ ही चमड़ी को भी बेहद नुकसान पहुंचाता है; किंतु इन्हें तो अपनी 'दमड़ी बनाने' से मतलब- इन सबके विरुद्ध सामाजिक एवं स्वयंसेवी संगठनों से जुड़े लोगों को जोरदार ढंग से आवाज उठानी चाहिए।

जो संगठन या लोग नेतृत्व करने की स्थिति में नहीं हैं, वे अपने व्यक्तिगत और पारिवारिक स्तर पर ऐसे रंग और गुलाल का इस्तेमाल करने-कराने से बचें। निस्संदेह होली का बहुत गहरा सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ हो सकता है। वसंत ऋतु में ऊर्जा का उल्लास

और प्रसन्नता का अनुभव करना स्वाभाविक है। इसके लिए किसी तैयारी विशेष की जरूरत नहीं पड़ती।

वनस्पति जगत में अनेक ऐसे पेड़-पौधे हैं जो शिशिर ऋतु में अपने पत्तों को गिराकर नयी कोंपलों, कलियों और फूलों के माध्यम से उल्लसित होकर ऋतुराज वसंत का स्वागत करते हैं। भोजपुरी के एक मुहावरे का प्रयोग करें तो कह सकते हैं कि पेड़-पौधे रोआं झारकर पुनर्नयीता प्रकट करते हैं। शिशिर ऋतु जड़-चेतन को इस कदर निष्क्रिय कर देती है कि धरती में कोई बीज डालो या पौधा रोपो, अंकुरण और विकास उसका स्थगित ही रहता है। शिशिर के बाद ही धरती की सतह पर वह उष्मा सक्रिय होती है जो उसको शस्य-श्यामला बनाती है। ठीक इसीतरह, मानव शरीर में होता है नये रक्त का संचार जो उसे देता है नये तरह की उमंग, ऊर्जा और मस्ती।

सामाजिक-आर्थिक संदर्भ से जोड़कर देखें तो यह ऋतु नयी फसल की खुशी से भी जुड़ी है किंतु मीडिया तो इन त्योहारों के फिल्मी रूप का वर्णन करके उनमें केवल मुंबइया फिल्मी सितारों अथवा दिल्ली के राजनीतिक परिजीवियों के मध्य के अंग-प्रदर्शन और तमाम अहार्दिक

स्थितियों को परोसने में ज्यादा रुचि दर्शाता है। जबकि होली के क्षेत्रीय रंग-रूप एवं वाद्य तक वैविध्यपूर्ण हैं। बहुत कुछ हुआ तो दिखा-सुना देते हैं ब्रज की लट्ठमार होली बरसाने की।

पांच-दस गांवों के बाद इन आयोजनों की रंगत में अंतर दिखायी देता है। होली में बनारस से मगहर तक कबीर ही नहीं, गुरु गोरक्षनाथ तक को सक्रिय रूप से आमंत्रित किया जाता है। तमाम स्थानीय देवी-देवता तक अपने-अपने क्षेत्र की प्रथा के अनुरूप होली के गायन संबंधी आयोजनों में पाये जाते हैं। हमारे पर्व हमें नये तरीके से जीना सिखाते हैं। तभी जब हम उनकी प्रकृति और सरोकारों को समझने की कोशिश करें उतावलेपन को दो-एक दिन के लिए निरस्त करके बिना किसी भी तरह के बाहरी उपकरण और प्रदर्शन के सहज मानसिक उल्लास को जिया जा सकता है। जो लोग इसके मर्म को समझते हैं, कम-से-कम उन्हें तो इसकी शुरुआत करनी चाहिए।

शीतल सुयश, राप्ती नगर
गोरखपुर

मुगल साम्राज्य का अस्त हो रहा था। शायर और कलाकार भी समझ गए थे कि अब रोटियों के लाले पड़ने जा रहे हैं। उर्दू के मशहूर शायर 'मीर' दिल्ली में ही थे। दोस्तों ने राय दी कि तुम्हें हैदराबाद चले जाना चाहिए। वहां के निजाम उर्दू शायरों की कद्र करते हैं। मीर ने हिम्मत जुटाई। बैलगाड़ियां जुतवाई गईं। महीनों का सफर कर हैदराबाद पहुंचना था। रास्ते का सारा सामान रख लिया गया। आज की तरह फ्लाइट या ट्रेन का सफर तो था नहीं। पड़ाव पर पड़ाव पड़ने लगा। एक दिन मीर ने अपनी पोती से जो सुना, उससे उन्हें अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। उनकी पोती गलत उर्दू में अपनी अभिव्यक्ति कर रही थी। मीर के कान सपने में भी नफीस उर्दू को सुनने के अभ्यस्त थे। उर्दू के नामी शायर की नामी पोती अशुद्ध शब्दों का उच्चारण करे, यह भला उन्हें कैसे गवारा होता। निश्चित ही मार्ग के लोगों की बोल-चाल का प्रभाव पड़ा था। हैदराबाद जाकर तो और भी दुर्गति होती। मीर की आंखें खुल गईं। उनसे लौटने का निश्चय कर लिया। अब बैलगाड़ियां वापस दिल्ली की ओर जा रही थीं। बेगम ने पूछा- 'यह क्या कर रहे हैं आप! बच्चों के भविष्य के लिए ही तो सब कुछ बांधकर हम हैदराबाद जा रहे थे। अब वापस दिल्ली क्यों?' मीर बात काटते हुए बोले- 'बेगम! तुम्हें गुजारे की पड़ी है, यहां लाखों रुपये की जुबान बिगड़ी जा रही है। वह नहीं दिख रही तुम्हें। भूखे रह लेंगे, दिल्ली में कम से कम जुबान तो बची रहेगी।'

यह है जुबान का दरद। क्या आज के हिंग्लिश बोलने वाले समझ पाएंगे इस बात को?

◆ साहित्य ◆
अज्ञेय की साहित्य-साधना
चेतन दुबे 'अनिल'

प्रयोगवादी विचारधारा के प्रवर्तक डा. सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' का जन्म मार्च, 1911 में हुआ था। इनके पिता पं. हीरानंद शास्त्री भारत के प्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता थे। इनका बचपन अपने पिता के साथ लाहौर, कश्मीर, मद्रास और बिहार में वनों और पर्वतों में बिखरे हुए महत्वपूर्ण पुरातत्त्वावशेषों के बीच व्यतीत हुआ। इनकी शिक्षा का आरंभ संस्कृत से 'अष्टाध्यायी' रटकर हुआ। फिर उन्होंने फारसी सीखी तत्पश्चात् अंग्रेजी। 1929 में विज्ञान से स्नातक होने के बाद जब वे अंग्रेजी साहित्य से एम.ए. कर ही रहे थे कि उसके अंतिम वर्ष में क्रांतिकारी षड्यंत्रों में भाग लेने के कारण उन्हें गिरफ्तार कर 1930-34 में जेल की सजा हुई और एक वर्ष नज़रबंदी में बिताना पड़ा। 1945 में वे सेना में भर्ती हुए और वर्मा, असम सीमांत और पंजाब पश्चिमोत्तर सीमा पर सैनिक के रूप में सेवा की। यूनेस्को की वृत्ति पर उन्होंने 1957 में पूर्व एशिया और जापान का भ्रमण किया। वे भारतीय साहित्य और संस्कृति के प्राध्यापक नियुक्त होकर अमेरिका में भी रहे और कुछ समय जोधपुर विश्वविद्यालय में तुलनात्मक साहित्य तथा भाषा अनुशीलन विभाग के निदेशक भी रहे। उन्होंने विशाल भारत, दिनमान, प्रतीक, सैनिक और अंग्रेजी पत्रिका वाक् का संपादन भी किया। 04 अप्रैल, 1987 को इस महान साहित्यकार का देहावसान हो गया। मरणोपरांत उन्हें भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया।

अज्ञेय का लेखन 1934 में आरंभ हो गया था, उस समय तक कविता छायावादी प्रभाव से मुक्त होकर प्रगतिवादी काव्य-आंदोलन के प्रभाव में आ चुकी थी। इस प्रगतिवादी काव्य का ही एक और रूप प्रयोगवादी काव्य-आंदोलन के रूप में प्रतिफलित हुआ जिसका आरंभ अज्ञेय ने 'तार सप्तक' नामक काव्य संग्रह में अपने खेमे के सात कवियों की 7-7 कविताओं को प्रकाशित करके किया और इसी क्रम दूसरा-तीसरा और चौथा सप्तक भी प्रकाशित किया।

अज्ञेय ने काव्य के अतिरिक्त कहानी, उपन्यास, निबंध, संस्मरण, यात्रा-वृत्त, आलोचना और इंटरव्यू आदि विधाओं में भी अपनी विशिष्ट रचनाधर्मिता का परिचय रेल रश्मि-अंक 59

दिया। वे मूर्तिकला, चित्रकला, चर्म-शिल्प, बड़ईगिरी, पर्वतारोहण, बागवानी और फोटोग्राफी में भी विशेष रुचि रखते थे। वे आजीवन व्यवस्था प्रेमी भी रहे।

अज्ञेय जी का सृजन-क्षेत्र विविध और विस्तृत है। उनकी कृतियां निम्नवत हैं-

काव्य संग्रह: आंगन के पार द्वार, अरी ओ करुणा प्रभामय, हरी घास पर क्षण भर, इंद्रधनुष रैंदे हुए ये, पूर्वा, सुनहरे शैवाल, कितनी नावों में कितनी बार, बावरा अहेरी, चिंता, इत्यलम, पहले मैं सन्नाटा बुनता हूं।

उपन्यास: शेखर-एक जीवनी (दो भाग), नदी के द्वीप, अपने-अपने अजनबी।

निबंध: आत्मनेपद, त्रिशंकु।

कहानी: विपथगा, परंपरा, कोठरी की बात, जयदोल, शरणार्थी, अमरवल्लरी, ये तेरे प्रतिरूप

यात्रा-वृत्त: अरे यायावर रहेगा याद, एक बूंद सहसा उछली।

आलोचना: हिंदी-साहित्य-एक आधुनिक परिदृश्य, सबरंग और कुछ राग, लिखि कागद कोरे।

अज्ञेय जी ने निजी अनुभूतियों को स्वनिर्मित शिल्प के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया है जो सहज ही विवाद का विषय बन गया और आज तक मतभेद से मुक्त नहीं हो सका। उन्होंने मानव-नियति और प्रकृति-सौंदर्य के घिसे-पिटे वक्तव्यों और पूर्व प्रचलित शैली से हटकर अंतर्मन को वाणी देकर बड़े ही साहस का काम किया और समष्टि को महत्वपूर्ण मानते हुए भी व्यक्ति की निजता को अर्खंडित रखा। वे मनुष्य के लिए बाह्य आवश्यकताओं की पूर्ति को ही पर्याप्त नहीं मानते थे वरन उसके अंतःकरण के विकास और समृद्धि को भी उतना ही आवश्यक समझते थे और व्यक्ति के मन की विकास-यात्रा को महत्वपूर्ण मानकर चलते थे।

अज्ञेय जी प्रयोगात्मक और नवीनता को लेकर उनकी पर्याप्त आलोचना भी हुई और उन पर पाश्चात्य-काव्य-शिल्प की नकल का आरोप भी लगाया गया किंतु उन्होंने अपना प्रयोग जारी रखा। उनके द्वारा प्रारंभ यह नया प्रयोग ही प्रयोगवादी काव्य के रूप में जाना जाता है जो आज 'नई कविता' के रूप में एक

सशक्त काव्य-धारा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है।

इस सबके बाद भी अज्ञेय जी उन साहित्य-निर्माताओं में से हैं जिन्होंने हिंदी-साहित्य को एक नया सम्मान और गौरव प्रदान किया। वस्तुतः हिंदी साहित्य को आधुनिक बनाने का श्रेय उन्हीं को जाता है। हिंदी साहित्य के संदर्भ में वे एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व थे।

अज्ञेय जी निरंतर चिंतन और मनन के कवि रहे हैं। वे बाह्य-जगत से उद्बुद्ध भावों और विचारों को अपने मानस में रचा-बसाकर और उसे अपने व्यक्तित्व का सहज अंश बनाकर अभिव्यक्त करते थे। बौद्धिक भावभूमि के कवि होते हुए भी उनकी रचनाओं में भावनाओं का सजीव चित्रण देखने को मिलता है। उनके काव्य में रहस्यवादी अनुभूतियों का प्राधान्य है। ईश्वर की विराट सत्ता के प्रति उनका सर्वस्व समर्पण दृष्टव्य है-

मैं सोले के साथ बहता हूँ
पक्षी के साथ गाता हूँ
वृक्षों के, कोंपलों के साथ
थरथराता हूँ
और उस अदृश्य क्रम में
भीतर-ही-भीतर
क्षरे पत्तों के साथ गलता
और जीर्ण होता रहता हूँ।
नए प्राण पाता हूँ।

अज्ञेय जी ने अपने काव्य में प्रेम की कोमल अनुभूतियों को व्यक्त किया है। पलकों का कंपन देखकर कवि ऐसा अनुभव करता है मानो उसका प्रिय उसे सर्वस्व प्रदान कर रहा है-

और सब समय पराया है
बस उतना क्षण अपना
तुम्हारी पलकों का कांपना।

मानवीकरण के रूप में भी अज्ञेय ने प्रकृति के अनेक भव्य चित्र उकरे हैं-

सूनी-सी सांझ एक
दवे पांव मेरे
कमरे में आई थी
मुझको वहां देख
थोड़ा सकुचाई थी।

अज्ञेय जी की भाषा में विविधता है जिसमें एक ओर क्लिष्ट और संस्कृतनिष्ठ पदावली का प्रयोग हुआ है तो दूसरी ओर देशज और ग्राम्य शब्दों की भरमार है। उन्होंने प्रकृति और पुरातन उपकरणों को लेकर बड़े ही सुंदर और सजीव बिंबों की योजना की है। मानवीकरण उनका सर्वप्रिय अलंकार है। उनका प्रतीक-विधान मौलिकता और नूतनता का द्योतक है। उन्होंने जीवन और जगत के विविध पदार्थों का चयन कर नवीन उपमानों को चुना है। उपमा अलंकार का प्रयोग भी सर्वाधिक मात्रा में किया है। आरंभ में उन्होंने छांदसिक कविता भी लिखी थी पर आगे चलकर वे मुक्त छंद में काव्य-सृजन करने लगे। वे काव्यात्मक गद्य लिखने में सिद्धहस्त थे इसलिए वे छंद-बंधन से दूर रहकर मुक्त छंदों में ही अपने को अभिव्यक्त करने में अधिक समर्थ और सशक्त रहे।

अज्ञेय जी ने अपने कलात्मक बोध, व्यापक जीवनानुभूति, समृद्ध कल्पना-शक्ति और संकेतमयी अभिव्यंजना के माध्यम से परिचित भावनाओं के अनछुए और नूतन रूपों को उजागर किया और मानवीय तथा प्राकृतिक जगत के स्पंदनों को बोलचाल की भाषा में वार्तालाप और स्वगत शैली में व्यक्त किया और काव्य को परंपरागत आलंकारिकता और लाक्षणिकता के आतंक से काव्य-शिल्प को मुक्त कर नूतन-काव्य-धारा का प्रवर्तन किया। उन्होंने साहित्य में अनेक मौलिकताओं का समावेश किया और वे साहित्य-जगत में प्रयोगवादी कविता के प्रवर्तक और नई कविता के कर्णधार माने गए। प्रयोगवादी साहित्यकारों की श्रेणी में अज्ञेय जी का अग्रणी स्थान है। डा. रमेश चंद्र शाह के शब्दों में- 'अज्ञेय न केवल हिंदी में आधुनिक भाव-बोध के प्रवर्तक कवि के रूप में प्रतिष्ठित हुए बल्कि आधी सदी तक अपनी और परवर्ती पीढ़ी के लिए प्रेरणा और चुनौती भी बने रहे। किसी भी भाषा के साहित्य में उन जैसे बहुत कम लेखक होते हैं जो अपने जीवन और लेखन दोनों में ही महान होते हैं।

वरिष्ठ अभिलेखपाल
वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त/रेसुब
इज्जतनगर

सच्चा गुरु शांति का एक गंभीर सागर होता है। वह पाप का संहारक होता है। गुरु की बराबरी कोई नहीं कर सकता।

-गुरु नानक

◆ आलेख ◆
भारतीय ग्रामीण समाज व्यवस्था के चित्रकार: शिवमूर्ति
रणजीत कुमार सिन्हा

हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद, रेणु आदि के विचारों का प्रभाव हम शिवमूर्ति के कथा एवं उपन्यासों में देखते हैं। शिवमूर्ति अपने कहानियों में गांव की पीड़ा उकेरना, गांवों की पृष्ठभूमि तथा गांवों की गंदी राजनीति का बखूबी के साथ चित्रण किया है।

किसी भी रचनाकार की लेख उसकी आत्मा से जुड़ी हुई होती है। गांव के निवासी हाने के नाते वो सुल्तानपुर का एक अत्यंत पिछड़ा गांव कुरग, अतः लेखक अपने रचना में स्वानुभूति को ही दिखाया है। भले ही हिंदी साहित्य के मठाधीशों ने शिवमूर्ति का बहुत विरोध किया एवं उनके पाठकों को भी तोड़ने की पूरी चेष्टाएं की। पर शिवमूर्ति अपने लेखन एवं विचार से कभी भी समझौता नहीं करते दिखाई देते हैं।

आजकल के हिंदी आलोचकों की ज्ञान को सभी जानते हैं। हिंदी में दरबारी संस्कृति का आगमन हिंदी भाषा के विकास के हजारों वर्ष पहले से था। उस काम को वर्तमान समय में हिंदी के आलोचक एवं समीक्षक लोग इस कार्य को पूरा करते हैं। आप गौर करें एक जमाना था जब कई सामंत किंग मेकर कहलाते थे। आज ज्यादातर आलोचकों की यह धारणा है कि वे लेखक निर्माता हैं। लेखक के गॉडफादर हैं। और हजारी प्रसाद, शुक्ल, बाजपेयी, नगेंद्र आदि जैसे आलोचक आज नहीं हैं आज के आलोचकों का पढ़ने-लिखने से छत्तीस का रिश्ता है। जिसका शिकार शिवमूर्ति को होना पड़ा।

शिवमूर्ति एक ऐसे कहानीकार हैं जिनकी पैनी नजर से भारतीय ग्रामीण संस्कृति का एक भी कोना नहीं बच पाया है। गांवों में वर्ण का, जाति की, संप्रदाय की, संघर्ष का पूरा व्योरा हमें शिवमूर्ति के कथा साहित्य में प्राप्त होते हैं। ग्रामीण समाज में औरतों को किस हद तक बर्बरता सहना पड़ता है। इसको हम शिवमूर्ति के कथा एवं उपन्यासों में देख सकते हैं। मनुष्य कितना निर्मम हो सकता है, कितना नीचे गिर सकता है, करुणाहीन हो सकता है, इन सभी का सजल चित्रण शिवमूर्ति करते हैं। यह भारतीय ग्रामीण जीवन का यथार्थ है और आजादी के 65 साल बाद भी कायम है।

कसाईबाड़ा की शनीचरी का ग्रामप्रधान जहर देकर मार डालता है। उसकी लड़की को वेश्यावृत्ति के लिए बेच डालता है। नेता उसके जमीन के कागज पर अंगूठा लगवा कर हड़प लेता है।

तिरियाचरितर के विमली कीभी क्या दशा होती है, उसका ससुर ही छल से उसका बलात्कार करता है और अन्याय के नाम पर करछुल से मस्तक पर दाग देता है। बेचारी को जीवन भर के लिए कलंकिनी बना देता है। चाहे 'अकालदंड' की सुरजी को देखें, कैसे सेक्रेटरी का आचरण है, कौन-सा न्याय उसे मिलता है?

शिवमूर्ति की कथा में भारतीय ग्रामीण जीवन के बदरंग और विकृत चेहरा देखने को मिलता है, जो सोलह आना सत्य है। वह हालत आज भी है और शायद हमेशा रहेगा। क्योंकि भारतीय शासन-व्यवस्था का आधार दलित वोट है। आजादी के पहले से ही अंबेडकर, गांधी, नेहरू, लोहिया, जगजीवन राम ने आज के समाज में दलित उत्थान की आवाज उठाई थी। पर वह सिर्फ एक नारा बन कर रह गया। आज दलित प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, मुख्यमंत्री आदि अनेक पदों पर आसीन हो रहा है। पर दलित समाज आज भी उसी दलदल में फंसा है जहां समाज में वर्ण व्यवस्था के शुरुआत में था। दलित समाज और नारी जीवन की रक्षा के उत्थान के नाम पर कितनी योजनाएं बनी हैं और बनाई जा रही हैं। पर सत्ता समीकरण ने सब को बेकार कर डाला है। शिवमूर्ति के इन सभी व्यवस्थाओं को एक नाटक के रूप में पाठक के सामने पेश करते हैं।

आज भी क्या दलित को सही न्याय मिल रहा है? इन सारी समस्याओं को हम कसाईबाड़ा, अकालदंड और तिरियाचरितर जैसे कहानियों में देख सकते हैं।

'तिरियाचरितर' की विमली के साथ, 'कसाईबाड़ा' भी शनीचरी के साथ समाज कौन सा न्याय करता है? शिवमूर्ति ने अपनी कथाओं में गरीबी की मार को भीतर से झेलते हुए लोगों को दिखाया है। यहां न घर, घर की तरह है, न गृहस्थी, न कपड़ा, न भोजन, न स्वास्थ्य सेवा। आज जरूरतमंद कार्य भी पूरा नहीं होते हैं। मानव कुपोषण, बीमारी, महंगाई के चलते लोग जवानी की

दहलीज पर आते ही बूढ़े हो जाते हैं। ऐसे लगता है मानो मानव जनम किसी पाप का फल है या अभिशाप बन गया है।

नारी की न कोई स्वाधीनता है और न समानता का अधिकार। उसे सदा ही असुरक्षित और सस्ता साधन माना जाता है। इसे हम प्रेमचंद एवं रेणु की कथाओं में भी पाते हैं।

पुरुष नारी को निचोड़ने के लिए व्याकुल है। शिवमूर्ति के इन पुरुषों में पशु-प्रवृत्ति को निम्न कहानियों में दिखाया है।

‘कसाईबाड़ा’ की शनीचरी ‘अकालदंड’ की सुरजी सिरी, उपमा जोग की लालू की माई, केशर कस्तुरी की केशर तथा अन्य स्त्री एवं तिरियाचरितर में विमली।

बालविवाह के कारणों एवं सामाजिक हालातों का वर्णन शिवमूर्ति ने बड़े ही सुंदर ढंग से किया है।

नारी को शिक्षा के अधिकार से वंचित रखना। नारी को मांग की वस्तु समझना, आज शिवमूर्ति ने साफ-साफ दिखाया है पर एक बात गौर करने लायक है कि शिवमूर्ति के नारी पात्र संघर्ष करते हैं। विद्रोह करते हैं और हक की लड़ाई लड़ते हैं।

शिवमूर्ति के पात्र गरीबी, दुःख एवं पिछड़ेपन के शिकार हैं अकाल का दंड गरीब एवं श्रमरत समाज को ही सबसे अधिक मांगना पड़ता है। आज भी देख सकता हैं। गांव के दलित एवं गरीब औरतों की किस प्रकार सामंत एवं पदाधिकारी वर्गों व नेता वर्ग काम वासना का सामान बना देते हैं। और उसको पाने के लिए नये-नये हथकंडे अपनाता है। यह हम सेक्रेटरी के चरित्र में देख सकते हैं। सुरजी को पाने के लिए क्या-क्या गुल खिलाता है विमला जो तिरियाचरितर में ससुर की काम वासना की शिकार होती है।

शिवमूर्ति अपने कथा में नैतिकता के प्रश्न को बार-बार उठाते हैं एवं नैतिकता की काम-भावना एवं काम-वासना का भी मूल्यांकन करते हैं।

कई बात जिनको लोग बोलने में संकोच करते हैं। पर शिवमूर्ति बिना हिचक के बोल देते हैं। यही इनकी सच्चाई है।

गीतांजली श्री शिवमूर्ति पर कहती है- ‘शिवमूर्ति की जो जमीन है, जो अनुभव है। मैं उनसे वंचित हूं।’

कपिलदेव उन्हें शिवमूर्ति नाटकीय है कहते हैं राजेंद्र यादव ने तो यहां तक कह डाला कि ‘जो जितना बड़ा कमीना होता है, उतना बड़ा लेखक होता है।’ उदाहरण के लिए पहले अमरकांत का नाम लेते थे, बाद में शिवमूर्ति का भी लेने लगे।

पर हिंदी साहित्य में कौन कमीना है या दुष्चरित्र इसे अधिकांश पाठक जानते हैं, कौन किसको चाहता है/चाहती है। यह प्रश्न अपने विचार की है।

शिवमूर्ति ने अपनी कथाओं में समाज का यानी ग्रामीण भारतीय समाज का जो दस्तावेज दिया है वह उन्हें एक सफल लेखक प्रस्तुत करता है एवं उनकी लेखनी में स्वानुभूत है। शीतल घर एवं बीयर की ठनक नहीं, तपी हुई जीवन की दस्तावेज है।

संदर्भ:

- 1) शिवमूर्ति का आलेख
- 2) वर्तमान साहित्य
- 3) कथाकार संजीव के विचार (हंस में)
- 4) वीरेंद्र मोहन का लेख

अध्यापक

खड़गपुर कॉलेज (हिंदी विभाग)

पश्चिमी मिदनापुर (पश्चिम बंगाल)

संपर्क: 09434153501

लोकमान्य तिलक कहते हैं कि गीता कर्मशास्त्र है। निंबकाचार्य कहते हैं कि यह भक्तिशास्त्र है। आचार्य शंकर कहते हैं कि यह ज्ञानशास्त्र है, पर परम पूज्य गुरुदेव श्रीराम शर्मा आचार्य इसे जीवनशास्त्र कहते हैं। जीवन को सही ढंग से जीना है तो गीता का मार्गदर्शन हर पग पर देखने को मिलेगा। जीवन जीने की कला जिसको आ गई, वह भौतिक व आध्यात्मिक, हर क्षेत्र में सफल होगा। अपने कर्मों को जो कुशलतापूर्वक संपन्न कर ले, वही सफल व सच्चा योगी है। प्रतिभा परिष्कार के चार सिद्धांत- क्षमता का विकास, व्यक्तित्व का परिष्कार, प्रबंधन क्षमता का अर्जन तथा अग्रगमन (नेतृत्व) -ये गीता के सिद्धांतों पर चलकर संपादित किए जा सकते हैं। श्रीकृष्ण अर्जुन को इन्हीं चार विधाओं में निष्णात बनाते हैं।

◆ लेख ◆
तुलसी एवं कबीर के राम
डा. शैलेंद्रमणि त्रिपाठी

क्रांतिकारी के शब्द और कर्म में कोई अंतर अथवा भेद-विभेद नहीं होता। तुलसी और कबीर ने भक्तिधारा के काव्य संसार रचकर जैसे अपने दौर में 'समय' को ही कठोर चुनौती दे दी और अपने 'समय के विरोध' में पूरी त्वरा के साथ खड़े रहे; इसलिए ही वे क्रांतिकारी और क्रांतिदर्शी हैं। आज के दौर में भी कबीर और तुलसी दोनों ही प्रासंगिक हैं। इन दोनों ने ही भारतीय समाज के तमाम लोगों को जीवन जीने की श्रेष्ठ राह दिखायी है। तुलसी के साहित्य में जहां समाज की सभी धाराओं का संगम है, वहीं कबीर के साहित्य में है समरसता।

कबीर ने अपने समय के सभी धर्म-गुरुओं और हर तरह के आडंबर के कठोर ताने-बाने का प्रबल विरोध किया। कबीर के समय भारतीय समाज तीन वर्गों में बंटा हुआ था। पहले वर्ग में ऐसे लोग थे जो बाहर से आये थे। दूसरे वर्ग में वे लोग थे जो कभी हिंदू थे, किंतु धर्म-परिवर्तन करके 'मुसलमान' हो गये और 'इस्लाम धर्म' अपना लिए थे। तीसरा वर्ग था प्रबल कट्टरपंथी हिंदुओं का।

धर्मांतरित मुसलमान हिंदुओं की घृणा के भी पात्र थे। कबीर इन तीनों ही वर्ग के लोगों के विरोध में खड़े होते हैं वह मुल्ला, मौलवी, पंडित के विरोध में भी खड़े होते हैं जो समाज की बड़ी शक्ति के रूप में जाने जाते हैं। वह कहते हैं- 'हारे को हरिनामा।' हर तरह के कट्टरपंथी का मंतव्य खारिज करते हुए कहते हैं- 'अरे, इन दोउन राह न पाई।' वह शासक और शासित दोनों को ही घेरते हैं और दोनों को ही ढोंगी कहते हैं-

तू कहता कागद की लेखी
 मैं कहता हूं अखियन देखी!
 और

सुखिया सब संसार है, खावे अरु सोवै।
 दुखिया दास कबीर है, जागे अरु रोवै।

स्पष्ट है- जो जागेगा, वह जीवन और यथार्थ को देखकर रोयेगा ही। सोयी हुई आंखें कभी नहीं रोतीं। जो जगता है, वही तो रोता है। जागे हुए व्यक्ति की ही संवेदना उसको तमाम घटनाओं के साथ जोड़ती है, रेल रश्मि-अंक 59

कुरेदती है और जोड़ती है तमाम विचारधारा से-

'जाके मुख माया नहीं, ना हीं रूप कुरुप
 कुहुप वासते आसरा, ऐसा तत्त अनूप।'

कबीर के जीवन पर तत्कालीन परिवेश और परिस्थितियों का अच्छा-खासा असर है। इसी से उनके साहित्य में कई धाराएं एक साथ बहती हैं। वह हैं सामान्य जन के समर्थक और उनकी ही तरह गोस्वामी तुलसीदास भी चलते हैं सामान्य जन को अपने साथ लेकर। 'कबीर' श्रम की संस्कृति में विश्वास रखते हैं और उन्होंने स्वयं भी श्रम की साधना की है जबकि तुलसी अपने 'राम' के माध्यम से कर्म एवं श्रम की संस्कृति में विश्वास करते हैं। दोनों में अंतर सिर्फ इतना है कि कबीर 'अपने' माध्यम से 'श्रम-संस्कृति' को स्थापित करते हैं; जबकि तुलसीदास 'राम' के माध्यम से।

कबीर के 'राम' तत्त्वज्ञानी हैं जबकि 'तुलसी के राम' समग्रता में मानव के रूप में मर्यादा पुरुषोत्तम हैं जो मनुष्यता से जुड़कर, मर्यादा से जुड़कर, न्याय और मूल्यवत्ता से जुड़कर पूर्ण होते हैं। कबीर के राम घट-घट में व्याप्त हैं। परंपराओं को, रुढ़ियों को तोड़ा है कबीर ने। वह पंडितों और कठमुल्लाओं के विरोध में खड़े हुए तथा विरोधों का सामना करने के बावजूद उन्हें खूब खरी-खोटी सुनायी। विरोध तो तुलसी ने भी काशी के पंडितों का खूब सहा। उन्होंने भी प्रचलित परंपराओं को तोड़ा और संस्कृत के बजाय लोक भाषा में 'श्रीरामचरितमानस' की समर्थ रचना की। दोनों ने ही समन्वय की साधना की। तुलसी ने पंडितों के तमाम मिथक को तोड़ा और राम को एक मर्यादित मनुष्य के रूप में स्थापित किया।

तुलसी को मात्र कर्मकांडी पंडितों से जूझना पड़ा जबकि कबीर को कट्टरपंथी हिंदुओं और मुसलमानों से। दोनों ने ही भाषा, विचार और कर्म के स्तर पर विरोध किया। कबीर ने भी भाषा की परंपरा को चुनौती दी और नयी भाषा विकसित की। यह सधुक्कड़ी भाषा लोक की भाषा बनी। सबकी भाषा। कबीर ने भक्ति को 'संस्कृति' से जोड़ा। कबीर शास्त्रीय और बौद्धिक आयोजन नहीं हैं। उनको खूब छककर घूंट-घूंट पीना होगा। भक्ति सागर में

गहरे डूबना होगा- ऐसे कि सब कुछ भूल जाओ।

वास्तव में कबीर और तुलसी दो हैं, किंतु दोनों मिलकर एक ही हैं। कबीर का समय तो भारतीय समाज में उथल-पुथल के दौर का था जबकि तुलसी का समय एक स्थापित शासन-व्यवस्था के द्वारा संचालित था। कबीरदास के समय में सिकंदर लोदी और गोस्वामी तुलसीदास के समय में अकबर का शासन था। तुलसी के समकालीन कवि हैं- सूरदास, रहीमदास, मीराबाई, रविदास, कुंभनदास, कमाल एवं कमाली इत्यादि।

बताते हैं कि एक बार अकबर ने कुंभनदास की खूब प्रशंसा की और आदरपूर्वक उनको अपने दरबार में बुलाया। जवाब में कुंभनदास ने दो पंक्तियां लिखकर भिजवा दीं-

संतन को कहां सीकरी सो काम!

आवत जात पनहिया टूटी,

बिसरि गयो हरि नाम!

निस्संदेह किसी भी व्यक्ति की आंतरिक शक्ति बहुत बड़ी शक्ति है जो कबीर में थी तुलसी में और आगे चलकर थी महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के भीतर। स्पष्ट है कि बाहर की उपेक्षा कोई ज्यादा प्रभावित नहीं करती। संत तो हजारों ही हुए हैं किंतु तुलसी और कबीर हैं पूर्णिमा का चांद जो हर तरह के अंधेरे को चीर कर सहसा प्रकाश-पुंज से तन-मन को आलोकित कर देता है।

किसी भी तरह- 'बुद्धि' के बल पर नहीं जाने जा सकते कबीर और तुलसी। दोनों ही हैं हृदय की वीणा की अनुगूंज। हमारे हृदय के तार यदि छू लें कबीर के भावों को तो हम भी बजने लगेंगे और तभी समझ पाएंगे कबीर को। कबीर और तुलसी ने अपने समय के शक्ति-केंद्रों से कठिन संघर्ष किया। दोनों के ही साहित्य में राग है और वैराग्य भी। तुलसी के साहित्य में है राग और वैराग्य, जबकि कबीर के साहित्य में राग और वैराग्य के साथ एक 'आग' भी है।

'कबीर के राम' प्रत्येक पदार्थ-प्रत्यय में मौजूद हैं और सबके भीतर निवास करते हैं। वह घट-घट में व्याप्त हैं जबकि 'तुलसी के राम' हैं राजा दशरथ के सुपुत्र। वह हैं अयोध्या नरेश। सीता के पति। रावण के संहारकर्ता होने के साथ ही पुरुषोत्तम हैं और तत्कालीन समय के नायक। कबीर के राम आत्म-तत्त्व हैं; चेतना, प्रज्ञा और आत्मस्वरूप हैं। एक के राम हैं साकार और दूसरे रेल रश्मि-अंक 59

(कबीर) के निराकार। 'अहंकार' दोनों के यहां नहीं मिलता। कबीर कहते हैं-

कबिरा यह घर प्रेम का, खाला का घर नाहिं।

सीस उतारे, भुइं धरै, तब पड़े घर माहिं।

ऐसा भी एक क्षण आता है जब तुलसी के राम भी मिल जाते हैं कबीर के राम से-

'निर्गुण-सगुण नहिं कछु भेदा

अगुनहि-सगुनहि नहिं कछु भेदा।'

भक्ति और ज्ञान के मार्ग में अद्भुत समन्वय स्थापित करते हैं तुलसी। वही हैं जो 'सीय राममय सब जग जानी' कहने के बावजूद श्रीकृष्ण की प्रतिमा के समक्ष कहने की सामर्थ्य रखते हैं-

'कहा कहौं छवि आपकी भले बने हौ नाथ

तुलसी मस्तक जब नवै, धनुष-बाण ल्यो हाथ...'

तब '...अपने जन के कारने नाथ भये रघुनाथ'

समन्वयवादी काव्य चेतना है तुलसी और कबीर दोनों की। उपासना के मार्ग में कबीर उपासक के 'उपास्य' बन जाते हैं तब उपास्य स्वयं उनके पीछे चलने लगता है। वह एक पद में कहते हैं-

'हरि मोरे पिउ मैं पिउ की बहुरिया'

कबीर की मान्यतानुसार, ज्ञान और पांडित्य को किसी भी तरह पुस्तकीय ज्ञान से नहीं जाना जा सकता। इसको पढ़ने के लिए जीवन की पाठशाला में आना पड़ता है-

'प्रेम न बारी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय

राजा-रंक जिहि रुचै, सीस देइ लइ जाय।'

अहंकार को खोकर ही प्रेम को पाया जा सकता है और जिया जा सकता है प्रेम में। 'मैं' के भाव से होना पड़ेगा मुक्त-

'कबिरा मन निर्भय भया ज्यों गंगा का नीर

पीछे पीछे हरि फिरे जपत कबीर-कबीर।'

तुलसी और कबीर के पास है समग्र दृष्टि। दोनों की परिस्थितियों में समानता दिखायी देती है। माता-पिता के स्नेह से दोनों ही वंचित रहे। समाज से मिली दोनों को ही उपेक्षा। कबीर को अपने पाल्य के रूप में नीरु और नीमा का स्नेह मिला, किंतु तुलसी को ऐसा कुछ नहीं। तुलसी को उनकी पत्नी रत्नावली ने गुरु के रूप में प्रस्तुत किया जबकि कबीर ने पत्नी एवं संतानों- कमाल, कमाली के साथ जिया गृहस्थ जीवन।

दोनों ही परंपरा की जड़ता का भरपूर विरोध करते हैं। इस जड़ व्यवस्था की रक्षा के लिए जो लोग खड़े हैं,

उनको प्रबल चुनौती देते हैं। इस चुनौती के जरिये दोनों ही स्वयं पहल करके प्रगति और ज्ञान की धारा से मनुष्य को जोड़ते हैं।

मात्र कबीर को 'प्रगतिशील' कहना और तुलसी को परंपरावादी कहना- यह हर तरह से किसी भी तरह से सांस्कृतिक क्रांति का अपमान है। दोनों ने ही रूढ़ियों और परंपराओं को तोड़ा। दोनों ने ही कट्टरपंथियों का विरोध किया, विरोध सहा। दोनों का ही विरोध रहा- यथास्थितिवाद से। प्रतिभा की शक्तियों के विरुद्ध। दोनों का ही विरोध था विकास-पथ के अवरोधकों के विरुद्ध। अस्वीकृति में उठे हुए इन दोनों के हाथ 'स्वीकृत' लोगों के द्वारा अस्वीकृत किये जाते रहे हैं।

संतकवि कबीर ने कुंभ फोड़ा-

जल में कुंभ है, कुंभ में जल है; भीतर-बाहर पानी।
फुटा कुंभ, जल जलहि समान; यह तत् समझें ज्ञानी।

कुंभ तो तुलसी, रविदास और मीरा ने भी फोड़ा। ये सब कोई नदियां नहीं हैं। नदी का एक यात्रा-पथ होता है, चौड़ाई होती है। एक निश्चित प्रवाह और गहराई होती है। तटबंध भी होते हैं। सागर होता है इन सबसे मुक्त। इसीतरह, कबीर और तुलसी नदी नहीं, सागर हैं। इनमें सब समाहित होते हैं। सागर सबको स्वीकार करता है। नदियों में वह भेद नहीं करता। तुलसी और कबीर में भी कोई भेद नहीं है, क्योंकि दोनों सागर हैं।

प्रभारी 'जनसंदेश टाइम्स'
निवास स्टेशन रोड, गोरखपुर

लेखकों/रचनाकारों से निवेदन

'रेल रश्मि' में प्रकाशनार्थ तकनीकी, गैर-तकनीकी, लेख, कहानी, कविता, ग़ज़ल, संस्मरण, यात्रा वृत्तान्त, योग, अध्यात्म आदि अनेकानेक विधाओं/विषयों पर स्तरीय रचनाएं आमंत्रित की जाती हैं। रचनाओं पर उचित मानदेय देने की भी व्यवस्था है। कृपया नोट करें कि रचनाएं टाइप की हुई अवश्य हो अथवा कंप्यूटर के माध्यम से स्वच्छ टंकित की हुई हो। रचना हार्ड कापी के साथ सी.डी./पेन ड्राइव के द्वारा भी दी जा सकती है। रचना कागज के एक ही ओर दोनों तरफ पर्याप्त हाशिया छोड़ कर लिखें और दो पंक्तियों के बीच पर्याप्त स्थान अवश्य छोड़ें। रचना स्पष्ट और सुपाठ्य हो। रचना को एक बार पढ़कर पाठ अवश्य शुद्ध कर लें और मूल प्रति ही भेजें। रचनाओं के साथ इस आशय का प्रमाण/घोषणा पत्र भी होना चाहिए कि यह लेख/रचना लेखक/रचनाकार की मौलिक कृति है और यह इससे पहले प्रकाशित नहीं हुई है।

कई रचनाएं एक साथ न भेजें। साथ ही रचना तीन-चार फुल स्क्रेप के आकार के पृष्ठों से अधिक न हो। रचना के साथ अपना पूरा पता पिन कोड सहित तथा संपर्क नंबर भी अवश्य दें। यदि किसी कारणवश किसी रचना को पत्रिका में शामिल करना संभव न हुआ तो उसे लौटाया नहीं जायेगा।

रचनाएं निम्न पते पर भी भेज सकते हैं-

संपादक
रेल रश्मि
केंद्रीय हिंदी अनुभाग, मुकाधि कार्यालय
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर
ई-मेल : seniorol9@gmail.com

◆ कहानी ◆

स्मृति-शेष

राजेश हजेला

रुसो ने कहा है- 'मैन इज बोर्न फ्री बट एन्नीक्वेयर ही इज इन चेंस' अर्थात् मनुष्य मुक्त जन्म लेता है, परंतु वह हर जगह बंधनों में जकड़ा मिलता है। इन्हीं बंधनों का नाम है प्रेम-बंधन। जिसकी अदृश्य डोर हमें जीवन-पर्यंत बांधे रहती है। प्रेम हृदय के भोज-पत्र पर मन की लेखनी तथा भावना की स्याही से लिखा गीत है- 'प्रेम गीत है अगर पढ़ लो वरना सब कुछ है पत्थरों की तरह।' प्रेम में सब कुछ पारदर्शी हो जाता है जिसमें व्यक्ति तन-मन के प्रति विरक्त होकर प्रेम की साकार प्रतिमा का आराधक मात्र होता है। प्रेम एक ऐसा अथाह महासागर है जिसमें जो जितना ही गहराई में जाता है वह उतना ही ऊपर उठता है और अंततः भावनाओं के चरमोत्कर्ष पर पहुंच जाता है। प्रेम जीवन का उद्गमस्थल है और है सौंदर्य का उपासक। प्रेम जीवन का रस है। प्रेम एक पुष्प है जिसकी मादक गंध जीवनरूपी उपवन को अपूर्व सौंदर्य प्रदान करती है। जीवन में प्रेम का संचार होते ही मन के शांत समुद्र में हिलोरें उठने लगती हैं और अनुरक्त हृदय चेतना के लोक में अपने प्रिय के ही दर्शन करता है। जब किसी से प्रेम हो जाता है तो भावों के अनन्ताकाश में मन उसी की इंद्रधनुषी कल्पनाएं करता है, स्वप्नों की रुपहली नगरी में उसी की छवि देखता है और उसके चिंतन का विषय भी वही होता है। प्रेम एक चाह, एक प्यास, एक कामना और एक प्रेरणा है। सुधियों के आंगन में भावनाएं नृत्य करने लगती हैं, मन के मृगछाँने चौकड़ी भरने लगते हैं और अनायास ही जीवन के मादक अनुबंधों का प्रणयन हो जाता है। ऐसा ही हो गया था उसके और उस ग्राम्य-बाला के बीच।

निशा-परी सर्वत्र नेह-राग जगा रही है। सितारों की कोमल शय्या पर अलसायी विभा का अनिच्छ-सौंदर्य नव कलिकाओं को लाज से अवगुंठित कर रहा है। संपूर्ण वातावरण गंध की रागिनी से गुंजित है। बहकी-बहकी हवाएं स्वयं-मुग्ध हैं। नदी की लहरें नीरवता को भंग कर रही हैं। रजनी की स्नेहिल लोरियों की थपकियों से सारा संसार निद्रा-देवी के अंक-पाश में मनभावन स्वप्नों के मायावी रंगमहल में विचरण कर रहा है। रात्रि की

निस्तब्ध और घनी कालिमा में जड़ और चेतन खोया हुआ है, परंतु यह क्या? इन अंधेरी गुफा-मंदिरों में क्षीण-प्रकाश में यह कौन बैठा है? आसपास ढेर सारे कागज, रंग, तूलिकाएं बिखरी पड़ी हैं। चारों ओर से बेखबर एक कलाकार साधनारत है। चित्रित प्रेमी युगल के चित्र को देखकर वह भाव-विभोर हो उठता है। रेखाओं के सुंदर चित्रांकन से चित्र की शोभा दोगुनी हो गयी है और लगता है कि प्रेमी युगल की मानवाकृतियां उसके समक्ष खड़ी हो गयी हों।

तभी वातावरण में पायलों के नूपुरों की मनमोहक रुनझुन गूंज उठी, जैसे किसी ने सहसा सोयी वीणा के तारों को छेड़ दिया हो। इस मोहक ध्वनि-संसार से उसने अपने हृदय में कंपन अनुभव किया। अचानक छम-छम की यह ध्वनि कैसी? उसने उठकर ध्वनि की दिशा में देखा तो उसे एक धुंधली नारी आकृति-सी दिखाई दी जो शनैः शनैः अंधेरे में विलीन होती चली गई। वह आश्चर्यचकित-सा वहीं खड़ा रह गया। यह क्रम कई दिनों तक चलता रहा। वह अपरिचित ग्रामीण-बाला चुपके-चुपके अत्यंत कौतूहल से उसे चित्रांकन करते देखती। धीरे-धीरे झिझक की कड़ियां टूटें और एक दिन वह उसके पास आकर खड़ी हो गयी। वह उसे देखते ही उसके रूप-सिंधु में डूबता चला गया। घने बादलों-सी केश-राशि में सजे पुष्प, माथे पर बिंदी की अरुणाभा, अधरों पर थिरकता अनुराग उसकी सुंदरता को बढ़ा रहे थे। युवती के सौंदर्य की रूपाभा उसके मन में बसती चली गयी। भाषा एवं रिश्तों की सीमाओं से दूर एक अनाम-सा अनुराग उन दोनों ने एक-दूसरे के प्रति अनुभव किया। वह नेह-दीप जलाये पल-पल उसकी प्रतीक्षा करता और वह अनुराग के पतले धागे में बंधी हंसती-मुस्कराती प्रतिदिन सुदूर अपने गांव से पैदल चलकर उन पहाड़ियों में पहुंच जाती। उसके आते ही नीरव गुफाओं में जीवन खिल उठता, एक अनजानी प्रीति-गंध सर्वत्र व्याप्त हो जाती, तूलिका, कागज और रंग मुस्करा उठते, वातायन में प्रणय-राग गूंज उठता और वृक्ष अपने पल्लवरूपी अधरों की बांसुरी से नेह-गीत गा उठते। वह आती तो लगता जैसे आतप से व्याकुल पथिक घने वृक्ष की शीतल सघन छांव में पा गया हो, थका-हारा पक्षी दिन भर के

परिश्रम के पश्चात अपना नीड़ पा गया हो, बीज बोकर बाट जोहते हुए किसान फसल के रूप में श्रम का प्रसाद पा गया हो। वह एक अनोखे उत्साह से भर उठता। उसके निस्पीदित-से शरीर में चेतना का संचार हो उठता और उसकी कला-यात्रा निर्बाध गति से प्रवाहमान रहती।

आज वह अत्यंत अशांत और व्यथित है। उसके उदास नयनों में निराशा के बादल उत्पात कर रहे हैं। बहुत देर बाद उसके कानों में घाटियों से आता खनखनाती चूड़ियों का हृदयग्राही स्वर झंकृत हुआ। यौवन-भार से दबी वह रूपांबरा धीरे-धीरे चलती हुई गुफा-द्वार पर आ गई। युवती ने उससे उदास होने का कारण पूछा। उसने चित्र की ओर संकेत कर दिया। चित्र धुएं के कारण अस्पष्ट हो गया था जैसे किसी हठी घनश्याम ने इंदु को अपनी बांहों में आलिङ्गित कर लिया हो। वह हंसती हुई चित्र-मुद्रा में खड़ी हो गयी। उसके हंसने से उसे लगा सहसा मोतियों की माला बिखर गयी हो और वह उन मोतियों को सहेज न पा रहा हो। उसे अपनी खोयी मुस्कान वापस मिल गयी। वह उस रूपगर्विता के अप्रतिम सौंदर्य को कैनवास पर चित्रित करने लगा। प्रतिदिन वह प्रत्येक चित्र के सामने उसी मुद्रा में खड़ी हो जाती। वह उसकी सांचे में ढली रूप-राशि का अवलोकन कर मंत्रमुग्ध हो जाता। उसे लगता कि स्वर्ग की मेनका एक बार फिर किसी विश्वामित्र की अखंड तपस्या को खंडित करने वसुंधरा पर उतर आई हो। अजंता की गुफाओं में अपने देश, अपने प्रियजनों से दूर वह उस अल्हड़ रूपसी में प्रेरणा का प्रकाश-स्तंभ अनायास ही पा गया। वह याचक-सा और वह उर्वशी कला-देवी-सी, जैसे क्षितिज पर धरती-गगन पास्पर मिल गये हों। समय का रथ अचानक ही रुक-सा गया था।

तभी एक सैलाब-सा आया। देश के कोने-कोने में विद्रोह का ज्वालामुखी धधक उठा। उसी समय उसका वापस अपने देश आने के लिए संदेश आया। वह अपने अधूरे चित्रों को छोड़कर अपने देश जाने के लिए तैयार हुआ। आज उसकी विदा-वेला थी। अत्यंत कारुणिक दृश्य था। युवती के नयनों से अश्रुओं की अलकनंदा बह रही थी। वह शीघ्र आने का अश्वासन दे रहा था पर न जाने क्यों वह भयभीत थी कि अब वह कभी अपने प्रिय को नहीं देख पायेगी? एक अज्ञात भय उसके अस्तित्व को रोमांचित कर रहा था। उसका शरीर सिहरन से भर गया। स्वयं उसे भी लग रहा था कि उसके हृदय में कुछ कचोट रहा है, उसका अस्तित्व यहीं छूटा जा रहा है। उसका तन रेल रश्मि-अंक 59

तो उसके साथ जा रहा है परंतु मन तो यहीं बस गया है, किंतु जाने की विवशता में वह कर भी क्या सकता था?

एक वर्ष के अंतराल के पश्चात वह वापस आया। आते ही उसकी प्रसन्नता पर वज्रपात हो गया जब उसे पता चला कि उसकी प्रेरणास्रोत वह अल्हड़ ग्राम्य-बाला काल के क्रूर हाथों द्वारा पंचतत्वों में विलीन हो चुकी है। विधाता के इस अविवेकपूर्ण निर्णय पर उसे गहरा दुःख हुआ। उसे लगा कि उसकी कला की आस्था का हरण हो गया है, उसका कला-संसार नष्ट हो गया है, उसके बिना उसका जीवन व्यर्थ है और शरीर चेतनाशून्य। उस कला-देवी की कब्र पर बैठकर वह घंटों आंसू बहाता रहा। रोते-रोते वह वहीं गहरी नींद में सो गया। उसे लगा जैसे वह आ रही है, अपनी मोहक मुस्कान से सारी घाटी को चौंकाती हुई, नदी की कल-कल नाद-यात्रा के साथ उछलती-कूदती और हवाओं को अपनी संस्पर्श-गंध से महकाती हुई। पहाड़ों की अर्धचंद्राकार गुफाओं में जैसे उसके नूपुरों की झंकार गुंजित हो गई हो। उसे लगा जैसे वह कह रही हो कि मैं बहुत अशांत और व्यथित हूँ। तुम मत रोओ। मुझे बहुत दुःख होगा। यह समय मेरी याद में रोने का नहीं है। मृत्यु जीवन का शाश्वत सत्य है। यह जीवन तो क्षणभंगुर है। हम अवश्य मिलेंगे इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में सही। उठो और अपने उन अधूरे चित्रों को पूर्ण करो जो आज भी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। थके मन से उसने तूलिका उठाई और उसकी स्मृति के सहारे अधूरे चित्रों को पूरा करने लगा। दिन भर अनथक परिश्रम के पश्चात उसने सभी अपूर्ण चित्रों को पूर्ण कर लिया। सांझ ढले वह थके शरीर और बोझिल मन लिए उठा। प्रेम की स्मृति को शेष रखने के लिए उसने उसकी कब्र पर शिला-लेख लगवाया- 'मेरा प्यार, मेरी प्रेरणा, मेरी कला की आत्मा यहां सोयी हुई है।'

प्रेम जीवन का उत्स है। प्रेम कभी मरता नहीं वह तो सतत प्रवाहमान तथा कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है। देह की कंदराओं के पार जो प्रेम है वह अमर है। प्रेम के उस भव्य-लोक में मन के तार आत्मा की गहराइयों से जुड़ जाते हैं। प्रेम ही वह तत्व है जिससे हम एक-दूसरे से जुड़ते हैं और प्रेरणा प्राप्त करते हैं। कला की अजस्र प्रेरणास्रोत वह सुकन्या मरी नहीं, ऐसी विभूतियां मरती नहीं, वे जीती हैं युगों-युगों तक।

4/105, नवाब न्यामत खां पश्चिम
फर्रुखाबाद-209625
संपर्क: 9450205346

◆ कहानी ◆

उसी राह पर

डा. कृष्ण चंद्र लाल

वह बेचैन था। बढ़ी हुई शैव, बिखरे और सूखे केश, सिकुड़े-सिमटे वस्त्र उसकी बेचैनी का स्पष्ट पता दे रहे थे, किंतु जब मैंने उससे पूछ लिया- 'भाई, तुम इतने परेशान क्यों हो?' तब कुछ अचकचाते हुए अपने कपड़ों को हाथों से ही दबा-दबाकर प्रेस करते हुए उसने कहा- 'अरे नहीं तो! परेशानी की तो कोई बात ही नहीं है।'

उसने अपनी बढ़ी हुई दाढ़ी पर हाथ फेरा। बालों को पंजे फेरकर कंधी-सा किया और एक फीकी-सी तरल मुस्कान के साथ कहने लगा- 'वैसे दुनिया में परेशान कौन नहीं है? क्या आप नहीं हैं परेशान? परेशान होना अथवा बने रहना तो हमारा युगधर्म ही हो गया है।' इसके बाद वह हो-हो करके हंसने लगा, जैसेकि कोई बहुत बड़ा फिकरा कस दिया हो। उसकी फिलासफी का आनंद लेने की गरज से मैंने भी उसकी हंसी के साथ अपने कहकहों को शामिल कर दिया। इसतरह, हम दोनों क्षणभर में ही कोई दुखड़ा रोने और दर्द सुनने की उदास घड़ी से मुक्त होकर प्रसन्नता के मनोरम वातावरण का आनंद उठाने लगे।

परेशान-सा दिखनेवाला वह युवक मेरा मित्र तो नहीं था, किंतु मुझसे घनिष्ठता के साथ परिचित अवश्य था। नाम था उसका अचिंत्यानंद। जब-जब मैंने उससे उसके परेशान होने की बात पूछी थी, तब-तब मेरे दिमाग में उसका नाम और अर्थ इसतरह से नहीं कौंधा था कि मैं उससे परेशानी की बात न पूछता। जिसका नाम ही हो अचिंत्यानंद, उसे कोई परेशानी और उलझन भला कैसे हो सकती है? मुझे लगा कि मैंने उससे गलत सवाल किया, इसलिए जब हम दोनों मजे ले रहे थे; मैंने पूछ ही लिया था- 'भाई माफ करना, क्योंकि परेशानीवाली बात तुम्हें पसंद नहीं आयी होगी।'

'क्यों?'- उसने प्रतिप्रश्न किया।

'क्योंकि अचिंत्यानंद को भला कैसी चिंता?'

'क्या किसी के नाम और उसके जीवन में इतना अंतर्संबंध होता है? यथा नाम, तथा गुण।' -बहुत गंभीरता के साथ पूछा था उसने यह प्रश्न। मुझे लगा कि मैंने फिर बात को गलत दिशा की ओर मोड़ दिया है। संभलते हुए रेल रश्मि-अंक 59

बोला- 'अरे नहीं-नहीं, मेरा मतलब यह नहीं है। क्या मैं यह नहीं जानता हूं कि इस जमाने में सोचूं कुछ ज्यादा निश्चित है और निश्चित कुमार कुछ ज्यादा ही चिंतित।' सुनकर वह बोल उठा- 'भई वाह, आप तो वाकई कमाल करते हैं। फिर भी लोग हैं कि हमारी बातें समझकर भी नहीं समझते।'

वह संजीदा हो उठा था। उसकी आंखों से दुःख, चिंता, उद्वेग आदि जाने कितने तरह के भावों की मिश्रित अभिव्यक्ति होने लगी थी। वह जैसे शून्य में देख रहा था। अभी थोड़ी देर पहले उसके चेहरे पर जो उत्फुल्लता आयी थी, वह गायब हो चुकी थी। उदास हो उठा था उसका चेहरा। उसने अपने हाथों में मेरा हाथ थामते हुए कहा था- 'अच्छा, तो चलते हैं।'

'नहीं, ऐसे नहीं। आओ, चलकर एक-एक कप गर्मागर्म चाय चुसकते हैं' -यह कहते हुए मैंने उसके हाथ को कसकर पकड़ा और नजदीकी श्याम होटल की ओर चल पड़ा। जाने क्यों इस क्षण मेरे भीतर उसके प्रति अगाध ममता जाग उठी थी। मैं उसके जीवन के अंतःसत्य को जानने के लिए बेताब हो गया। होटल में चाय सिप करते हुए मैंने उससे सीधा प्रश्न किया- 'परेशानी क्या है?'

'नौकरी! और क्या छोकरी?' -उसने उत्तर दिया।

'अरे, क्या तुम्हें अभी तक कोई नौकरी नहीं मिली? शिक्षा पूरी किए हुए तो तुम्हें दस साल से ज्यादा हुए। तुम बेरोजगार पड़े हो।'

'बेरोजगार ही नहीं, दो बच्चों का बाप भी हो गया हूं आप तो जानते ही हैं कि किसी सोर्स-सिफारिश के बिना आज के दौर में नौकरी पाना बेहद कठिन है। मेरा कहीं भी कोई सगा-संबंधी न तो किसी ऊंचे पद पर है और न ही मेरे पास इतना धन है कि लोगों को धन देकर तृप्त कर सकूं।'

'तब?' -मेरा निरीह-सा प्रश्न था।

'क्या यह ठीक है कि एक योग्य व्यक्ति मारा-मारा फिरे और अयोग्य व्यक्ति अपनी तिकड़मों के बूते सफलता के शिखर पर पहुंचता जाए?' -वह उत्तेजित हो उठा था। उसके चेहरे से क्रोध का लावा-सा फूटता

दिखायी देने लगा। लोग हम दोनों की ओर देखने लगे थे। तभी एक ने उत्सुकता दर्शाते हुए पूछ ही तो लिया- 'क्या बात है भाई साहब?'

'कुछ नहीं।' -मैंने निष्क्रिय कर देने वाला उत्तर दिया था। वह शांत हो चुके थे। तभी मेरे पास वाली मेज पर बैठे एक सज्जन ने व्यंग्य तो कर ही दिया- 'अरे, ये लोग इस जमाने को बदलेंगे।' उनका इतना कहना ही था कि आगबबूला होते हुए बोल उठा अचिंत्यानंद- 'हां-हां बदलेंगे... और सबसे पहले पिचकाएंगे आप जैसे लोगों की तोंद।'

'देखिए जनाब, जबान संभालकर बोलिए।'

'नहीं तो, नहीं करेंगे तमीज से बात। क्या कर लेंगे आप?' -उसकी दहाड़ सुनकर मैं चिंतित हो उठा। कहीं बात और नहीं बढ़े; इसलिए मैंने और अन्य लोगों ने भी बीच-बचाव करके दोनों को शांत कर दिया। इसके कुछ ही देर बाद हम दोनों होटल से बाहर निकल आए।

रास्ते में अचिंत्यानंद ने बताया कि तोंद वाला एक व्यापारी है। वह कोई ज्यादा लिखा-पढ़ा नहीं है किंतु बिजनेस उसका जरूर चमक गया है। अब वह न केवल पढ़े-लिखे लोगों की खिल्ली उड़ाता है; बल्कि उनको यह भी बताता रहता है कि उसने दौलत के बल पर चांदी के जूते चला कर अपने दोनों बेटों को अच्छी-अच्छी नौकरियां दिला दी हैं। वह लोगों से बेहद साफ-साफ शब्दों में कहा करता है- 'जनाब नौकरियां तो योग्यता से नहीं, पैसे से मिलती हैं और पैसा मिलता है हमेशा ही बेईमानी से। सब लोग मजे ले-लेकर चाटुकारिता करते हुए सुनते हैं उसकी बातें। करते रहते हैं चमचागिरी- वाह सेठजी, वाह जनाब...' -इतना कहते-कहते वह फिर से आवेश में भरकर बोला- 'जानते हो हमारे पतन का मूल कारण क्या है?'

'क्या है?' -मैंने जानने के भाव से कहा। सुनते ही उसने अन्ना हजारे की तरह से कह डाला- 'बेईमानी से उपार्जित धन जिसे लोग कहते तो काला धन हैं, किंतु उसी के लिए परेशान भी रहा करते हैं।'

'क्या यह सच्चाई नहीं?' -मेरा प्रश्न पुनः उभरा।

'सच्चाई है जरूर, किंतु अनुकरणीय नहीं है। मैं यह मानता हूं कि जब तक काले धन का प्रसार बंद नहीं होगा, तब तक जीवन के किसी भी क्षेत्र में आपको समुचित न्याय नहीं मिलेगा।'

मैंने महसूस किया कि अब वह भाषण देने के मूड रेल रश्मि-अंक 59

में आ गया है; इसलिए उसके विचार-प्रवाह में गतिरोध उत्पन्न करने की दृष्टि से टोका- 'तो अब क्या है तुम्हारा इरादा?'

'विरोध... हर गलत बात का विरोध।'

'कर सकोगे?' -मैंने पूछा।

'क्यों नहीं!... अब मैं युवा शक्ति को संगठित करूंगा। तमाम ऐसे लोगों को बेनकाब करूंगा जो ऊंचे पदों पर भ्रष्टाचार की नदी में डुबकी लगाने में आनंद-मग्न हैं।'

'लोग देंगे तुम्हारा साथ?'

'क्यों नहीं देंगे? क्या संगठित नहीं हो सकते प्रताड़ित लोग?'

'अवश्य संगठित हो सकते हैं लेकिन...।'

'लेकिन क्या?'

'खैर छोड़ो इन बातों को।' -मैंने बहस को अनावश्यक आगे बढ़ने से रोका। वह भी जैसे बात को आगे नहीं बढ़ाना चाहता था। हम दोनों चलते-चलते उस चौराहे पर आ गए थे जहां से एक-दूसरे को अलग होना था। मैंने अपने घर की दिशा में जाने वाली सड़क पर मुड़ते हुए कहा- 'अच्छा, फिर मिलेंगे।'

'लेकिन मिलते कहां हो यार?... आज न जाने कितने वर्षों के बाद मिले थे।... पता नहीं अब फिर कब भेंट होगी।'

'नहीं-नहीं मिलेंगे... जल्दी ही मिलेंगे।' -यह कहते हुए मैं तेजी से दूसरी दिशा में चल पड़ा। इसके बाद बहुत दिनों तक मेरी भेंट नहीं हुई अचिंत्यानंद से। एक लंबी छुट्टी लेकर मैं ट्रेनिंग के सिलसिले में बाहर चला गया था। ट्रेनिंग से लौटकर आने के बाद एक दिन मैं अपने दफ्तर जा रहा था, तब थोड़ी देर के लिए भेंट हुई थी उससे। मेरे पूछने पर कि अब वह इन दिनों क्या कर रहा है, उसने जवाब दिया- 'कभी इत्मीनान से बताऊंगा।'

इसके बाद 'घर' से अपने स्कूटर को स्टार्ट करके वह कहीं चला गया। मैंने इतना तो समझ लिया था कि या तो उसको नौकरी मिल गई है या उसने कोई कारोबार शुरू कर दिया है। वस्तुस्थिति जानने के लिए मेरा मन विकल हो उठा था, किंतु वह तो जा चुका था। इसके बाद उसका इंतजार करने के अलावा मेरे पास और कोई चारा शेष नहीं रह गया था। मैंने दफ्तर पहुंचकर स्वयं को फाइलों में उलझा लिया था। थोड़ी देर बाद कोने वाली

मेज से उठ कर एक सहकर्मी मेरे पास आया और पीठ पर धौल जमाते हुए बोला- 'बहुत बिजी हो।'

'क्या करें यार, अभी दो-तीन दिन ही तो हुआ ज्वाइन किए। बहुत ही काम पड़ा है। मेरी जगह पर जो सज्जन काम पर लगे थे, उन्होंने तो जैसे कुछ किया ही नहीं।'

वह हंस पड़े और बोले- 'अरे, क्या वह काम करने के लिए थे? अरे, अचिंत्यानंद किसी की चिंता नहीं करते।'

'तो क्या इस जगह अचिंत्यानंद काम कर रहे थे?'

'कर नहीं रहे थे, कर रहे हैं; किंतु क्या आप जानते हैं उन्हें?'

'हां-हां, लेकिन उन्हें कब रखा गया यहां?'

इसके बाद मेरे सहकर्मी ने मुझे जो कुछ बताया, वह स्तब्ध करने वाला ही था मेरे लिए। इसे अचिंत्यानंद का भाग्य कहें अथवा कुदरत का करिश्मा कि जब मैं ट्रेनिंग के लिए गया, तब कुछ ही दिनों के बाद मेरे विभाग के कार्यालय अधीक्षक का तबादला हो गया। उनकी जगह पर जो सज्जन आये, वह रिश्ते में अचिंत्यानंद के मामा लगते थे। पहले तो उन्होंने अचिंत्यानंद को विशेष लिफ्ट नहीं दी किंतु जब वह अपने क्रांतिकारी तेवर के कारण विभागीय लोगों पर रौब ग़ालिब करने में उन्हें मददगार प्रतीत होने लगा तब उन्होंने उसको चुपके

से अवकाश के पद पर नियुक्त कर लिया। लोग न केवल उसको प्यार की निगाह से देखते थे; बल्कि डरते भी थे उससे।

वह अपने 'मामा' के साथ नित्य उठता-बैठता और शराब पीने में उनका साथ भी देता था। वह उनका परम विश्वसनीय और आत्मीय था। जो कुछ वह कहता, उसे वह मान लेते। लोग परेशान थे कि उनकी बातें कार्यालय के अधीक्षक तक कैसे पहुंच जाती है। तभी बेहद गर्वीले अंदाज में आया अचिंत्य... शेव बनी हुई और बाल संवारे हुए। मेरे बगल में बैठनेवाले सज्जन ने अपनी कुर्सी छोड़ दी। वह अधिकार-भाव से बैठ गया कुर्सी पर। मुस्कराते हुए उसने मुझसे कहा- 'अच्छा हुआ आप आ गये। मैं काम कर रहा था आपकी जगह पर।'

'यह तो बुरा हुआ।'

'क्यों?'

'अब क्या होगा आपकी नौकरी का?'

'कोई बात नहीं... अचिंत्यानंद कोई चिंता नहीं करता।'

-यह कहकर वह उठा और हल्की-सी हंसी बिखेरते हुए बड़ी बेफिक्री के साथ अपने मामाजी के केबिन की ओर चला गया।

डी-55, सूर्यकुंड कालोनी
गोरखपुर-273015

बसंत बरसौ परै

तालन पै, ताल पै, तमालन पै, आलन पै,
लाल-माल-बाल पै, रसाल सरसौ परै।
कहे 'कवि रामचंद' कुंद-कंद-बदन पै,
चंद पै मलिंद मतिमंद दरसौ परै॥
केकी केलि केसरि कुरंग केतकी पै कंज,
कारकूत कोकिल कदंब परसौ परै।
रंग-रंग रागन पै, संग ही परागन पै,
वृंदाबन-बागन बसंत बरसौ परै॥

-कवि रामचंद

◆ कहानी ◆

काम

नीलम प्रभा श्रीवास्तव

हमेशा की तरह आज भी मैं सुबह पांच बजे उठ कर रसोई में लग गई थी। सुबह उठते ही मां को मेरे और भइया के लिए नाश्ता और स्कूल के लिए लंच तैयार करना होता है। मां का यह रोज का नियम था कि वह घर में सबसे पहले उठती और उठते ही चक्करघिन्नी की तरह पूरे घर में भागती रहती। हालांकि रात में सोने के पहले मां हमारे स्कूल जाने की ज्यादातर तैयारियां करके सोती फिर भी सुबह की भाग-दौड़ में कोई कमी नहीं आती। अक्सर होता कि सामने रखी चीज भइया को नजर नहीं आती तब वो फौरन मां को आवाज दे देता, मां रसोई से भागती हुई आती और सामने रखी भइया की चीज उठाकर उसके हाथ में पकड़ा देती। बेटा जल्दी करो बस आती होगी- मां के बार-बार कहने पर भी भइया अपनी रफ्तार से ही तैयार होता, फिर तो महीने में दो-चार दिन बस छूटनी ही थी। तब पापा हमें स्कूल छोड़ने जाते। रास्ते भर पापा की डांट खानी पड़ती। घर आकर पापा, मां को भी दो-चार बातें सुनाने से बाज नहीं आते- बच्चों को समय से नहीं उठा सकती, दिनभर रसोई में ही लगी रहती हो फिर भी समय से नाश्ता तैयार नहीं कर पाती आदि-आदि। मां उनकी बातों का कोई जवाब नहीं देती। पापा मम्मी के सुबह के कामों में कोई मदद नहीं करते क्योंकि वह देर से सोकर उठते हैं।

पापा की सुबह आठ बजे चाय के साथ होती। उनके टाइम पर मां चाय कर देती। सुबह चाय पीने का वक्त मां को नहीं मिल पाता क्योंकि वह कामों में उलझी रहती हैं। हमारे स्कूल जाने के बाद मां अपने लिए चाय बनाती, तब तक पापा के दोबारा चाय पीने का वक्त हो जाता। चाय पीने के साथ-साथ सब्जी काटने का सिलसिला भी चलता रहता। पराठा तैयार करना होता है।

हम सभी के जाने के बाद घर समेटने में मां को एक घंटा लग जाता इसके बाद ही वह अपना काम शुरू करती। नहाने के लिए जब बाथरूम में घुसती तो कपड़े का गट्ठर उनके हाथ में होता। भइया के, पापा के और मेरे सभी के कपड़े तो उन्हीं को ही धोना पड़ता है। सुबह का काम निपटाते-निपटाते लंच तैयार करने का

समय हो जाता। पापा लंच पर नहीं आते पर स्कूल से वापस आने पर भइया और मुझे लंच करना होता है। मां हमारे साथ ही लंच करती इसलिए खाना बनाकर हमारे वापस आने का इंतजार करती रहती।

घर पहुंचते ही भइया की उछल-कूद से एकबार फिर घर अस्त-व्यस्त हो जाता। मां के लाख समझाने पर भी भइया पर कोई असर नहीं होता। वह कभी भी अपना सामान जगह पर नहीं रखता। भइया का सामान हमेशा मां को ही सही जगह पर रखना पड़ता है। खाना खाकर हम आराम करने चले जाते पर मां जागती रही ताकि चार बजे हमें उठा सके। पांच बजे ट्यूशन क्लास जाना होता है। चार बजे उठकर हमें होमवर्क करना होता है। मां हमेशा होमवर्क में हमारी मदद करती फिर हमें ट्यूशन क्लास तक छोड़ कर आती।

पापा के ऑफिस जाने और हमारे स्कूल जाने के बाद भले ही मां को थोड़ा रेस्ट करने का समय मिल जाता पर हमारी छुट्टियों में उन पर काम का प्रेशर और भी बढ़ जाता। नाश्ता-खाना फरमाइश पर तैयार होता कुछ स्पेशल भी बनाना होता। उनका ज्यादा वक्त रसोई में ही गुजरता। छुट्टी में धुलाई के कपड़े भी अधिक हो जाते। छुट्टी में भी पापा मां के कामों में कोई मदद नहीं करते। छुट्टी में कभी-कभी पापा हमें घुमाने ले जाते पर ज्यादातर उनका मूड आराम करने का ही होता।

शाम को डेयरी से दूध और सब्जी लाने का काम भी तो मां का ही था। पापा का कहना था कि इस बहाने मां की थोड़ी वर्जिश हो जाती है, वरना दिन भर घर में रहने से उनकी सेहत खराब हो सकती है। इसके अलावा धोबी, पेपरवाला और राशन वाले का हिसाब-किताब मां को रखना। रसोई के पास टंगा कैलेंडर उनके हिसाब-किताब से भरा रहता। शाम आते ही फिर वही खाने-पीने का सिलसिला शुरू हो जाता। दूसरे दिन एक नई सुबह उनके लिए फिर से कामों का अंबार लिए आता। हम सभी के जागने से पहले और हम सभी के सोने के बाद तक मां को न जाने कितने काम करने पड़ते थे इसका अंदाज बचपन में हमें कभी नहीं हुआ। थोड़ी समझ आने पर मां की परेशानियां समझ में आने लगी पर मैं उनकी कोई

मदद नहीं कर सकती थी। मां कहती है कि इन सब कामों के लिए अभी मेरी उम्र बहुत छोटी है। अभी तो मैं बस दस साल की हूँ। पूरे दिन मां को कामों में जुड़े रहना देख मुझे पीड़ा होती है। मैं जल्दी-जल्दी बड़ी होना चाहती हूँ ताकि घरेलू काम में मां की मदद कर सकूँ।

आज रविवार है। सुबह से ही मां की विशेष सफाई अभियान जारी है। आज पापा के बॉस डिनर पर आने वाले हैं। शाम के ब्रेकफास्ट और डिनर का मेनू तैयार किया जा रहा है। पापा की अगली प्रमोशन में इस डिनर की विशेष भूमिका है इसलिए तैयारी भी उसी स्तर की चल रही है। नये पर्दे, नये सोफा कवर, नई कालीन और डेकोरेशन की अन्य सामग्री से ड्राइंगरूम को सजा दिया गया है। पापा थोड़ी-थोड़ी देर में मां को समझाते जा रहे थे कि बॉस और उनकी पत्नी के साथ मां को किस तरह से पेश आना है। सुना है कि बॉस की पत्नी भी किसी ऊँचे ओहदे पर कार्यरत थी इसलिए उनकी हैसियत मां से बढ़कर थी। मां जी-जान से तैयारी में जुटी हुई थी आखिर पापा की तरक्की का सवाल था।

शाम को एक बड़ी-सी कार दरवाजे पर आकर रुक गई। पापा और मां पहले से ही उनके स्वागत के लिए गेट पर खड़े थे। बड़े आदर के साथ उन्हें ड्राइंगरूम तक लाया गया। वेलकम ड्रिंक्स से लेकर डिनर तक के लिए बनाई गई एक-एक पकवान बॉस और उनके परिवार के सामने परोसा जाने लगा। हर पकवान पर बॉस की तारीफ पापा के चेहरे पर तसल्ली के भाव ला रहे थे, जैसे अब उनकी तरक्की में कोई बाधा नहीं आने वाली। इस दौरान रसोई घर से डाइनिंग टेबल तक मां की भाग-दौड़ जारी रही।

सारा कुछ अच्छी तरह निपट गया था। चलने के पहले दस मिनट की बातचीत में पापा के बॉस ने मां को स्वादिष्ट भोजन तैयार करने के लिए धन्यवाद दिया।

उनकी पत्नी से भी मां की औपचारिक बातें हुईं। बातचीत के दौरान ही उन्होंने मां से पूछा था- आप कहीं काम करती हैं क्या? मां ने बड़ी सादगी से जवाब दिया था- नहीं मैं कहीं काम नहीं करती। मैं तो हाउसवाइफ हूँ। बॉस के लिए आये गिफ्ट उनकी कार की डिक्की में रख दिया गया। बॉस खुशी-खुशी विदा हो गए तो पापा ने राहत की सांस ली। जैसे उनके स्वागत पर खर्च किए गए पैसे और मां की मेहनत सार्थक हो गई थी।

मेहमानों के जाने के बाद हमने खाना खाया। खाना खाकर पापा, भइया और मैं सोने चल दिए। मां सुबह की तैयारी में लग गई थी। मैं बिस्तर पर लेटी जाग रही थी जबकि भइया और पापा सो गए थे। रसोई से खटर-पटर की आवाज लगातार आ रही थी। मैं उठकर रसोई में पहुंची सोचा मां की कुछ मदद कर दूँ। मां ने तुरंत मुझे वापस भेज दिया- जा तू सो जा। सुबह जल्दी उठना है नहीं तो स्कूल के लिए देर हो जाएगी। मैं वापस बिस्तर पर आ गयी पर मुझे नींद आ रही थी। काम निपटा कर मां बेडरूम में आ गयी थी। पापा, भइया तो पहले ही सो चुके थे। मम्मी को भी नींद आ गई थी। दिनभर की भाग-दौड़ ने उन्हें थका दिया था। नींद अब भी मेरी आंखों से कोसों दूर थी। मेरे मस्तिष्क में निरंतर एक द्वंद्व चल रहा था। मैं किसी निष्कर्ष पर पहुंच नहीं पा रही थी। मां ने बॉस की पत्नी के प्रश्न का कितनी आसानी से उत्तर दे दिया था- कि मैं कहीं काम नहीं करती। लाख सोचने के बावजूद मैं समझ नहीं पा रही थी कि- क्या मां सचमुच काम नहीं करती?

वरिष्ठ अनुवादक

मंडल रेल प्रबंधक/राजभाषा

इज्जतनगर

नव वसंत का स्वागत!
वासंती समीर मन को लुभा रहा है,
संपूर्ण निशात बाग पुष्प पल्लवित हो उठा है
सकल प्रकृति आज नव-वधू के समान लग रही है
नव वसंत का स्वागत!

◆ कहानी ◆
चिराग तले अंधेरा
कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव

पक्षियों के कलरव में कुछ अंश उनके नृत्य करने एवं थिरकने के साथ ही, परस्पर लड़ने-झगड़ने के अलावा परिवार और समाज में जीने का है। शायद ऐसी ही कुछ प्रेरणा लेकर मीता बड़ी हुई हो।

घर की दो बेटियों में छोटी, किंतु सात भाइयों में दुलारी जिनमें दो अनुज; अन्य पांच अग्रज, एक अग्रजा-कुल नौ संतान के बीच मीता का कृशकाय होना स्वाभाविक था। पिता जो कुछ कमाते; घर में पूरा कितना पड़ पाता। बेटों में सबसे बड़ा जब अभियंता बना सिंचाई विभाग में, तब लगा कि खुशियां आनी हैं...। घर उसका बसा, किंतु संतान का मुख देख पाने के पूर्व ही 'वह' गोलोकवासी हो गया।

फिर तो अन्य बेटे अपनी-अपनी राह होने लगे। अभियंता की पत्नी को पति की नौकरी के एवज में नौकरी मिली; तब उसने अपना तबादला मायके करा लिया और बेटे के साथ रहने लगी। मीता के पापा के एक परिचित ने मदद की और उनके दो बेटों को अपनी फ़ैक्ट्री में बतौर 'फ़िटर' और 'चार्जमैन' लगवा दिया। दोनों की जब तरक्की हुई तब एक 'हेड' हुआ और दूसरा 'फोरमैन'।

अब बात आयी संतानों के कुनबे बसाने की। कुछ अंतराल के बाद घर की बड़ी बेटे विदा की गयी। उसी वर्ष दूसरे बेटे का भी घर बसा बिहार की किसी महिला से जो ज्यादा लिखी-पढ़ी नहीं थी, किंतु दोनों का जोड़ा विधान में लिखा था; सो हुआ। इसी क्रम में अगले फागुन में अगले बेटे का।

इसके लगभग साल भर बाद भी मीता का भी घर बसा। एक ऐसा युवक मिल ही गया जिसकी माता लगभग दस वर्ष पूर्व गुजर चुकी थी। पता चला कि युवक बेरोजगार नहीं; किंतु कुछ साहित्यिक रुझानवाला 'कविटाइप' है। मतलब 'बउक' मत कहें; 'भावुक' कह सकते हैं। ऐसे लोग समाज में रहते हुए भी 'ताखे के दीवट' होते हैं। स्वयं जलते हुए अन्य को ताप, शक्ति एवं ऊर्जा देने वाले। अब जाहिर है, यदि विवाह के समय युवक ने कुछ मांग लिया, तो उसकी सारी की

सारी 'आदर्शवादिता' धरी की धरी रह जानी थी। ऐसे लोगों को तो वाकई 'देवानांप्रिय' जीवन ही जीना पड़ता है कि धरती पर क्यों जी रहे हैं, आपको तो 'आकाशगामी' होना चाहिए था। स्वर्ग में रहें न...।

वास्तव में, युवक जिससे मीता का घर बसने जा रहा था; इस होने वाले रिश्ते से लगभग अन्यमनस्क है- यह मीता के दो भाइयों के साथ गये उसके चाचा ने भांप लिया था। युवक के मामा ने संबंध बनने के पूर्व एक सूची बनायी थी जो किसी संबंध के बनते समय 'गृहोपयोगी' सामान के रूप में गिनी जाती है। युवक उस समय घर से कहीं जाने के लिए निकल रहा था कि उसके मामा ने उसको आवाज देकर बिठा लिया। युवक ने तत्क्षण कह दिया- 'आवश्यकता क्या है इन सामान की। रिश्ता हो जाने के बाद वह स्वयं ही अर्जित कर लेगा जरूरी सामान।' युवक के मुख से निकल पड़ा कतील शिफ़ाई का एक शेर-

'मेहरबां हमपे जो तकदीर हमारी होगी
आपकी जुल्फे-गिरहगीर हमारी होगी।'

कमरे में मौजूद लोग क्या जाने कि शेर है किसका-मीता का एक भाई उठकर कक्ष से बाहर जाकर सड़क के लोगों की आवा-जाही देखने लगा। युवक को वह ही लुधियाना से अपने घर तक आने के लिए प्रेरित किया था। उसका नाम था रवि...

यहां पर एक अंतराल- घटनाक्रम को कुछ और पीछे ले जाना होगा जिन दिनों वह युवक लुधियाना में नौकरी करता था। उसके पास दिल्ली में रहने वाले चाचा का फोन जा पहुंचा था कि वह भला कब तक अपने बूढ़े पिता से रोटियां सिंकवाता रहेगा। गोरखपुर में पिता युवक के भाई-बहन के साथ रहता था। पिता विधुर; अस्तु घर में बहू शीघ्र आनी अपेक्षित ही रही। पिता ने एक पत्र युवक के मालिक के नाम भी भेज दिया था जिस पर लिफाफे के भीतर कुछ यों लिखा था- 'फॉर हूम इट मे कंसर्न'... देखकर युवक के मालिकान नाराज नहीं हुए, यही उनका बड़प्पन था।

लिफाफा युवक को दिखाकर एक महीने के बजाय डेढ़ महीने का सवेतन अवकाश स्वीकृत करते हुए वे

बस इतना ही कहे थे- 'शायद आपने अपने बाबूजी को हम लोगों का नाम नहीं बताया है। फिर भी बात आपकी शादी के बाबत है जो अभी शायद तय हुई है कि नहीं- आप जायेंगे शायद तभी तय होगी। इसी से कार्ड नहीं है। अब आप ही कार्ड भेज दीजिएगा, वरना वेतन नहीं बन पाएगा।'

मीता को 'देखने' जब दिल्ली से चाची सहित स्वयं गोरखपुर के पूर्वोत्तर रेलवे में कार्यरत युवक के दोनों फूफा सपत्नीक गोरक्षनाथ मंदिर पहुंचे थे; तब उन लोगों की आपसी चर्चा की ओर मीता का सारा संज्ञान रहा। उसे हैरत हुई यह देख-सुनकर कि कितने निस्संग और 'ह्वाट ए वंडरफुल फैमिली' के खास हैं ये लोग जिनमें लोग कह रहे हैं- 'कइसनो होय, घरा इहैं बसे के बा पंकज के; काहे कि भाई साहब इहैं चाहत बाटें। पंकज बहू हमेसा दबिके रही दिल्लीवाली के आगे...'

लुधियाना में अगले ही दिन युवक के पास जा पहुंचा था मीता का भाई रवि जिसने युवक को अपना परिचय देते हुए कहा था- 'हमारे पिता रेलवे में हैं; इसलिए शादी हो जाने के बाद आपको लुधियाना तक आने-जाने में कोई दिक्कत नहीं होगी...।' उस समय भी युवक ने रवि को कतील शिफाई का शेर सुना दिया था। रवि ने युवक से मतलब पूछा था। उस समय युवक ने कहा था- 'शायर की ये दो पंक्तियां अरदास हैं; इबादत ...यह भी हो सकता है कि तब तक मेरी ही नौकरी पूर्वी उत्तर प्रदेश में लग जाए, क्योंकि मैंने उधर के एक प्राइवेट संस्थान में नौकरी के लिए अर्जी दे रखी है...।'।

शादी के लिए घर में 'सूची' पर अटकते लोगों से युवक सात-आठ सामान में से पंखा, रेडियो, सिलाई मशीन का नाम मामा के मुख से निकलते ही कहा- 'हमारे यहां है।' अब अगले सामान का नाम लेते ही मीता के चाचा के मुख से निकलता- 'हमारे हियां नाहीं सोहाला।' फिर तो सूची के हर सामान के नाम पर यही उक्ति दोहरायी जाती- 'हमारे हियां नाहीं सोहाला।' कहकर हंस देता फिक्क से चाचा...।

बहरहाल मीता और युवक का विवाह होते समय उस युवक की सास ने लाल रूमाल पर एक सौ एक रुपये रखकर दिए। 'कलेवा' नामक रस्म भी थी जिसमें अगला क्रम एक विधवा (मीता की बड़ी भाभी) का था जिसने कलाई में उसके घड़ी बांधकर इक्यावन रुपये दे दिए। इसके बाद आया गुलाबी रंग का फूलदार रूमाल- रेल रश्मि-अंक 59

'मैं बबली आपकी सबसे बड़ी साली।'।

झलक दिखलाती जयशंकर 'प्रसाद' के शब्दों में-

'दिखाकर ज्यों बिजली का रूप

मेघ बन बीच गुलाबी रंग'

जैसी लुप्त हो गयी। इसके बाद आसमानी रंग की रूमाल के साथ ग्यारह रुपये के साथ- 'मैं सुमन हूं...।'। लोग इसी तरह से परिचय देते जाते और नेग। दो-तीन बार बीच-बीच में उसके सामने मीता का 'चार्जमैन' भाई आकर छेड़ने-मुस्कराने के अंदाज में कह देता- 'शुरू कीजिए भाई साहब। अभी संतुष्ट नहीं हुए... दोनों हाथ और जेबें भरी हैं'

युवक थाली में चम्मच नहीं देखकर अपनी खास 'नक्शेबाजी' में गुम था। तभी 'चार्जमैन' ने फिर कहा- 'क्या भाई साहब, अरे पंकज जी! सवा घंटे से घड़ी तो देख लीजिए। आपकी सालियां, साले सब खड़े हैं... कुछ चाहिए तो बोलें। मोपेड के लिए आपको दो हजार अलग से दे दिया जाएगा। अभी तो नहीं... शुरू करें। आपके दो हजार रुपये का सवाली नहीं।'।

इसके बाद तो रस्म ही होनी थी। चम्मच से मुख में ऊपर ही ऊपर दही चखने के बाद गुलाबी रूमाल को मुख के पास पंकज लगाता कि बायीं ओर से एक महिला आयी- 'हमें पहिचानला बाबू, अरे अइला हमरे ही घरे... हमरे शीला के हियां नाहीं, त ओकरे मामी के बिटिया के साथे घर बसल न?... ' तब तक 'चार्जमैन' ने उससे कह दिया था- 'अच्छा, उठा... अब आगे के रस्म होवे द...।'।

पंकज नामधारी युवक 'माड़व' से बाहर आया था; तब देखा कि उसका जूता गायब। उनमें से एक श्वेतांबरी साली ने अपने 'सा' वाली अपेक्षाकृत मोटी-सी आवाज में कहा- 'जीजाजी, क्या जूता आपका उड़ गया?... गायब हो गया?... अब दीजिए कुछ नेग अपनी सालियों को भी... '।

माहौल से लगभग ऊबे पंकज नामक उस युवक ने हाथ में जितना भी (रुपया) आया था, उनकी ओर बढ़ा दिया। एक स्वर उभरा। यह सुमन- 'कम है!... सालियां ज्यादा हैं...।' सास के साथ खड़ी महिलाओं में से एक स्वर उभरा- 'यहां मीता की मामियां, चाचियां भी हैं... युवक ने बेहद शांत स्वर में कहा- 'यह लीजिए, यह लाल रूमाल रखकर मैंने सब आप लोगों को दिया।'।

पंकज जेबों से सारे रुपये और रूमाल वहीं पर

रखकर चलने लगा- 'जो दे दिया, सो दे दिया और भीतरी जेब से निकाल कर दो सौ रुपये वहां पर और रख दिये। कक्ष से बैठके में मोजे में ही बाहर आ गया। वहां पर खड़ा था युवक का फुफेरा भाई राधेकृष्ण जिसने पूछ लिया- 'क्यों सिर्फ मोजे में? जूता कहां है?'

'छोड़िए हैं न यहीं वाहन से आये हैं न हम... आप चलायें मोटर साइकिल; मैं बैठ लेता हूं पीछे... देखकर हंस रहे हैं एक 'लासा' ओमजी। जूता रहने दें यहीं। ले लिया जाएगा दूसरा...' युवक के पार्श्व में खड़ी थी श्वेतांबरी श्यामा श्यामवर्णी भारती। उसकी ओर देखकर राधे समझ चुका था कि 'जूता प्रकरण' का 'मास्टर माइंड' कहां है। उसने कहा- 'तुम न बोलो तो मैं बता दूं कि जितने क्वारे हैं बारात में यहां सब आ जाएंगे और जितनी सालियों ने यह रस्म की है; सबको अपनी-अपनी ससुराल जाना होगा।'

गुलाबी रूमाल देने वाली साली की माता ने भोले स्वर में कहा- 'हम एक लड़की तो दे ही रहे हैं लेकिन... इस पर श्यामा जूता लेकर आयी और बोली- 'मैं श्यामा, हमारे यहां जूता छिपाने की रस्म है जीजाजी, माफ कर दीजिए...'

तो मीता की पंकज के साथ शादी हो ली। बबली की पंकज के चचेरे भाई के साथ 'चौथ' की रस्म भी हो ली। महीने भर के भीतर मीता को मायके की याद हो

आयी। होली जो करीब आ गयी थी। कोई बुलावा नहीं भेजा गया था; किंतु बिन बुलाये ही पहुंच गयी थी जोड़ी मीता-पंकज की। मीता की भाभी की दो बहनें रहीं वहां -आभा, विभा... उन सबने पंकज से कोई गीत गाने का आग्रह किया तो उसने एक उनकी पसंद का सुनाया। दूसरा अपनी पसंद का। तभी आभा ने उसको आंगन से उठाकर बैठक में बिठा दिया और बोली यहां गाइये तो दो-एक साली बैठ जाएंगी। रवि भैया जी भीतर हैं। उठेंगे तो आपको कुछ इनाम-विनाम भी दे देंगे...।'

पंकज नामक युवक ने लगभग सवा घंटे तक गाने पर गाने गाये- तलत महमूद, महेंद्र कपूर, मोहम्मद रफी, के.एल.(कुंदन लाल) सहगल, हेमंत कुमार, मन्ना डे, एस.डी.(सचिन देव) बर्मन, मुकेश; तभी लता और आशा के साथ गाये गीतों को स्वर का साथ देने लगीं आभा-विभा। उनके आग्रह पर पंकज ने किशोर कुमार के स्वर में झूमते सदावहार गाने भी गाये। तभी कमरे का फाटक 'फटाक' से खोलते हुए निकला रवि- 'अजब मुर्गा बनावत हुआ।'

भाई साहब, जब थक जाइएगा, तब बताइयेगा। गनवा केतनौ गाइयेगा, एक्को पइसवा मिलेवाला नइखे...-सुनकर पंकज ने समझ लिया वाकई चिराग तले अंधेरा ही अंधेरा था।

वरिष्ठ उप संपादक 'आज'
बैंक रोड, गोरखपुर-273015

फूलों में मृदु अंग लपेट कर,
किरणों के सौ रंग समेट कर,
गुंजन कूजन से जग को भर
फिर वसंत की आत्मा आई
हरित शुभ्र स्वर में भर मर्मर,
अरुण पीत लौ में कंप कंप कर।

-कविवर सुमित्रानंदन पंत

कुमुद बिकसित हो गए जब चंद्रमा वह सज उठा
कोकिला-कलरव समान नवीन नूपुर बज उठा
प्रकृति और वसंत का सुखमय समागम हो गया
मंजरी रसमत्त मधुकर-पुंज का क्रम हो गया।

-जयशंकर प्रसाद

◆ रीति-रिवाज ◆

हर्षवर्धन ने किसी के लिए हाथ हिलाया, किसी के लिए सिर सुरभि श्रीवास्तव

सम्राट हर्षवर्धन के राजतिलक का 'हर्षचरित' में सुंदर और सचित्र उल्लेख है। वर्णित है- सम्राट हर्षवर्धन ने अतिथियों और सामंतों के स्वागत और अभिवादन के लिए किसी की ओर सिर्फ एक निगाह भर डाली, तो किसी की ओर देखकर पौन इंच मुस्करा भर दिए। किसी को एक हाथ थोड़ा-सा उठाकर आदर दे दिया और अन्य लोगों के लिए हाथ ही नहीं उठाया; बल्कि सिर भी कुछ हद तक हिलाया।

सम्राट हर्षवर्धन ने कभी अपने सिंहासन से उठने का उपक्रम मात्र किया तो कभी थोड़े से उठे भी। कभी-कभी पूरे खड़े होकर और कभी हाथ जोड़कर, कभी दो कदम आगे बढ़कर उनका हृदय से स्वागत किया। ये सब राजदरबार के वे सामान्य शिष्टाचार थे जो उस दरबार में आगंतुक की हैसियत को प्रकट करते थे।

आज भी अपने देश में गुरुजनों को साष्टांग प्रणाम कई स्थलों पर किया जाता है जो हृदय तथा मन की सरलता का द्योतक है- 'बंदौ गुरुपद कंज कृपा सिंधु नर रूप हरि!'... 'बंदौ गुरुपद पदुम परागा!' साष्टांग प्रणाम में संपूर्ण समर्पण एवं शरणागत भाव भी निहित है। पश्चिम के देशों में सामंत सम्राट को दोनों घुटनों के बल जमीन पर बैठकर उनका हाथ अथवा दामन चूमकर अभिवादन करते थे।

भारत में भी जब पोप आए तब बिशप वर्ग के लोग इसी तरह से घुटने टेककर उनका हाथ चूमते हुए देखे गये। पाश्चात्य संस्कृति में पोप का अभिवादन किसी सम्राट की भांति ही किया जाता है। महारानी एलिजाबेथ जब भारत आयी थीं; तब उन्होंने दस्ताने पहनकर मेजबानों से हाथ मिलाया था किंतु जयपुर के महाराजा ने महारानी से हाथ मिलाते समय दस्ताने नहीं पहने हुए थे।...

शायद शिष्टाचार यही है कि महारानी के पवित्र हाथों पर तो दस्तानों का रक्षा-कवच रह सकता है, किंतु अन्य कोई भी उनसे इसतरह का परहेज नहीं कर सकता। पश्चिम में सामान्यतः अभिवादन करने के लिए हाथ मिलाने का रिवाज है, किंतु आज के वैज्ञानिक दौर में इस रिवाज की काफी आलोचना भी होने लगी है

क्योंकि हाथ में लगे हुए पसीने और दुर्गंध आदि के माध्यम से कीटाणुओं का इस प्रक्रिया में काफी आदान-प्रदान संभव है।

यद्यपि सामान्यतः राजनीतिज्ञों को राजनयिक शिष्टाचारवश बहुत देर तक जोर-जोर से हाथ मिलाते रहना पड़ता है; ताकि प्रेस एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के फोटोग्राफर उन्हें अच्छी तरह से कैमरे में उतार लें और दुनिया को उनकी आपसी घनिष्ठता का बोध उनके परस्पर मिले हाथों की कसावट और दीर्घकाल से लग जाए। इसी क्रम में राजस्थान में प्रचलित 'हथलेवे' की प्रथा की चर्चा करना भी जरूरी है जहां वर-वधू का हाथ मिलाकर ऊपर से कोई लाल-गुलाबी-नारंगी-हरा या आसमानी रंग का कपड़ा बांध दिया जाता है, ताकि कहाँ क्या हो रहा है, कोई अन्य नहीं देख सके। फिर घंटों उन्हें इसी अवस्था में ही रहना होता है।

विश्व कीर्तिमान

वर्ष 1907 में अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने तो 'हाथ मिलाने' का एक विश्व कीर्तिमान ही स्थापित कर दिया था। उनकी जीवनी के लेखक एडमंड मोरिस ने लिखा है- 'सिर्फ एक दिन में रूजवेल्ट ने कुल 8,150 लोगों से हाथ मिलाये और अंत में इस कठिन लोकप्रियता के प्रदर्शन के बाद कीटनाशक साबुन से खूब मल-मलकर अपने हाथ धोये।'

हाथ मिलाने की इस प्रथा में कभी-कभी बेहद मार्मिक क्षण भी आते हैं जब विशिष्ट लोगों को सुंदरियों के साथ हाथ मिलाना होता है। इसमें ऊपर से तो होती है शुद्ध और शुष्क औपचारिकता, किंतु अंदर ही अंदर एक प्रकार की गुदगुदी भी रहती है। एक बार एक नवयुवक बेहद भावनात्मक लहजे से 'यूलिसीज' के लेखक जेम्स जोयंस की ओर बढ़ा और कहा- 'मेरे मन में आता है कि इतनी प्रसिद्ध कृति को लिखने वाले आप के हाथों को चूम लूं!... किंतु जोयंस ने हाथ हटाते हुए और उसको बखूबी सावधान करते हुए कहा- 'लिखने के अलावा यह हाथ और भी बहुत कुछ गंदे काम भी करता है... भावावेश में आप यह मत भूलें!'

भारतीय संस्कृति में नमन

भारतीय संस्कृति में अभिवादन का औपचारिक तरीका दोनों हाथ जोड़कर नमन (नमस्कार) करना है। यह नमस्कार का शास्त्रीय स्वरूप है— पहले जुड़े हाथों से भृकुटि मध्य आज्ञाचक्र का स्पर्श और बाद में हृदय के पास अनहद चक्र का स्पर्श। तात्पर्य यह है कि मैं अपने मन के समस्त विचारों की गहराई और हृदय की सारी भावनाओं की कोमलता के साथ आपको नमन करता हूँ।

यह बहुत सुंदर भाव है और काफी सुरक्षित तरीका भी किंतु पाश्चात्य संस्कृति में रंगे कई लोग तो इससे संतुष्ट ही नहीं होते। उन्हें तो मांस से मांस, नाड़ी से नाड़ी और पसीने से पसीने को मिलाये बिना चैन ही नहीं आता। भले ही यह तरीका जुकाम, फ्लू और वायरस या कीटाणुवाहक क्यों न हो।

अरब देशों व मध्य पूर्व एशिया में लोग केवल हाथ मिलाने मात्र से संतुष्ट नहीं होते। कई देशों के राष्ट्रपति तो परस्पर आलिंगन और गालों का चुंबन भी किया करते थे। इसी सिलसिले में एक घटना का जिक्र वयोवृद्ध पत्रकार खुशवंत सिंह ने अपने मशहूर कॉलम में किया कि उन्होंने यही शिष्टाचार पाकिस्तानी राजदूत की युवा कन्या के साथ निभा दिया था जिस पर कितना बड़ा हंगामा खड़ा हो गया था पाकिस्तान में। तब खुशवंत सिंह ने पितामह के प्यार भरे चुंबन की तीखी आलोचना करने वालों के लिए कहा था कि इसको अन्यथा लेने वालों के मन और विचार गंदे हैं— चुंबन तो एक पवित्र भावाभिव्यक्ति है।

बताते हैं कि अभिवादन के अनेक रीति-रिवाज हाल के दिनों के नहीं, वरन 'वीरगाथाकाल' के बने हुए हैं। हाथ मिलाना, हाथ जोड़ना— ये सब उसी काल से शुरू हुए होंगे जब तलवार, भाले और छुरों का युग हुआ करता था। राजस्थान के हाड़ौती और मालवा अंचलों में तो महिलाओं के परस्पर लोक-अभिवादन का अलग ही तौर-तरीका है। महिला अपने से बड़ी महिला के पांव दबाने का संकेत देती है। यह उसकी सेवा-भावना का प्रतीक है। इस क्रम को कम से कम तीन बार दोहराया जाता है। इसीतरह बिहार में महिलाएं बुजुर्गों के तीन बार पांव छूकर अभिवादन करती हैं।

सेना में सैल्यूट

सेना में नायक को सलामी के रूप में सैल्यूट दिया जाता है जो उसी तरह उसको लौटाया भी जाता है। कुछ अफसर इस बात को नागवार मानते हैं कि उन्हें सैल्यूट नहीं दिया गया। चीन और जापान में अभिवादन करने के तरीके दूसरे हैं। इनके यहां काफी झुककर और गर्दन को लटका-लटकाकर कई बार अभिवादन करने की प्रथा है।

हमारे देश में बड़ों के सम्मुख नंगे सिर नहीं आने का रिवाज था; इसीलिए सिर पर साफा अथवा टोपी पहनना लोगों के लिए जरूरी था। इसीतरह मंदिर, मस्जिद अथवा गुरुद्वारे में प्रवेश के समय भी सिर ढकने का रिवाज है। महिलाएं भी सिर ढककर आदर प्रकट करती थीं।

पश्चिम में अभिवादन और शिष्टाचार का रिवाज कुछ भिन्न है। वहां पर बड़ों को देखते ही हैट अथवा कैप (टोपी) उतार लेने का रिवाज है। वैसे सेना के सलाम का जवाब नंगे सिर देना बेहद खराब माना जाता है, किंतु आम तौर पर हमारे यहां नेता लोग यही करते हैं जबकि पाश्चात्य देशों में हैट उतारना आदर-सूचक माना जाता है।

किंतु आपा-धापी और व्यस्तता के वर्तमान दौर में तो अभिवादन और शिष्टाचार के तौर-तरीकों के चलन और मायने ही बदल गये हैं। अभिवादन के स्वरों पर यदि जरा ध्यान दें तो आजकल टेलीफोन पर या मोबाइल पर परस्पर 'हैलो' अथवा 'हाय-हाय' जैसे अर्थहीन शब्दों का इस्तेमाल होने लगा है। यह भला किस प्रकार के आदरभाव का परिचायक है?... न तो इनका हिंदी में कोई अर्थ है और न ही अंग्रेजी में। एस.एम.एस. में तो और भी अजब तरीके से हिंग्लिशिया शब्दों का व्यवहार हमारे युवा करके भाषा ही बिगाड़ दे रहे हैं।

हां, हमारे बुजुर्ग अब भी नमस्ते, नमस्कार, प्रणाम, राम-राम, जय श्रीराम, जय श्रीकृष्ण, हरिओम जैसे भावभरे उद्बोधनों को व्यवहार में लाते हैं। इसीतरह मुस्लिम संस्कृति (तहजीब) में सलाम वालेकुम के जवाब में वालेकुम सलाम का इस्तेमाल किया जाता है जो वाजिब (उपयुक्त) लगता है।

328, सूर्यविहार कालोनी

गोरखपुर-273015

मन के सौंदर्य और चरित्रबल की समानता करने वाली कोई दूसरी वस्तु नहीं है।

♦ तकनीकी लेख ♦

दुर्घटना बचाव और आप

एन.के.सिन्हा

हमारी दिन-प्रतिदिन की दिनचर्या इतनी व्यस्त है कि हमें अपने समाज एवं देश के बारे में सोचने का अवसर ही नहीं मिलता है। पर हमारी मीडिया चाहे वह प्रिंट मीडिया हो अथवा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, बधाई के पात्र हैं जिसके माध्यम से हमें यह पता चलता रहता है कि कब कौन-सा दिवस आने वाला है। इसप्रकार हमें राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय दिवस, पर्व एवं अन्य महत्वपूर्ण जानकारीयां मिलती रहती हैं। बचपन की ऐसी अनेक स्मृतियां हमारे-आपके जेहन में अवश्य होंगी, जब हम राष्ट्रीय पर्व पर क्रांतिकारियों एवं देश पर मर-मिटने वाले बलिदानियों की कहानियां सुनकर प्रण किया करते थे कि बड़े होकर हम भी देश एवं समाज के लिए कुछ करेंगे।

हमारे बचपन के मित्र, जिनके साथ हम स्वतंत्रता दिवस एवं गणतंत्र दिवस पर विचार-विमर्श करके भविष्य के ताने-बाने बुना करते थे, उनमें से कौन कहां है पता नहीं। लेकिन वो ज़ुब्बा अब भी याद आता है जब हम बातचीत के दौरान यह कहा करते थे कि जब जन्म लिया है तो देश व समाज के लिए कुछ करना चाहिए। लेकिन समय के साथ जब रोजी-रोटी की व्यवस्था का दायित्व अपने पर आया तो पता चला कि जीवनयापन के लिए नौकरी करना भी आवश्यक है और हम-आप अपने-अपने काम-धंधे में लग गये। हमें ऐसा लगता होगा कि इससे अलग होकर जनहित में कुछ करना शायद असंभव है। पर ऐसा नहीं है हम अपनी नौकरी में रहते हुए जनहित से जुड़े कार्यों को भी अंजाम दे सकते हैं। यह कुछ मुश्किल जरूर हो सकता है पर असंभव नहीं। इसलिए मैंने यह गहन विचार करना आरंभ किया कि कुछ ऐसा किया जाए कि अपनी नौकरी के साथ जनहित में भी कुछ किया जा सके। बहुत विचार करने पर जब मैंने देखा कि लक्ष्य तो सामने है। जो कुछ मैं करना चाह रहा हूं वह सब कुछ सामने ही है और मैं बेकार में परेशान हूं। रेलवे की संरक्षा से जुड़े विभाग में कार्यरत होने के कारण मुझे इस क्षेत्र में जनहित में कार्य करने की काफी संभावनाएं दिखाई दी। आइए आज हम रेलवे की संरक्षा से जुड़े इस मामले पर प्रकाश डालते हैं।

पूर्वोत्तर रेलवे में तीन मंडल यथा- इज्जतनगर, लखनऊ एवं वाराणसी मंडल हैं। इन तीनों मंडलों के कार्यक्षेत्र में कुल रेल रश्मि-अंक 59

2,551 रेलवे फाटक हैं जिसमें से 1,165 मानवयुक्त फाटक हैं यानी इन फाटकों पर फाटकवाला तैनात है। जबकि 1,386 मानवरहित फाटक हैं यानी इन समपारों पर फाटकवाला तैनात नहीं है। देखने में आया है कि अधिकांशतः रेल दुर्घटनाएं मानवरहित समपारों पर होती हैं। लगभग ये सभी दुर्घटनाएं सड़क उपयोगकर्ताओं की लापरवाही से होती हैं जिससे आम जनता की जन-धन की हानि तो होती ही है, साथ ही रेलवे का अलग से नुकसान होता है।

सड़क पर चलते हुए आप पाएंगे कि सबसे ज्यादा खतरनाक स्थान यदि कोई है तो वह स्थान है मानवरहित समपार फाटक। विश्लेषण करने पर यह जान पड़ता है कि पढ़े-लिखे लोग, जो कि अत्याधुनिक कारों में चलते हैं, वे भी मानवरहित समपार फाटकों पर मौजूद खतरे से अनजान हैं। ट्रैक्टर-ट्राली की तो बात ही छोड़ दें टैंपो वाले भी पीछे नहीं हैं। जब कभी मानवरहित समपार फाटक पर बस वाला लापरवाही में रेलगाड़ी से भिड़ जाता है तो 30-40 लोग अचानक काल-कवलित हो जाते हैं। हम यह जान लें कि यह सब हमारी जरा-सी लापरवाही और उतावलेपन के कारण ही घटित होता है। रेलवे तो अपनी ओर से हमेशा विभिन्न प्रचार-प्रसार के माध्यमों के जरिए आम जनता को आगाह करता रहता है कि मानवरहित समपार पार करने के पहले रुकें, देखें फिर पार करें।

संभवतः पूर्वोत्तर रेलवे के प्रयासों से ही मानवरहित समपारों पर होने वाली दुर्घटनाओं में कुछ कमी हुई है। फिर भी मेरा मानना है कि सरकारी स्तर पर जो प्रयास किए जा रहे हैं उसके अलावे भी आम आदमी स्वयं भी सावधानी अपनाकर स्वयं व अन्य लोगों को चेतावनी देकर मानवरहित समपार पर होने वाली दुर्घटनाओं को कम करने में सहायता कर सकता है। इसीतरह दुर्घटना कम करने के सरकारी प्रयासों को करते-करते मेरे मन में यह विचार आया कि क्यों न गांव-गांव घूम कर ग्रामीणों को जागरूक किया जाए कि वे स्वयं तो समपार पार करने में सावधानी अपनाएं, साथ ही दूसरों को भी मानवरहित समपार पार करते समय सतर्क रहने के लिए प्रेरित करें। इसप्रकार देश का प्रत्येक नागरिक मामूली लगने वाले कार्य करके देश की और जनता की सेवा कर सकता है। अगर

आपके इस प्रयास से एक की भी जान बच गई तो आपका प्रयास सार्थक होगा। अब मैं जहां भी जाता हूं वहां लोगों से सड़क पर आसन्न मानवरहित समपार के खतरा से अवगत कराना नहीं भूलता। इससे मुझे आत्मिक सुख मिलता है। यह लेख आप सभी के विचार के लिए प्रस्तुत है, ताकि हम मानवरहित समपार पर होने वाली दुर्घटनाओं को रोकने के लिए एक जन-आंदोलन खड़ा कर सकें। आम आदमी भी रेल पर होने वाली दुर्घटनाओं को रोकने के लिए बहुत कुछ कर सकता है। इसके लिए हमें कुछ सूत्र ध्यान में रखने होंगे-

1. मानवरहित समपार पार करने के पहले रुकें, दोनों ओर देखकर सुनिश्चित कर लें कि कोई गाड़ी नहीं आ रही है तभी समपार पार करें।
2. वाहन में तेज म्यूजिक बजाकर मानवरहित समपार न पार करें।
3. सड़क वाहन चालक शराब पीकर वाहन न चलावें।
4. बिना लाइसेंस किसी को वाहन न चलाने दें।
5. अव्यस्क बच्चों को वाहन न चलाने दें।
6. समपार पार करते समय गीयर न बदलें एवं सेल्फ स्टार्टर को ठीक रखें।

समपारों के बारे में सभी को यह जानना अति आवश्यक है कि भारत के संविधान के अनुसार रेल पटरी पर चलने का पहला हक रेलवे का है। इसलिए सड़क उपयोगकर्ताओं को समपार पार करने के पहले रुक कर यह देख लेना चाहिए कि दोनों तरफ से कोई रेलगाड़ी तो नहीं आ रही है उसके बाद ही समपार पार करना चाहिए। एक तथ्य और आपके सामने रख रहा हूं जिससे आप सहमत होंगे कि मानवरहित समपार एक तरह से ज्यादा सुविधाजनक एवं कम समय लगनेवाला है। यदि सावधानी से दोनों तरफ देखकर गाड़ी का न आना सुनिश्चित कर समपार पार किया जाए तो यह अत्यंत सुविधाजनक है। मानवयुक्त समपार पार करने में कम से कम 10 मिनट और उससे ज्यादा के बारे में कहना ठीक नहीं है, समय लगता ही है।

मानवरहित समपारों पर होने वाली दुर्घटनाओं के अलावा कुछ अन्य घटनाएं भी हैं जिससे जनता के साथ-साथ रेलवे को हानि होती है। हम जानते हैं कि रेलवे सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों से होकर गुजरती है। अक्सर गांव के लोग मवेशियों को रेल लाइन के किनारे चराने के लिए लाते हैं। कभी-कभी मवेशी रेलगाड़ी से टकरा जाते हैं और रेल रश्मि-अंक 59

मर जाते हैं। इससे कभी-कभी बड़ी दुर्घटनाएं भी होने की संभावना बन जाती है। हम जब गांव में जाते हैं तो लोगों को बताते हैं कि मवेशियों को रेलवे लाइन के समीप न लावें इससे रेलवे एवं आपका दोनों का नुकसान है।

हमारे क्षेत्र में एक और बहुत बड़ी समस्या रेलवे से जुड़ी है। ग्रामीण या शहरी दोनों इलाकों में चलती रेलगाड़ी पर पत्थर या कीचड़ फेंकना खेल समझा जाता है। यह कार्य केवल मनोरंजन के लिए कुछ बच्चे या बड़े करते हैं पर वे नहीं जानते कि इसका परिणाम भयानक होता है। कुछ रेलयात्रियों की जान चली जाती है जबकि अधिकांश अपना आंख व अन्य अंग स्थायी रूप से गंवा देते हैं। हम जब भी गांवों में या अन्य जगह संरक्षा शिविर लगाते हैं तो उनसे कहते हैं कि इस तरह का मनोरंजन उचित नहीं है। दूसरों को नुकसान न पहुंचावे। रेलवे के साथ एक और समस्या गाड़ी में आग लगने की है, जिसमें आम जनता का सहयोग जरूरी है। इसके लिए आमजन से बार-बार निवेदन किया जाता है कि रेलगाड़ी में यात्रा के दौरान धूम्रपान न करें और ज्वलनशील वस्तुएं लेकर यात्रा न करें। गाड़ी में आग लगना अत्यंत भयानक होता है। एक बार आग लग जाने पर कुछ भी नहीं बचता है।

हमारा प्रयास कितना सार्थक होगा मैं नहीं जानता हूं। किंतु हमारा यह भगीरथ प्रयास अनवरत जारी रहेगा और इसमें आम लोगों को शामिल करके जन-जागरण के माध्यम से रेलवे से संबंधित दुर्घटनाएं रोकने में आम जनता की मदद का प्रयास जारी रहेगा। आम जनता का सहयोग लेने के लिए हम कुछ ग्रामीणों के सहयोग प्राप्त करते हैं। हम सभी रेल कर्मचारी यदि अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों को मानवरहित समपारों पर सतर्क रहने के लिए जागरूक करें तो यह रेलवे एवं समाज के लिए अच्छा होगा। अंत में इस लेख को पढ़ने वाले सभी पाठकों से अनुरोध है कि कम से कम दो या तीन पंक्तियां विशेष रूप से बच्चों को समझाएं कि रेलवे हम सभी की संपत्ति है। ज्यादा से ज्यादा सुविधा एवं लाभ पाने के लिए रेलवे की हिफाजत करना हमारा दायित्व है। इस प्रकार छोटी-छोटी लेकिन मोटी-मोटी कुछ बातों का ध्यान रखकर हम सब रेलवे दुर्घटनाओं को कम करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

सहायक परिचालन प्रबंधक/संरक्षा
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

◆ सुरक्षा ◆

फायर

ए. के. सिन्हा

टेद्राहेड्रन आफ फायर (आग का चतुष्फलक)

आग हमारे जीवन में बहुत उपयोगी है। इसके अभाव में हम जीवित नहीं रह सकते हैं, किंतु जब यह नियंत्रण के बाहर हो जाती है, तब इसके ऊपर काबू पाना कठिन हो जाता है।

आग बराबर जलती रहे इसके लिए हमें चार चीजों की आवश्यकता होती है जिसे आग का चतुष्फलक कहते हैं।

1. ज्वलनशील पदार्थ
2. ताजी हवा या आक्सीजन
3. प्रज्वलन तापमान
4. रासायनिक चेन क्रिया

आग बुझाने के उपाय

यदि आक्सीजन, प्रज्वलन तापमान, ज्वलनशील पदार्थ तीनों में से किसी एक चीज को नियंत्रित कर दिया जाए तो आग अपने आप बुझ जाएगी। आमतौर पर आग निम्न तरीके से बुझती है:-

1. ठंडा करना या प्रशीतन (COOLING PROCESS)

आग लगने की स्थिति में आग को नियंत्रित करने के लिए, यह जरूरी है कि जलने वाली जगह एवं ज्वलनशील पदार्थ का तापमान अधिक न बढ़े। तापमान अधिक बढ़ने पर आग पर नियंत्रण पाना मुश्किल हो जाएगा। आग पर नियंत्रण पाने के लिए प्रथम अवसर में आग बुझाना शुरू कर देना आवश्यक है। इंतजार करने से आग पर नियंत्रण कठिन हो जाएगा।

2. ताजी हवा की आपूर्ति रोकना, वायुरोधन, गला घोटना (SMOOTHERING PROCESS)

तेल की आग को इस विधि से बुझाना चाहिए उस पर पानी कदापि नहीं डालना चाहिए, इससे आग और फैल सकती है। इस विधि में बालू, भुरभुरी मिट्टी अथवा फोम टाइप, ड्राई केमिकल पाउडर रासायनिक अग्निशामक यंत्र का प्रयोग किया जाता है।

3. ईंधन हटाना, वंचित करना, भूखों मारना (STARVATION PROCESS)

न जले हुए ज्वलनशील पदार्थ को जलने की जगह से हटा देने पर आग बुझ जाती है।

आग का प्रसार

आग निम्न तरीकों से फैलती है:-

1. **संचरण**- बहुत सी धातु ऐसी होती हैं, जो स्वयं नहीं जलती हैं, किंतु गर्मी को संचालित करती हैं, यदि ऐसी धातुओं का एक सिरा आग में हो और दूसरे सिरा पर ज्वलनशील पदार्थ हो, तो उसमें आग लग जाएगी। ऐसी स्थिति में गर्मी संचालित करने वाली धातु को ठंडा रखना चाहिए या ज्वलनशील पदार्थ को हटा देना चाहिए।

2. **संवहन**- गरम धुआं अथवा गैस ऊपर की ओर उठती है, यदि ऊपर छत है तो पुनः वह फैलकर किनारे से गुंबदाकार होकर ऊपर उठती है। यदि ऊपर में किसी ज्वलनशील पदार्थ के संपर्क में आती है तो उसमें आग लग जाती है। ऐसी स्थिति में ज्वलनशील पदार्थ को ठंडा रखना चाहिए या उसे हटा देना चाहिए।

3. **विकिरण**- हवा या निर्वात में होने वाले ऊष्मा संचरण को विकिरण या रेडिएशन कहते हैं। कभी-कभी गर्म हवा के कारण आग लग जाती है। उदाहरण के लिए- यदि किसी मकान में आग लगी हो और उसके पास कोई फूस का मकान हो, तो उसमें आग लग जाएगी। ऐसी स्थिति में फूस के मकान पर पानी डाल कर ठंडा रखना चाहिए।

4. **चिन्नारी**- छोटी-छोटी चिन्नारी हवा में ऊपर उठती है और दूर जाकर यदि ज्वलनशील पदार्थ पर गिरती है तो उसमें आग लग जाती है। ऐसी स्थिति में मकानों के छत को स्वच्छ रखना चाहिए तथा मकानों की निगरानी रखनी चाहिए।

आग के प्रकार (पदार्थों के आधार पर) IS -2190-79

1. 'ए' श्रेणी की आग

साधारण आग जैसे कोयला, कागज़, कपड़ा, लकड़ी, घास, रबर, प्लास्टिक इत्यादि की आग जहां पानी का प्रशीतन प्रभाव अग्निशमन के लिए आवश्यक हो।

2. 'बी' श्रेणी की आग

ज्वलनशील एवं वाष्पशील द्रवों में लगने वाली आग या द्रवीय ठोस में लगने वाली आग जहां कंबलन (blanketting) प्रभाव अग्निशमन के लिए आवश्यक हो। जैसे पेट्रोल, तेल, वार्निश, पेंट, डीजल,

केरोसिन, नेप्था, अल्कोहल, बेंजिन, खाद्य, खनिज एवं ट्रांसफार्मर आयल, ग्रीस, वसा आदि की आग।

3. 'सी' श्रेणी की आग

ज्वलनशील गैसों में लगने वाली आग जैसे एल.पी.जी., प्रोपेन, हाइड्रोजन, एसिटिलीन आदि की आग। जहां जलते हुए गैस को बुझाने के लिए कोई अक्रिय गैस, पाउडर या वाष्पशील द्रव की आवश्यकता हो।

4. 'डी' श्रेणी की आग

ज्वलनशील धातुओं में लगने वाली आग जैसे जिंक, सोडियम, मैग्नीशियम, एल्युमिनियम, पोटेशियम इत्यादि।

विभिन्न अग्निशमन माध्यम

1. 'ए' श्रेणी की आग- पानी फेकने वाले अग्निशामक यंत्र।
2. 'बी' श्रेणी की आग- फोम, ड्राइपाउडर, वाष्पशील द्रव व कार्बन डाइआक्साइड अग्निशामक यंत्र।
3. 'सी' श्रेणी की आग- ड्राइपाउडर, वाष्पशील द्रव व कार्बन डाइआक्साइड अग्निशामक यंत्र।
4. 'डी' श्रेणी की आग- मेटल फायर के लिए उपयुक्त विशेष ड्राइपाउडर अग्निशामक यंत्र।

परिभाषाएं-

आग (फायर) फायर शब्द के अक्षरों से बना एक्रोनिम जो अग्निशमन का तरीका प्रदर्शित करता है।

F- Find (आग का पता लगाना)

I - Inform (सबको सूचित करना)

R- Restrict (बढ़ने/फैलने से रोकना)

E- Extinguish (बुझाना)

प्रज्वलन ताप (Flash Point):-वह न्यूनतम तापक्रम जिसपर कोई द्रव ईंधन अधिक वाष्प देता हो और ज्वाला के निकट लाने पर वह वाष्प ज्वलित हो जाती है, प्रज्वलन ताप कहलाती है।

ज्वलन तापमान (Ignition Temperature):- वह न्यूनतम ताप जिस पर किसी ईंधन को जलाने पर सक्रिय दहन प्रारंभ हो जाता है और ईंधन स्वतः ही ज्वलित होता रहता है, ज्वलन तापमान कहलाता है।

फायर प्वाइंट (Fire Point):- यदि Flash Point में इतना ताप हो गया हो कि ज्वलनशील पदार्थ से लगातार वाष्प उत्पन्न करवा दे, उसे फायर प्वाइंट कहते हैं।

स्वतः ज्वलन (Auto Ignition):-वह ताप जिसपर किसी पदार्थ को, किसी ज्वाला की अनुपस्थिति में, प्रज्वलित होने के पूर्व पहुंच जाना चाहिए स्वतः ज्वलन ताप कहलाता है।

रेल रश्मि-अंक 59

सक्रिय दहन (Spontaneous Combustion):-पदार्थों में आपस में क्रिया होने से उत्पन्न ऊष्मा के कारण सक्रिय दहन होता है।

फ्लैश ओवर (Flash Over):-आग स्वयं बुझ सकती है और यदि इसे पता लगा कर बुझाया नहीं गया तो आगे स्वयं इसकी वृद्धि होती जाती है। यह बार-बार देखा गया है कि कमरे की आग में एक निश्चित स्थिति में आग संपूर्ण वातावरण में भर जाती है। आक्सीजन की मात्रा कम हो जाती है तथा कार्बन मोनो आक्साइड एवं कार्बन डाइआक्साइड की मात्रा उसी अनुपात में बढ़ जाती है, इस घटना को फ्लैश ओवर कहते हैं।

इसप्रकार 'फ्लैश ओवर' वह स्थिति है जिसमें आग two-dimensional से three-dimensional में प्रकाशित होती है।

आग से होने वाले मानव जीवन को खतरे

आग से होने वाली ज्यादातर मौतें या तो प्रत्यक्ष जलने के कारण या धुएं एवं अन्य विषैले गैसों के कारण होती हैं। अन्य कारणों में हार्ट फेल या ऊंचे भवनों से सीधे कूद जाने के कारण हुई कारुणिक मौत होती है। आग के घटना पर निम्न कारणों से मृत्यु हो जाती है :-

1. धुआं
2. जलना
3. त्रास भय या आतंक
4. जहरीली गैसों और वाष्प
5. धुएं के कारण दृष्टि में बाधा या अवरोध
6. मनोवैज्ञानिक आकुलता

सवारी गाड़ियों में अग्निशामक यंत्रों की स्थिति :-

1. ट्रेन इंजन- 04 अदद
2. एस. एल.आर.- 02 अदद
3. वातानुकूलित यान- 02 अदद प्रति कोच
4. पैंट्रीकार- 04 अदद
5. रेल डाक सेवा यान- 02 अदद
6. निरीक्षण यान- 02 अदद

सवारी गाड़ियों में आग लगने के विभिन्न कारण:-

1. विद्युत उपकरणों एवं केबल में शार्ट सर्किटिंग द्वारा।
2. अनधिकृत रूप से कोचेज में ज्वलनशील वस्तुओं को लाना।
3. पैंट्रीकार में कुकिंग गैस से।
4. यात्रियों की लापरवाही से।
5. अराजक तत्वों द्वारा।
6. पॉवर कार में डीजल जेनरेटर से।

7. हाट एक्सल के कारण।
8. अनधिकृत वेंडरों/ठेकेदारों द्वारा कोयले की भट्ठी लाना।

ड्राइ केमिकल पाउडर अग्निशामक यंत्र (ISI-2171)

इसके मुख्य रूप से तीन भाग होते हैं -

1. सिलेंड्रिकल बॉडी
2. कैप असेंबली
3. CO₂ गैस की कार्टिज

1. सिलेंड्रिकल बॉडी

यह माइल्ड स्टील शीट की बनी होती है। इस अग्निशामक यंत्र में 1 किग्रा. से 10 किग्रा. तक सूखा पाउडर रखने की क्षमता होती है। 20, 50, 75, 100 किग्रा. क्षमता वाले भी अग्निशामक यंत्र उपलब्ध हैं परंतु इनमें गैस सिलिंडर बाहर से फिट होते हैं। इनको एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए ट्राली लगी होती है। सिलिंडर के स्टील शीट की मोटाई पाउडर के क्षमता के अनुसार निम्नवत है-

1. 5.0 किग्रा. क्षमता- 1.6 मिमी. मोटी
2. 10 किग्रा. क्षमता- 2.0 मिमी. मोटी

ड्राइ केमिकल पाउडर का कंपोजिशन निम्न है: IS- 4308

- | | |
|--|---------|
| सोडियम बाइ कार्बोनेट (NaHCO ₃) | - 97 % |
| मैग्निशियम स्टिरेट | - 1.5 % |
| मैग्निशियम कार्बोनेट | - 1.0 % |
| ट्राई कैलशियम फास्फेट | - 0.5 % |

धातु के आग के लिये विशेष ड्राइ केमिकल पाउडर का प्रयोग होता है। ड्राइ केमिकल पाउडर सामान्यतः Metal-X नाम से मिलता है जो इसके उत्पादक का ट्रेड नाम है। इसके निम्न प्रकार हैं:

1. जी.आई. गन पाउडर (G.I Powder) - यह विशेषतया ग्रेफाइट बेस का होता है।

2. एनए-एक्स पाउडर (Na-X Powder) - यह सोडियम कार्बोनेट होता है जिसमें उच्च तापमान सहन करने की क्षमता होती है। ये सोडियम मेटल फायर के लिए उपयुक्त होता है।

3. एल आई-एक्स पाउडर (Li-X Powder) - यह विशेषतया लिथियम फायर के लिए उपयुक्त होता है।

4. टी.ई.सी. पाउडर (T.E.C Powder) - यह मैग्निशियम, एल्युमिनियम एवं रेडियोएक्टिव धातुओं में लगी आग को बुझाने के लिए प्रयोग किया जाता है। इसका पूरा नाम टेट्रा यूटेक्टिक क्लोराइड है। इसका संगठन निम्न है:-

- | | |
|-------------------|-------|
| NaCl | - 20% |
| KCl | - 29% |
| BaCl ₂ | - 51% |

यह पाउडर 580°C पर फ्यूज होता है।

रेल रश्मि-अंक 59

2. कैप असेंबली

इसमें पीतल की एक कैप होती है जिसमें दो प्रकार की चूड़ियां होती हैं। दोनों चूड़ियां एक-दूसरे के विपरीत होती हैं। बाहरी चूड़ी सिलेंड्रिकल बॉडी को टाइट करती है तथा अंदर की चूड़ी गैस की कार्टिज को टाइट करती है। कैप के ऊपर नॉब बना होता है जिसमें पिअरसिंग मेकनिज्म लगा होता है जो स्प्रिंग लोडेड होता है। अग्निशामक प्रयोग करते समय इसी पिअरसिंग मेकनिज्म के द्वारा गैस की कार्टिज को आपरेट कराया जाता है। पिअरसिंग मेकनिज्म की सुरक्षा के लिए एक सेफ्टी क्लिप लगी होती है जिसे अग्निशामक यंत्र के न प्रयोग होने की स्थिति में नॉब में लगाया रखा जाता है। अग्निशामक यंत्र के प्रयोग करते समय सर्वप्रथम नॉब से सेफ्टी क्लिप को निकाला जाता है उसके बाद नॉब को हाथ से दबाया जाता है।

3. CO₂ गैस की कार्टिज (ISI Code-4947)

इसमें कार्बन डाइ आक्साइड गैस कंप्रेस स्थिति में भरी रहती है। 5.0 किग्रा. क्षमता के लिए 120 ग्राम की गैस की कार्टिज तथा 10 किग्रा. क्षमता वाले अग्निशामक यंत्र के लिए 180-200 ग्राम की गैस की कार्टिज का प्रयोग करते हैं। 20, 50 तथा 75 किग्रा. क्षमता के अग्निशामक के लिए CO₂ गैस के सिलिंडर अलग से प्रयोग किये जाते हैं। CO₂ गैस के कार्टिज को अधिकतम 40°C तक रख सकते हैं।

4. इनर कंटेनर

यह एक पतला एवं लंबा सिलेंड्रिकल कंटेनर है जिसमें CO₂ गैस के कार्टिज को रखा जाता है। इसका निचला सिरा पतला व लंबा होता है जिसमें तीन छिद्र होते हैं जिन्हें वेंट होल कहते हैं। इन छिद्रों को एक रबर वॉशर से ढक कर नीचे से स्कू द्वारा कस दिया जाता है। इसे नान रिटर्न वाल्व भी कहा जाता है। नान रिटर्न वाल्व का कार्य गैस के कार्टिज के बर्स्ट होने पर CO₂ गैस को बाहर जाने का रास्ता देती है तथा ड्राइ केमिकल पाउडर को बाहर से इनर कंटेनर के अंदर नहीं आने देती है।

अग्निशामक यंत्र के विभिन्न माप:-

- | | |
|---------------------------------|----------------------|
| सिलेंड्रिकल बॉडी का बाहरी व्यास | - 150+10 मिमी. |
| वेंट होल का व्यास | - 2.5 मिमी. |
| पिअरसिंग मेकनिज्म का स्ट्रोक | - 7.0 मिमी. |
| डिलिवरी होज की लंबाई एवं व्यास | - 500 एवं 10 मिमी. |
| | - 750 एवं 12.5 मिमी. |

जेट की प्रभावकारी लंबाई:

- 1 व 2 किग्रा. क्षमता के लिए - 2.0 मीटर
- 5 किग्रा. क्षमता के लिए - 4.0 मीटर
- 10 किग्रा. क्षमता के लिए - 6.0 मीटर
- कार्बन डाइ आक्साइड सिलिंडर का बर्स्टिंग प्रेशर - 45किग्रा./सेमी.²

डिस्चार्ज समय (85 % डिस्चार्ज)

- 1 व 2 किग्रा. क्षमता के लिए - 8.0 से 10.0 सेकेंड
 - 5 किग्रा. क्षमता के लिए - 15.0 सेकेंड
 - 10 किग्रा. क्षमता के लिए - 30.0 सेकेंड
- भरे हुए अग्निशामक यंत्र का वजन 10.5 किग्रा. होता है।

ड्राइ केमिकल पाउडर की जांच:-

1. जलाने पर पाउडर नहीं जलना चाहिए।
2. पाउडर को हाथ में लेकर ऊपर से छोड़ेंगे पाउडर सीधे नीचे नहीं आएगा हवा में मिल जाएगा।
3. ग्लास में पानी भर कर पाउडर डालेंगे पाउडर ऊपर तैरता रहेगा।
4. पाउडर अंगुली में लगा कर पानी में डुबोने पर, अंगुलियां गीली नहीं होंगी ।

अग्निशामक यंत्रों की स्थिति:-

1. अग्निशामक यंत्र को इसप्रकार से उचित स्थान पर लगाना चाहिए कि आग लगने के संभावित स्थान पर पहुंचने के लिए 15.0 मीटर से ज्यादा न चलना पड़े।
2. अग्निशामक यंत्र को जमीन के लेवल से 1.0 मीटर की ऊंचाई पर लगाना चाहिए।

अग्निशामक यंत्रों का संचालन:-

- क- अग्निशामक यंत्र को दिवाल में लगी ब्रैकेट से उतारें।
- ख- हवा की दिशा को चेक करें।
- ग- प्लंजर एसेंबली में लगे सेफ्टी क्लिप को बाहर निकालें।
- घ- डिस्चार्ज पाइप को एक हाथ में लें।
- ङ- प्लंजर एसेंबली के नॉब को हथेली से नीचे दबाएं।
- च- अग्निशामक यंत्र को आपरेट कर क्षैतिज से 45° पकड़ेंगे।
- छ- डिस्चार्ज पाइप की स्विपिंग करें।

अग्निशामक का रखरखाव और अनुरक्षण

अग्निशामक प्रत्येक तीन महीने में निरीक्षण के लिए खोला जाना चाहिए जिससे नॉजल जांच कहते हैं

और उसका अनुरक्षण निम्न प्रकार से करना चाहिए-

1. पाउडर का वजन अग्निशामक की क्षमता के अनुसार होना चाहिए।
2. कार्टिज में भरे गैस का वजन 10% से कम हो जाये तो कार्टिज बदल दें।
3. होज पाइप का नॉजिल, कैप में बने वेंट होल तथा प्लंजर की जांच करते हैं।
4. कंटेनर के अंदर एवं बाहर करोज़न की जांच करते हैं।

उपरोक्त जांच करने के बाद अग्निशामक के बॉडी पर नॉजल जांच की तिथि या Testing Date (T/D) अंकित कर देते हैं।

अग्निशामक प्रत्येक बारह महीनों या साल में निरीक्षण के लिए खोला जाना चाहिए और उसका अनुरक्षण निम्न प्रकार से करना चाहिए-

1. पाउडर का वजन अग्निशामक की क्षमता के अनुसार होना चाहिए।
2. पाउडर को धूप में किसी पेपर पर उड़ेल कर, भुरभुरा कर धूप दिखानी चाहिए।
3. कार्टिज में भरे गैस का वजन 10% से कम हो जाए तो कार्टिज बदल दें।
4. होज पाइप का नॉजिल, कैप में बने वेंट होल तथा प्लंजर की जांच करते हैं।
5. कंटेनर के अंदर एवं बाहर करोज़न की जांच करते हैं।
6. प्रत्येक तीन वर्षों पर आउटर कंटेनर का हाइड्रालिक टेस्ट 35 किग्रा./ सेमी.² पर 2.5 मिनट के लिए करते हैं।
7. प्रत्येक 5 वर्षों में एक बार डिस्चार्ज परफार्मेंस करते हैं।

उपरोक्त जांच करने के बाद अग्निशामक के बॉडी पर भरने की तिथि या रिफिलिंग डेट Refilling Date (R/D) अंकित कर देते हैं।

नोट:- ड्राइ केमिकल पाउडर अग्निशामक यंत्र की आयु 10 वर्ष होता है।

प्राधिकार- उपरोक्त विवरण भारतीय मानक संस्थान, नई दिल्ली द्वारा जारी IS 2190: 2010 एवं इंडियन इंस्टीट्यूट आफ फायर इंजीनियरिंग, नागपुर के अनुसार हैं।

अनुदेशक नागरिक सुरक्षा पर्यवेक्षक प्रशिक्षण केंद्र, गोरखपुर

◆ लेख ◆
दरकते मानवीय रिश्ते
सुनील कुमार

हम सब भारतीय हैं। हमारे भारत की अपनी एक अनूठी संस्कृति है। तभी तो हम रिश्तों में बंधकर समाज का निर्माण करते हैं। समय परिवर्तन के साथ-साथ लोगों की विचारधाराओं में भी परिवर्तन आना स्वाभाविक है। जीवन में अर्थ की बढ़ती प्रधानता और महत्ता ने आज स्वार्थ के पौधे को इतना विषाक्त कर दिया है कि व्यक्ति-दर-व्यक्ति स्वयं विषैला बन गया है। इन विषैली संस्कृति से प्रभावित लोगों ने रिश्ते की अहमियत की हत्या करनी शुरू कर दी है। शायद यही कारण है कि बदलते युग के साथ रिश्ते भी टूट रहे हैं। रिश्तों की गर्माहट में कमी आती जा रही है।

पहले एक परिवार होता था। परिवार नाम की संस्था इतनी विशाल होती थी कि उसमें परदादा से लेकर परपोते तक की हंसी एक ही छत के नीचे निवास करते थे और उनकी हंसी गूंजती थी। बिना बड़े-बूढ़े का घर शीर्ष-विहीन माना जाता था। परिवार में व्यक्ति की प्रतिष्ठा और उसका महत्व उसकी एकता एवं त्याग की भावना पर आंकी जाती थी। एक व्यक्ति का परिवार पर कितना दबदबा है यह उसके परिवार के परिजनों के लिए समर्पण की भावना पर निर्धारित होता था। तभी तो एक सदस्य की पीड़ा संपूर्ण परिवार की पीड़ा बन जाती थी। उसे पूरे परिवार द्वारा महसूस की जाती थी। उसी पीड़ा की चीख जब घर के दरवाजे से बाहर चली जाती थी तो एक घर का दर्द पूरे समाज का दर्द बन जाता था। एक भाई का बच्चा दूसरे भाइयों के बच्चों से कम महत्व नहीं रखता था। घर में बूढ़े-बुढ़ियों का अपना अलग ही अंदाज होता था। उनके खांसने भर से घर की दीवारों के भीतर अनुशासन एवं मर्यादा की लाठी बज उठती थी। लेकिन समय सदा एक-सा नहीं रहता और परिवर्तन की बयार ने बहुत कुछ बदल डाला है। भरा-पूरा परिवार आज इकाई में तब्दील हो चुका है। पति, पत्नी और बच्चा को मिलाकर तीन या चार जनों की इकाई को सुखी परिवार (न्यूक्लियर फैमिली) की संज्ञा दे दी गई है। जबकि पौराणिक सभ्यता और संस्कृति के अनुसार ऐसे परिवारों को सबसे असुरक्षित माना जाता है। कुछ घटनाओं ने इसे असुरक्षित सिद्ध भी कर दिया है।

व्यक्ति से व्यक्ति की निकटता ही रिश्ते के जन्म का कारण बनी, ऐसी मान्यता भी है। आदिकाल में स्त्री और पुरुषों का एक समूह हुआ करता था। उस समूह का मुखिया महिला रेल रश्मि-अंक 59

ही हुआ करती थी। वे अपनी इच्छा से अपने पुत्रों को भी अपना पति बनाने का हक रखती थी। कभी-कभी मां अपनी उस बेटी की हत्या तक करवा देती थी जो उसके पुरुष-पुत्र को छीनने का प्रयत्न करती थी। धीरे-धीरे समय के बदलाव और बदलते परिदृश्य में महिलाओं के महत्व को पुरुष वर्ग ने समझा और उन्हें संपत्ति के रूप में उपयोग करने लगा। महिलाओं को उनके हक से वंचित करके रख दिया गया। उन्हें अकेले हमेशा असुरक्षित ही बताया गया। तभी तो उन्हें हमेशा पुरुष के संरक्षण में रखने की सलाह दी गई।

धीरे-धीरे समाज में महिलाओं का महत्व पुरुषों द्वारा समझा जाने एवं महसूस किया जाने लगा। स्त्रियों को प्राप्त करने की ललक ने उन्हें युद्ध तक करने को बाध्य कर दिया। युद्ध में जीती गई उस खास नारी को पुरुषों ने अपनी पत्नी का नाम दिया और उनसे पैदा होने वाले बच्चों के बीच रिश्तों का नामकरण किया ताकि पूर्वजों की भांति वे स्त्री को सिर्फ स्त्री ही न समझ कर उसका उपयोग करें। रिश्ते के अनुरूप मां, बहन, पत्नी, पुत्री एवं पुत्रवधू सहित अन्य रूपों में स्त्री को सम्मान भी दिया गया। उसी ठोस आधार की देन है कि आज भी व्यक्ति की वासना रिश्तों का नाम सुनकर ही ठंडी पड़ जाती है।

विवाह को मर्यादित स्वरूप और पद्धति के रूप में लोक में प्रचलित करने का श्रेय उद्दालक ऋषि के पुत्र श्वेतकेतु को है। कहा जाता है कि श्वेतकेतु के पिता के समक्ष एक ब्राह्मण जब बलपूर्वक उनकी माता को ले जाने लगा और श्वेतकेतु ने पिता का विरोध किया तो उनके पिता इसे सनातन धर्म और परिपाटी की संज्ञा देकर रोकना चाहा। परंतु श्वेतकेतु को यह सहन नहीं हुआ और उन्होंने विवाह की मर्यादा को स्थापित करने की बात को ठान लिया। परंतु उस काल में बाहुबल की प्रधानता थी। विवाह के लिए शर्त और युद्ध तक हुआ करते थे। सीता जी के लिए धनुष यज्ञ और द्रौपदी के लिए मत्स्येन्द्र-भेदन यही प्रमाणित करता है कि उस काल की कन्यायें योद्धा का ही वरण करती थीं अन्यथा सुंदर कन्याओं को योद्धा बलपूर्वक अपहरण कर लिया करते थे। यही कारण है कि अपहरण के क्रम में होने वाले खून-खराबे के प्रतीक स्वरूप लाल रंग होने के कारण स्त्रियां मांग में लाल सिंदूर धारण करने लगीं जो आज तक कायम है। यह सिंदूर विजय के प्रतीक चिह्न के रूप में ही नहीं बल्कि सुहाग का भी प्रतीक

बन गया। सच पूछा जाए तो यह सिंदूर वैज्ञानिक तौर पर व्यक्ति को सम्मोहित करने की शक्ति भी रखता है।

विवाह जब समाज का संस्कार बना तो लोगों में अपने होने का ज्ञान और एक-दूसरे पर अधिकार जताने की ताकत भी बढ़ी और इसके बाद ही ठोस रिश्तों का जन्म हुआ। परिणामस्वरूप इकाई के रूप में परिवार बना और इसी परिवार को मजबूती प्रदान करने के लिए नये-नये संबंध भी बनाए गए। रिश्तों की बुनियाद के साथ ही वंश की बुनियाद पड़ी और फिर वंश की परंपरा और उसकी पवित्रता के संरक्षण हेतु विभिन्न प्रकार के सामाजिक बंधनों की बुनियादें रखी गईं।

स्त्री की महत्ता समाज में आज भी सर्वोपरि इसलिए मानी जाती है क्योंकि वंश वृद्धि की प्राकृतिक स्रोत स्त्रियां ही हैं। उन्हीं के त्याग, समर्पण से संतति पैदा होती है, पलती है और बढ़ती है। नौ महीने तक शिशुओं को अपने कोख में पालने का महानतम कष्ट झेलने के बाद भी वह दुबारा उसी कष्ट को झेलने में गर्व का अनुभव करती हैं। शायद यही कारण है कि मां का मान पृथ्वी से भी अधिक आंका गया है।

मां केवल जन्मदात्री ही नहीं करूणामयी एवं कल्याणी भी होती है। मां सर्वव्यापक सत्ता की प्रकृति है। यह अपने सीने में संचित जीवन-संजीवनी को पिलाकर पुरुष, परिवार, समाज व राष्ट्र को उत्पन्न विकट परिस्थितियों में संघर्ष करने तुल्य बनाती है। मां का संस्कार ही बच्चों को संस्कारवान बनाता है, क्योंकि वह परिवार की धुरी होती है। इसके अतिरिक्त मां परिवार की आंतरिक व वाह्य व्यवस्था में समन्वय का वातावरण भी पैदा करती है। इनके अभाव में परिवार निष्प्राण ही नहीं क्षत-विक्षत भी हो जाता है। तभी तो महर्षि वेदव्यास जी ने कहा है-

नास्ति मातृ समा छाया, नास्ति मातृ समा तातिः।

नास्ति मातृ समा त्राणं, नास्ति समां प्रियाः॥

किसी भी रिश्ते को जनने से लेकर पालन-पोषण तक में स्त्री ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश के समान अपनी भूमिका अदा करती है तभी तो नारी को परिवार एवं समाज में प्रथम पूजनीया, द्वितीय पूजनीया एवं तृतीय पूजनीया भी माना गया है। यही कारण है कि आज का अर्थलोलुप समाज भी नारी को सम्मान की दृष्टि से देखता है। पिता पुरुष का प्रतीक है तो मां सामाजिक सृष्टि की केंद्र-विंदु। हमारे धर्म में अकेली स्त्री या पुरुष को अपूर्ण माना गया है। इतना ही नहीं हमारी संस्कृति में किसी भी अविवाहित स्त्री, पुरुष या किसी विधवा-विधुर को किसी भी प्रकार का यज्ञ आदि करने की अनुमति भी नहीं प्रदान की है। इन परिस्थितियों का सामना तो स्वयं भगवान राम और तभी तो भगवान शिव का एक रूप

अर्द्धनारीश्वर का भी है।

विवाह संस्कार के उपरान्त एक स्त्री-पुरुष पति-पत्नी बनते हैं। दोनों आपस में शारीरिक एवं मानसिक समन्वय स्थापित करते हुए परिवार का विकास करते हैं। परिवार में एक संतति उत्पन्न होने से न जाने कितने रिश्तों का एक साथ जन्म होता है। इससे केवल एक ही परिवार में रिश्ते नहीं जुड़ते बल्कि समाज के कई परिवारों में नये-नये रिश्तों का जन्म होता है। रिश्तों की कई सीढ़ियां ऊपर बढ़ती हैं तो कई सीढ़ियां नीचे जाती हैं। कल तक केवल पति-पत्नी कहे जाने वाले लोग माता-पिता में तब्दील हो जाते हैं। माता-पिता कहे जाने वाले दादा-दादी, नाना-नानी और न जाने क्या-क्या बन जाते हैं। इसीप्रकार चाचा-चाची, मामा-मामी, बुआ-फुफा, मौसा-मौसी जैसे अनेकानेक रिश्तों का जन्म होता चला जाता है।

भय, स्वार्थ एवं अभाव की परिस्थिति के कारण सदियों पुरानी गरिमा और सामाजिक मूल्यों का हनन हुआ है। परिणामस्वरूप समाज टूट रहा है। संयुक्त परिवार विखंडित हो रहे हैं। व्यक्ति से व्यक्ति की आत्मिक दूरियां बढ़ती जा रही हैं। मानव मंगल ग्रह की ओर तो बढ़ रहे हैं परंतु मानवता जंगल की ओर बढ़ती जा रही है। मानव-मस्तिष्क हिमालय की ऊंची चोटी को छू रहा है और मानवीय संवेदनाएं हिंद महासागर की गहराइयों में डूबती चली जा रही है। शायद इन्हीं कारणों से मानव के अंदर भावना की भित्ति ढहती जा रही है, मानव संवेदनहीन होता जा रहा है और रक्तबीज जैसे संजीवनी पदार्थ से उत्पन्न रिश्ते परिस्थितियों से टकराकर टूट रहे हैं। तभी तो सर्वत्र रिश्तों के बदले हुए रूप नजर आ रहे हैं। लगता है रिश्ते अर्थ के गुलाम हो गए हैं।

आज संपूर्ण विश्व भारतीय परिवार प्रणाली और सांस्कृतिक परंपरा पर अपनी नजरें गड़ाए हुए है क्योंकि उन्हें वंश-प्रणाली में भावी विश्व का कल्याण दिख रहा है। तभी तो विदेशों में इसके ऊपर व्यापक रूप से शोध एवं सर्वेक्षण कराए जा रहे हैं। आज की परिस्थितियों में यह स्वयंसिद्ध हो चुका है कि रिश्ते के अनुरूप जन्मी भावनाएं हमें परिस्थितियों के अनुसार सिर्फ प्रेरित ही नहीं करती अपितु अपने कर्तव्यों के प्रति सचेत भी करती है। तभी तो आज के वैज्ञानिक युग में भी आम-धरणा बनी हुई है कि त्याग एवं भावना की भित्ति जितनी ही मजबूत होगी रिश्ते उतने ही ताकतवर होंगे क्योंकि रिश्ते जाति, धर्म व मजहब से मुक्त पवित्र बंधन है।

वरिष्ठ अनुवादक

कें. हिं. अनुभाग, मुकाधि कार्यालय

गोरखपुर

संपर्क: 9794840672

◆ लेख ◆

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी- स्वामी विवेकानंद

श्याम बाबू शर्मा

बात सन् 1893 की है, शिकागो में विश्व धर्म सम्मेलन चल रहा था। हिंदू धर्म पर पक्ष रखने के लिए स्वामी विवेकानंद भी उस सम्मेलन में गए हुए थे। 11 सितंबर 1893 का वह अविस्मरणीय दिन था जिस दिन स्वामीजी को अपना ऐतिहासिक व्याख्यान देना था। मंच पर लगे ब्लैक बोर्ड पर लिखा हुआ था- हिंदू धर्म-मुर्दा धर्म। उस समय कोई साधारण व्यक्ति होता तो इसे देखकर क्रोधित हो सकता था, पर स्वामीजी ने उसे देखकर भी अनदेखा कर दिया और शांतमुद्रा में बोलने के लिए खड़े हुए। उन्होंने सबसे पहले जिन शब्दों के साथ श्रोताओं को संबोधित किया, वह था- अमरीकावासी बहिनों और भाइयों! स्वामीजी के इन जादुई शब्दों ने श्रोताओं को इतना मोहित कर दिया कि पूरी सभा ने करतल ध्वनियों से उनका स्वागत किया। इस हर्ष का कारण था उनका स्त्रियों को पहला सम्मानजनक स्थान देना जो कि पाश्चात्य संस्कृति के बिलकुल विपरीत था। स्वामीजी ने समस्त वसुधा को अपना कुटुंब मानकर उन सबका स्वागत किया था। भारतीय संस्कृति में निहित शिष्टाचार का यह तरीका पूर्व के वक्ताओं में से किसी को न सूझा था। उनकी इसी बात का अच्छा प्रभाव पड़ा और श्रोता मंत्रमुग्ध होकर उनको सुनते रहे। वक्तव्य के लिए उनको दिया गया निर्धारित 5 मिनट का समय न जाने कब बीत गया पता ही न चला। सम्मेलन के अध्यक्ष कार्डिनल गिबंस भी उनके वक्तव्य से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने उनसे आगे और बोलने का अनुरोध किया। स्वामीजी लगभग 20 मिनट से भी अधिक देर तक बोलते रहे और लोग उन्हें सुनते रहे। इस वक्तव्य के बाद स्वामीजी की धूम सारे अमेरिका में मच गई। देखते ही देखते हजारों लोग उनके शिष्य बन गए। और तो और सम्मेलन में जब कभी शोर मचता तो यह कहकर श्रोताओं को शांत कराया जाता कि यदि आप चुप रहेंगे तो स्वामीजी का व्याख्यान सुनने का अवसर दिया जाएगा। इतना सुनते ही सारे श्रोता शांत हो कर बैठ जाते। अपने व्याख्यान से स्वामीजी ने यह सिद्ध कर दिया कि भारतीय धर्म संस्कृति किसी की अवमानना या निंदा नहीं करती रेल रश्मि-अंक 59

अपितु सभी का समानरूप से सम्मान करती है। इस तरह स्वामी विवेकानंद जी ने सात समंदर पार भारतीय संस्कृति की ध्वजा फहराई।

भारतीय संस्कृति को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने वाले महापुरुष स्वामी विवेकानंद जी का जन्म 12 जनवरी 1863 को सूर्योदय से 6 मिनट पूर्व 6 बजकर 33 मिनट 33 सेकेंड पर हुआ। स्वामीजी का बचपन का नाम नरेंद्रनाथ था। बचपन से ही उनकी बुद्धि काफी तेज थी। वे बहुत नटखट थे। भय, फटकार या धमकी का असर उन पर नहीं होता था। इसके लिए उनकी माता भुवनेश्वरी देवी ने अद्भुत उपाय सोच रखा था। जब उनका (नरेंद्र का) अशिष्ट आचरण बढ़ जाता तो, वो शिव-शिव कह कर उनके ऊपर जल डाल देतीं। इससे वे एकदम शांत हो जाते। मां के मुंह से रामायण, महाभारत के किस्से सुनना उन्हें बहुत अच्छा लगता था। उन्हें घोड़ा-गाड़ी पर घूमना भी बहुत पसंद था। उनसे जब भी कोई पूछता कि बड़े हो कर क्या बनोगे तो वे बड़े मासूमियत से कहते, कोचवान बनूंगा। वे बचपन से ही सरल हृदय थे।

पाश्चात्य संस्कृति में विश्वास रखने वाले उनके पिता विश्वनाथ दत्त अपने पुत्र को अंग्रेजी शिक्षा देकर पाश्चात्य सभ्यता में रंगना चाहते थे। स्वामी विवेकानंद अपनी माता की शिक्षा-दीक्षा से काफी प्रेरित थे। उनके चरित्र में जो भी महानता हमें दिखाई देती है, वो उनकी सुशिक्षित एवं विचारशील माता की शिक्षा का ही परिणाम है। बचपन से ही परमात्मा को पाने की चाह और डेकार्ट के अहंवाद, डार्विन के विकासवाद तथा स्पेंसर के अद्वैतवाद ने इनको सत्य की खोज के लिए व्याकुल कर दिया। अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे ब्रह्मसमाज में गये, किंतु वहां भी इनको शांति नहीं मिली। तत्पश्चात रामकृष्ण परमहंस की तारीफ सुनकर और उनके विचारों से प्रभावित होकर इन्होंने उन्हें गुरु मान लिया। परमहंस की कृपा से उन्हें आत्म-साक्षात्कार हुआ। स्वामीजी केवल संत ही नहीं देशभक्त, वक्ता, विचारक, लेखक एवं मानव प्रेमी थे। एकबार 1899 में कलकत्ता में भीषण

प्लेग फैला। उस समय वे स्वयं भी अस्वस्थ चल रहे थे, इसके बावजूद उन्होंने तन-मन-धन से इस महामारी से ग्रसित लोगों की सेवा-सहायता की और इंसानियत की एक मिसाल दी।

स्वामी विवेकानंद प्रारंभ से ही एक मेधावी छात्र थे और सभी उनके व्यक्तित्व और वाणी से प्रभावित रहते थे। जब वो साथी छात्रों को कुछ बताते तो वे सब मंत्रमुग्ध हो उन्हें सुनते। एक बार की घटना है, इंटरवल के दौरान वे कक्षा में अपने कुछ मित्रों को कहानी सुना रहे थे, सभी उनकी बातें सुनने में इतने मग्न थे कि उन्हें पता ही नहीं चला कि कब इंटरवल खत्म हो गया और कब मास्टर जी कक्षा में आए और पढ़ाना भी शुरू कर दिया। मास्टर जी को पढ़ाने के दौरान कक्षा में कुछ फुसफुसाहट सुनाई दी। ‘कौन बात कर रहा है’ -उन्होंने तेज आवाज में पूछा।

सभी ने स्वामीजी और उनके साथ बैठे छात्रों की तरफ इशारा कर दिया। मास्टरजी क्रोधित हो गए, उन्होंने स्वामीजी सहित उन सभी छात्रों को बुलाया और पाठ से संबंधित एक प्रश्न पूछा। स्वामीजी का कोई भी मित्र सटीक उत्तर न दे सका, अंत में मास्टरजी ने स्वामीजी से भी वही प्रश्न किया। पर स्वामीजी तो मानो सब कुछ पहले से ही जानते हों, उन्होंने मास्टरजी के प्रश्न का उत्तर आसानी से दे दिया। यह देखकर मास्टरजी को यकीन हो गया कि स्वामीजी पाठ पर ध्यान दे रहे थे और बाकी छात्र बातचीत में लगे हुए थे। फिर क्या था उन्होंने स्वामीजी को छोड़कर बाकी सभी छात्रों को बेंच पर खड़े होने की सजा दे दी। सभी छात्र एक-एक कर बेंच पर खड़े होने लगे। स्वामीजी ने भी यही किया। तब मास्टर जी बोले- ‘नरेंद्र तुम बैठ जाओ’।

‘नहीं सर, मुझे भी खड़ा होना होगा क्योंकि वो मैं ही था जो इन छात्रों से बात कर रहा था’ -स्वामीजी ने कहा। उनकी माताजी ने बचपन से ही उनको सदा सच बोलने की शिक्षा दी थी। मास्टरजी उनके इस सच बोलने से काफी प्रसन्न हुए। उन्होंने अन्य छात्रों को भी चेतावनी देते हुए माफ कर दिया।

स्वामी विवेकानंद शुरू से ही असाधारण दृढ़ता, निःसंकोची एवं आत्मनिर्भरता वाले व्यक्ति थे। एक बार मेट्रोपोलिटन इंस्टीट्यूशन में, जब वे वहां पढ़ते थे, इन्हें पता चला कि उस इंस्टीट्यूशन में पढ़ाने वाले एक पुराने शिक्षक सेवा-अवकाश ग्रहण कर रहे हैं। इसके लिए रेल रश्मि-अंक 59

उनके कुछ उत्साही मित्रों ने विदाई-अभिनंदन करने की तैयारी की है। आगामी वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह में उनका विदाई-अभिनंदन करना तय किया गया। इस समारोह के लिए देश के सुविख्यात वक्ता श्री सुरेंद्रनाथ बनर्जी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। सभी विद्यार्थी सुविख्यात वक्ता श्री सुरेंद्रनाथ बनर्जी के सामने खड़े होकर भाषण देने में संकोच कर रहे थे। इस पर सभी मित्रों ने विवेकानंद से अनुरोध किया। चूंकि विवेकानंद असाधारण दृढ़ता व निःसंकोची स्वभाव के स्वामी थे। मित्रों के अनुरोध पर वे भाषण देने के लिए तैयार हो गये। मंच पर खड़े होकर उन्होंने आधे घंटे तक अपने स्वाभाविक सुमधुर कंठ से शिक्षक महोदय के व्यक्तित्व का गुणगान किया। उनके भाषण से सुरेंद्रनाथ बनर्जी जी काफी प्रभावित हुए। उन्होंने उनके भाषण की अत्यधिक प्रशंसा की। किशोर बालक के लिए सुविख्यात वक्ता श्री सुरेंद्रनाथजी के सामने भाषण देना उनकी असाधारण दृढ़ता को परिलक्षित करता है। स्वामी विवेकानंदजी का कहना है कि ‘विश्व में अधिकांश लोग सिर्फ इसलिए असफल हो जाते हैं, क्योंकि उनमें समय पर साहस का संचार नहीं हो पाता और वे भयभीत हो उठते हैं।’

इसीतरह स्वामीजी का एक और आदर्श वाक्य है- ‘यदि तुम कभी किसी चीज से भयभीत हो तो उससे भागो मत, पलटो और सामना करो।’ इस संबंध में एक रोचक प्रसंग है। विवेकानंद जी को, हालांकि उन्हें किसी से भय नहीं लगता था, परंतु बचपन में बंदरों से बहुत डर लगता था। एक बार बनारस में वे दुर्गाजी के मंदिर से निकल रहे थे कि तभी वहां मौजूद बहुत सारे बंदरों ने उन्हें घेर लिया। वे सब उनके नजदीक आने लगे और उन्हें डराने लगे। वे भयभीत हो गए और खुद को बचाने के लिए भागने लगे, पर बंदर तो मानो उनके पीछे ही पड़ गए। वे उन्हें दौड़ाने लगे। पास ही खड़े एक वृद्ध सन्यासी, जो ये सब देख रहे थे, ने विवेकानंद को रोका और बोले- ‘रुको। सामना करो’। सन्यासी की बातों ने मानो उन पर जादू-सा असर किया हो, वे तुरंत रुके, पलटते और बंदरों की ओर बढ़ने लगे। उनके ऐसा करते ही सभी बंदर भाग गए। इस घटना से उन्हें एक गंभीर सीख मिली कि कभी भी समस्या से डरना नहीं चाहिए बल्कि उसका डटकर सामना करना चाहिए। इस घटना के कई साल बाद उन्होंने इस आदर्श वाक्य ‘यदि तुम

कभी किसी चीज से भयभीत हो तो उससे भागो मत, पलटो और सामना करो' का प्रतिपादन किया। उनके ऐसे ही आदर्श वाक्यों ने युवाओं को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। स्वामी विवेकानंद को युवाओं का आदर्श पुरुष भी माना जाता है और इसीलिए प्रत्येक वर्ष उनके जन्मदिन (12 जनवरी) को 'राष्ट्रीय युवा दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

स्वामी विवेकानंद कोई भी कार्य करते थे, एकाग्रचित्त होकर करते थे। उनका मानना था कि किसी भी कार्य को करते समय केवल उसी पर ध्यान लगाना चाहिए। एकबार की बात है, स्वामी विवेकानंद अमेरिका में भ्रमण कर रहे थे। एक जगह से गुजरते हुए उन्होंने पुल पर खड़े कुछ लड़कों को नदी में तैर रहे अंडे के छिलकों पर बंदूक से निशाना लगाते देखा। किसी भी लड़के का निशाना सही नहीं लग रहा था। तब उन्होंने एक लड़के से खुद निशाना लगाने के लिए बंदूक ली और पहला निशाना लगाया। वो बिलकुल सही लगा। इसके बाद उन्होंने इसीतरह कुल 12 निशाने लगाए और वे सभी बिलकुल सटीक लगे। ये देखकर लड़के दंग रह गए और उन्होंने उनसे पूछा- 'आपने ये कैसे कर लिया।' स्वामीजी बोले- 'ये तुम भी कर सकते हो। बस अपना पूरा ध्यान उसी काम में लगाओ जो तुम उस समय कर रहे हो। अगर तुम निशाना लगा रहे हो तो तुम्हारा पूरा ध्यान सिर्फ अपने लक्ष्य पर होना चाहिए। तब तुम कभी नहीं चूकोगे। इसीप्रकार अगर तुम अपना पाठ याद कर रहे हो तो सिर्फ पाठ के बारे में सोचो। मेरे देश हिंदुस्तान में यह सब करना सिखाया जाता है।'

विवेकानंद ने न सिर्फ भारतीय संस्कृति और अध्यात्म की बात की है बल्कि उनका चिंतन भारत की आर्थिक-सामाजिक समस्याओं पर भी रहा है। इसकी बानगी वर्ष 1894 में उस समय देखने को मिलती है जब उन्होंने मैसूर के महाराजा को लिखे एक पत्र में आम जनता की गरीबी को सभी समस्याओं का मूल बताया। उन्होंने इसे दूर करने के लिए उपाय बताते हुए कहा कि गरीब जनता को शिक्षित करना और उनमें आत्मविश्वास पैदा करना सरकार और शिक्षितों का ही दायित्व है। उन्होंने गरीब और पीड़ित जनता के उत्थान को अहम मानते हुए विज्ञान और तकनीक के इस्तेमाल पर बल

दिया। उनका मानना है कि आम लोगों के विकास में ही देश और विश्व का विकास अंतर्निहित है। उनके बताए मार्ग पर चलकर हम भारत में गरीबी और अशिक्षा को दूर कर सकते हैं।

विवेकानंदजी का चरित्रिक गुण भी अद्वितीय था। इस विषय में एक रोचक प्रसंग है कि एक बार जब स्वामी विवेकानंद अमेरिका गए थे, तो वहां की एक महिला ने उनसे शादी करने की इच्छा जताई। जब स्वामीजी ने उस महिला से पूछा कि आप ऐसा क्यों चाहती हैं? उस महिला ने कहा कि वो उनकी बुद्धि पर बहुत मोहित है और उसे उनके समान ही बुद्धिमान बच्चे की कामना है। इसीलिए वो उनसे शादी करना चाहती है ताकि उसे भी उनके जैसा बुद्धिमान पुत्र प्राप्त हो सके। वे उस महिला की इच्छा जान गए तब उन्होंने उस महिला से शालीनता से कहा कि चूंकि वो सिर्फ उनकी बुद्धि पर मोहित हैं इसलिए कोई समस्या नहीं है। उन्होंने कहा- 'मैडम, मैं आपकी इच्छा को समझ गया हूं। शादी करना, इस दुनिया में एक बच्चा लाना और फिर यह जानना कि वो बुद्धिमान है कि नहीं। इसमें बहुत समय लगेगा। इसके अलावा इसमें कोई गारंटी भी नहीं है। इसके बजाय, मैं आपकी इच्छा को तुरंत पूरा करने के लिए एक सटीक सुझाव दे सकता हूं। क्यों न, आप मुझे अपने बच्चे के रूप में ही स्वीकार कर लें। इस प्रकार आप मेरी मां बन जाएंगी और मेरे जैसा बुद्धिमान बच्चा पाने की आपकी इच्छा भी पूर्ण हो जाएगी। यह विवेकानंद जी के चरित्रिक सद्गुण एवं तत्काल समस्या का समाधान निकालने की क्षमता को दर्शाता है।

स्वामी विवेकानंद जी के इसी व्यक्तित्व के कारण आज विश्व उनका अनुयायी है। स्वामीजी की 150वें जयंती वर्ष में हमें यह प्रण लेना होगा कि हम उनके दिखाये मार्ग का अनुसरण करके स्वयं अपना, अपने समाज व अपने देश के कल्याण की ओर अग्रसर हों। तभी हम और हमारा देश सही मायने में उनका सच्चा अनुयायी होगा।

कनिष्ठ अनुवादक
केंद्रीय हिंदी अनुभाग
मुकाधि कार्यालय
गोरखपुर

कभी-कभी मौन रह जाना सबसे कटु आलोचना है।

कंप्यूटर का हिंदी भाषा और नागरी लिपि पर प्रभाव संजीव कुमार

वर्तमान युग कंप्यूटर का युग है। यह मशीन तो अब हमारी जीवनचर्या का एक अविभाज्य और अनिवार्य अंग बनती जा रही है। स्कूलों के विद्यार्थी इससे अंकगणित, बीजगणित, ज्यामिति और त्रिकोणमिति की सारी समस्याएं हल कर लेते हैं। दुकानदार अपना हिसाब-किताब इसी की मेमोरी में या फ्लॉपी नाम की चौकोर-सी डिबिया में वर्षों सुरक्षित रख सकते हैं और जब चाहे किसी का लेन-देन बटन दबाते ही जान जाते हैं। डाक्टर अपने मरीजों का, वकील अपने मुक्किलों और वादों का सारा विवरण भरते जाते हैं और आवश्यकता पड़ने पर आदेश द्वारा मशीन के पर्दे पर देख लेते हैं। इंजीनियर, कलाकार, वैज्ञानिक, ज्योतिषी सब अपने-अपने काम का गठन, वितरण और फिर रूपायण कर लेते हैं। पुलिस अपराधों और अपराधियों का पूरा वृत्त इसी में जोड़ते जाते हैं। सरकारी और निजी कार्यालयों, विद्यालयों, विश्वविद्यालयों, शोध-संस्थानों, बैंकों, बीमा कंपनियों और निगमों ने कंप्यूटर को ही सारा काम-काज समेटकर अपने नये-पुराने और होने वाले कार्यों के संचालन का माध्यम बना लिया है। यह जटिल-से-जटिल प्रक्रिया को नियंत्रित करता है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि इस अद्भुत मशीन का अधिक-से-अधिक लाभ अंग्रेजी भाषा को हुआ है। इसका मुख्य कारण यह है कि कंप्यूटर का जन्म और विकास ही अंग्रेजी-भाषी देशों में होकर अंग्रेजी माध्यम से अन्य देशों में व्यापक विस्तार हुआ। अब भी इसकी तकनीकी शब्दावली अंग्रेजी में ही है। भारत में जब इसका प्रवेश हुआ तो बिजली के बिल, जलकर और गृहकर के नोटिस और बहुत-सी सरकारी सूचनाएं अंग्रेजी में आने लगीं। हिंदी की प्रगति रुक गई। भारत सरकार के गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग को होश आया और उसने भारतीय वैज्ञानिकों का ध्यान इस समस्या की ओर आकृष्ट किया। फलस्वरूप बिड़ला प्रौद्योगिक तथा विज्ञान संस्थान पिलानी (राजस्थान) और डी.सी.एस. प्रोडक्ट्स ने पहला द्विभाषीय साफ्टवेयर 'सिद्धार्थ' नाम से निर्मित किया, इसमें अंग्रेजी और हिंदी के अतिरिक्त तमिल में

की-बोर्ड (कुंजी-पटल) भी था। बाद में आई.आई.टी., कानपुर ने हिंदी कंप्यूटर निकाला। सी.एम. हैदराबाद से 'लिपि' नाम का त्रैभाषिक कंप्यूटर मार्केट में आया। अब तो कई प्रकार के की-बोर्ड बन गए हैं।

प्रायः ये की-बोर्ड द्विभाषी हैं। इससे सरकारी कार्यालयों और सार्वजनिक प्रतिष्ठानों को बहुत लाभ हुआ है क्योंकि हिंदी के साथ अंग्रेजी भी तो हमारी राजभाषा बनी बैठी है। कार्यालयों में फिर भी बहुत-सा काम अंग्रेजी में होता रहा। अब इन आविष्कारों से दोनों भाषाओं में एकसाथ काम कर लेने में हमारे बाबू लोगों और टंककों को सुविधा हो गई है। इससे पहले की अपेक्षा हिंदी का व्यवहार अधिक होने लगा है।

मुद्रण एवं प्रकाशन के क्षेत्र में एक क्रांति-सी आ गई है। मुद्रण पहले हाथ से कंपोजिंग कराकर कराते थे। उससे कई टाइप सामग्री समय पर उपलब्ध नहीं हो पाते थे। छपाई एक साथ नहीं होती थी। टाइपों के केस बनवाने पड़ते थे और उनमें कई खाने रहते थे। कंपोजिटर की कार्य गति मंद थी। हिंदी धीरे-धीरे मशीन की दासी होती जा रही थी। सुधार की मांग होती थी। मनुष्य को मशीन का दास तो नहीं होना चाहिए। कंप्यूटर में टाइप की आवश्यकता ही नहीं। आप टाइपराइटर की तरह की-बोर्ड का इस्तेमाल कीजिए, कंप्यूटर के स्क्रीन पर सब आ जाता है। पेनड्राइव में भरा जाता है। जब चाहे और जितना चाहें प्रिंटर पर फिर फोटो प्रेस पर छाप लीजिए।

हिंदी का कंप्यूटर की-बोर्ड बहुत विस्तृत है। इसमें नये-पुराने सब के अक्षर प्रतीक होते हैं, विशेषकर संयुक्त अक्षरों की तो कोई कमी नहीं है। क्त-क्त, खट्टा-खटा, स्पष्ट-स्पष्ट, धू-धू, अड., मञ्च-मंच सब है। संयुक्त अक्षरों में जो तथाकथित सुधार किए गए थे, उनमें विशेषतः संयुक्त अक्षरों की क्षति-विक्षति हुई थी।, संस्कृत के विद्यार्थी और विद्वान एवं हिंदी के पुराने और बड़े-बड़े लेखक विक्षुब्ध थे। कंप्यूटर ने सबको संतुष्ट कर दिया।

कंप्यूटर ने सिद्ध कर दिया कि भारत की ही नहीं

विदेश की सब लिपियों में और विशेषतः वर्णों के उच्चारण और संगठन में पूर्ण वैज्ञानिकता है।

कंप्यूटर के इंजीनियरों का मतव्य है कि देवनागरी वर्णमाला का जो क्रम है, वह केवल वैज्ञानिक नहीं है, उससे कंप्यूटर के प्रोग्राम आसानी से सिद्ध होते हैं। स्थान और प्रयत्न की दृष्टि से जो वैज्ञानिकता और सहजता इस वर्णमाला में है, उससे कंप्यूटर को बहुत प्रेरणाएं मिलती है।

सुंदर प्रकाशन से हिंदी पुस्तकों की विक्री बढ़ी है और हिंदी साहित्य और भाषा का बहुत प्रचार हुआ है। इंजीनियरिंग कालेज, पवई, मुंबई में कंप्यूटर पर अनुवाद के बारे में कई प्रयोग किए गए हैं। वहां के भाषा

इंजीनियरों का कहना है कि उन्होंने अंग्रेजी से हिंदी में कई निबंधों और पुस्तकों के अनुवाद किए, पर जो सुविधा प्राप्त होती थी हिंदी से, कन्नड़ या मलयालम में या इन दो भाषाओं में हिंदी में, वह आश्चर्यजनक थी।

कंप्यूटर के इसी दुभाषिया और अनुवाद की प्रक्रिया से एकभाषी-द्विभाषी सब तरह के शब्दकोश तैयार होने लगे जिनके संपादन और मुद्रण पर बहुत कम समय लगता है और काम भी सुंदर और शुद्ध होता है।

कनिष्ठ अनुवादक
रेलवे प्रेस, गोरखपुर

◆ लघु कथा ◆
अमित कुमार

आत्म संतुष्टि

थक चुकी थी वो इतने वर्षों से सब कुछ सहते-सहते। माता-पिता समाज तथा बच्चों की वजह से वो अरविंद से अलग भी नहीं हो सकती थी। रोज नये बहाने, नई कहानी। सुन-सुन कर अब उनकी आदी हो चुकी थी। कभी किसी लड़की के साथ कभी किसी महिला के साथ।

‘आज करवाचौथ है।’ -उसने कहा
आफिस जाते समय वह अरविंद से पुनः बोली-
‘आज जल्दी आ जाना, पूजा करनी है।’
लेकिन हुआ वही जो होता आ रहा था। पता नहीं क्या सोच कर अरविंद बोला- ‘सॉरी, दरअसल...’
‘कोई बात नहीं चलो खा लें।’
उसने खाना लगाया। सोने से पहले कपड़े बदलते समय शीशे में खुद देखते हुए वो बोली- ‘पता है अरविंद अब तुम कुछ भी करो मुझे तुम्हारी कोई भी बात बुरी नहीं लगती। अरविंद उसे बांहों में भरते हुए बोला- ‘क्यों डार्लिंग क्या इतना कमीना हो गया हूं मैं।’ एक संतोष भरी सांस लेते हुए वो सोची- ‘नहीं तुमसे ज्यादा कमीनी हो गई हूं मैं।’

ऊंचाइयां

‘तुम कितना सुंदर लिखती हो... कितने अच्छे हैं तुम्हारे विचार, कैसे इतना अलग सोच लेती हो...?’ अमर ने मधु के बालों को सहलाते हुए कहा था।
‘सब आपसे प्रेम की अनुभूति है।’- मधु बोली।
‘नहीं, वास्तव में एक दिन तुम जरूर बहुत ऊंचाइयों पर जाओगी।’- अपने और करीब लाते हुए अमर बोला।
‘पर मुझे तो बस आपके दिल में रहना है।’- वो कान में बोली।

कार का दरवाजा खोलकर बोरे को पहाड़ियों से नीचे धकेलने के बाद अमर ने नीचे झांक कर देखा वो बहुत ऊंचाइयों पर पहुंच चुकी थी। उसने गाड़ी आगे बढ़ा दी। नैनीताल का मौसम वास्तव में कितना सुहावना है कभी कल्पना और बच्चों को घुमाने लाऊंगा।

प्रभारी (हिंदी)
भारतीय खाद्य निगम
गोरखपुर
संपर्क: 9532659184

तेरे माथे पे आंचल बहुत ही खूब है लेकिन,
तू इस आंचल से इक परचम बना लेती तो अच्छा था

-मजाज लखनवी

प्रेमिका से बातचीत के अपने पुराने अर्थ की कैद से मुक्त होकर ग़ज़ल अब नए-नए अर्थों, सरोकारों और संवेदनाओं की तलाश में अपने समय के साथ बहुत आगे आ चुकी है। इसने अपने को पूरी तरह खोलकर न सिर्फ अपनी जमीनी उड़ान का विस्तार किया है; वरन समय-समाज और मनुष्य से नये सिरों से जुड़कर, अपने को नए ढंग से परिभाषित भी कर लिया है। इसमें अब हर दिन नए आयाम जुड़ रहे हैं, नए दरिचे खुल रहे हैं। इसके काल और कलाबोध एवं समय संधान में एक बला की पुख्तगी का भी समावेश हो चुका है। उसकी दृष्टि एवं चिंतन का यही नयापन, उसके तेवर का नया ठाठ, समकालीन काव्य परिदृश्य में उसके आकर्षण एवं लोकप्रियता का आज प्रमुख कारण है। परंपरा से जुड़े रहते हुए भी इसने सर्वथा एक नई परंपरा की तलाश तक कर डाली है। यह अगर प्रेमिका से बतियाती है तो प्रेम के दुश्मनों से उन्हीं की भाषा में अब संवाद भी करती है। इसके नए संस्कार और सरोकार इसे और मुखर-निडर बनाते हैं। जीवन के शुक्ल एवं कृष्ण पक्ष अपने समाहित किए हुए, ये अब वहां से गुजर रही है जहां से पहले कभी नहीं गुजरी थी। भाषा और शिल्प के स्तर पर भी ग़ज़ल में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। मगर सच ये है कि ग़ज़ल अपने-आप में एक अलग भाषा भी है। ग़ज़ल की भाषा ही उसे या तो ग़ज़ल बनाती है या फिर नहीं बनाती। भाषा की कालाबाजारी ग़ज़ल में पकड़ में आ जाती है। क्योंकि अगर कोई रचना ग़ज़ल है तो अपनी भाषा में आएगी। ग़ज़ल की ऐसी ही भाषा में उतरी हैं, अखिलेश तिवारी की 70 के ऊपर ग़ज़लें, उनकी सद्यः प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह 'आसमां होने को था' में। हिंदी में अपने लबोलहजा के वे अकेले शाइर हैं। हिंदी में लिखने, छपने के बावजूद वे उर्दू के लगते हैं। कोई माने या न माने हिंदी-उर्दू जैसे, दो भाषाएं हैं, वैसी ही दोनों ही भाषाओं में लिखी-पढ़ी जाने वाली ग़ज़लों के संस्कार और सरोकार भी अलग हैं। लगभग दो दशकों से हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशित हो रहे अखिलेश तिवारी की ग़ज़लें, जो इस संकलन में संकलित हैं, उनमें

आई भाषिक तमीज और तरकीबसाजी उर्दू के अधिक निकट है। और यह बहुत मौलिक रूप से उनमें है। समकालीन हिंदी कविता की वैचारिकता, संवेदनशीलता की तुलना में, उन पर उर्दू में अब स्थाईभाव की तरह घर बना चुकी जदीदीयत का ज्यादा प्रभाव दिखता है। हिंदी ग़ज़ल में यह सर्वथा एक नई चेतनात्मक संवेदना है। एक नई भाषिक कलात्मकता है जो वे लेकर अपनी ग़ज़लों में नमूदार हुए हैं। समकालीन हिंदी ग़ज़ल की केंद्रीय चिंता एवं अंतर्वस्तु की बजाए उन्होंने बड़ी शिद्दत से अपने आप को अपने तजुर्बों के मारफत तलाश किया है।

'मुलाहिजा हो मेरी भी उड़ान पिंजरे में
अता हुए हैं मुझे दो जहान पिंजरे'

या यह शेर देखें-

'खिज़ां वो मेरे लिए यूं बहार करता था
मैं अपने ज़ख्म गुलों में शुमार करता था'

पर बड़ी बात ये है कि वो इस तलाश में अपने जैसों की भी तलाश करते हैं और वो भी, जो जिंदगी को बेहतर से बेहतर की ओर ले जाता है, या ले जाएगा।

'अमीरे शहर ने इसको भी जुर्म ठहराया
गरीब लफ़्जों को मैं बाबकार करता था
उसे न रोक सकी कशितियों की मजबूरी
वो हौसलों से ही दरिया को पार करता था।'

स्थूलता की बजाय, सूक्ष्मता को वे तरजीह देते हैं और मुखरता की जगह वे ईशारों में अपनी बात कह जाते हैं। ऐसे दिलफरेब ईशारे उनके अशआर में जा-ब जा मिलते हैं। ये ईशारे करना बड़ी बात है। पर वे ईशारेवाज नहीं हैं। उनके ईशारों में, शाइस्तगी और ईमानदारी है। और भाषा में तहदारी। लेकिन, समकालीन हिंदी कविता का संवेदनात्मक सरोकार उनमें अभी बहुत प्रगाढ़ होकर नहीं आ पाया है। जैसे-जैसे अपने समाज के आंदोलित मन और उसके कठिन समय से, वे मुठभेड़ करेंगे उनमें यह रंगसुखन जरूर आएगा। इस तरफ की यात्रा पर वे अपने अशआर में आते हुए दिखते भी हैं अक्सर। वे अपनी ग़ज़ल के मक्ते में इसे खुद कुबूल करते हैं-

'अखिलेश लिए फिरती है बंजारा मिज़ाजी

जारी है सफर और सफर देख रहा हूँ'

एक अजीब तरह की साफ-साफ समझ में नहीं आ पाने वाली एक ख़ालिश सी कोई बात उनमें कहीं फंसी हुई है जो अक्सर ग़ज़लों में बसूरत शेर नमूदार होती रहती है-

'कहां सब को मयस्सर है कभी मुश्किल से मिलता है मज़ा तंहाई का हमको भरी महफिल में मिलता है'

या यह शेर-

हुई है लेके मुझे बदगुमानियां क्या-क्या

सुना रहे हैं वो सबको कहानियां क्या-क्या'

और भी कई अशआर हैं जिनमें यह कैफियत बसी हुई है। किताब में संकलित लगभग तमाम ग़ज़लों में ऐसे शेर हैं जो पाठकों को अपनी गिरफ्त ले सकते हैं। ग़ज़ल की भाषा में कही गई इन ग़ज़लों से गुजरना एक नया अनुभव है। भाषा का एक स्तर पहली से आखिरी ग़ज़ल तक, इतना पुरकशिश और साफ-सफ़ाक है कि इसमें डूबते बनता है। भाषा में अर्थों की तहदारी भी मोहती है और उसकी तेजरफ्तारी और खुशगुफ्तारी भी। नितांत अपना एक अलग आसमां इन ग़ज़लों में तलाश और तराश लिया है। ग़ज़लों में पैवस्त उनके एहसासात, जज़्बात, उनकी फिक्र उनकी जेहनी कैफियत नितांत

उनकी अपनी है। वे सरापा अपने अद्भुत अपनेपन में जो डूबे-डूबे से दिखते हैं, यही उन्हें अलग से रेखांकित कर जाती है। अपने चारों ओर की दुनिया से वे एकदम से बेनियाज़ हैं, ऐसा भी नहीं है। पर हां, वे उस दुनिया से मानूस भी कम हैं। खुद में बहुत डूबे रहने से ही ऐसा हुआ है। पर यह तो शाइर का विशेषाधिकार है कि वह अपनी रचनाओं के लिए कच्चा माल जहां से उसकी मर्जी उठाए। उनमें इल्म और मुशहिदे की कमी नहीं। एक दिन वे खुद शनासी और खुद तलाशी-ओ-तराशी की हदों को तोड़ कर, बेखुदी में सही, जमाने को पुकारते हुए जरूर अपनी अगली किताब में दिखेंगे। ऐसी उम्मीद 'आसमां होने को था' की जमीन ही मुहैया करा देती है।

आसमां होने को था: ग़ज़ल संग्रह

ग़ज़लकार: अखिलेश तिवारी

लोकायत प्रकाशन, जयपुर

प्रथम संस्करण: 2012

मूल्य: साठ रुपये मात्र

कार्यालय अधीक्षक

मुवाप्र/विधि, दक्षिण पूर्व रेलवे

3, कोयलाघाट स्ट्रीट, कोलकाता

संपर्क: 09433203786

आजी दखिन-दूयार खोला-

दिव हृदय-दोलाय दोला,

ऐश वन-मल्लिका-कुंजे

ऐशो हे, ऐशो हे, ऐशो हे!

यदु मधुर मदिर ऐशो, पागल हाओयार देशे,

तोमार उतला उत्तरीय तुमि आकाशे उड़ाये दियो

ऐशो हे, ऐशो हे, ऐशो हे आमार वसंत ऐशो हे!

-गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर

न जाने अशक से आंखों में क्यों है आए हुए,

गुजर गया जमाना तुझे भुलाए हुए।

-फिराक गोरखपुरी

♦ व्यंग्य ♦
पनही— कुंभनदास की
रण विजय सिंह

पता नहीं कुंभनदास जी, पनही पहन कर सीकरी क्यों गये थे? न वे पनही पहन कर वहां जाते न वह टूटती। मथुरा-वृंदावन से फतेहपुर सीकरी की दूरी इतनी कम नहीं है कि पनही न टूटे। एक तो उस समय का कांटों से भरा मार्ग! ऊपर से पैदल यात्रा! पनही को तो टूटना ही था। आज की रीबॉक, नाइके, प्यूमा और अडिडास तक की पनहियां भी अगर होतीं तो आना-जाना मिलाकर इस पच्चीस-तीस योजन की यात्रा में यदि टूटती नहीं तो घिस तो जरूर जातीं।

पता नहीं कुंभनदास जी ने पनही पहनी ही क्यों थी? आज के संत तो नहीं पहनते हैं। वे कपड़े, रबर आदि के जूतों या खड़ाऊं से काम चलाते हैं। अधिकांश तो इनकी भी आवश्यकता नहीं समझते हैं। नंगे पांव रहते हैं। ऐसा नहीं कि उनके पास पनही खरीदने की क्षमता नहीं होती। उनके पास तो संसार की उत्तम-से-उत्तम पनहियां पहनने की व्यवस्था होती है पर संत-समाज में पनही पहनना वर्जित है। वह राजन्य तथा उन जैसों के वर्ग के लिये आरक्षित थी। कुंभनदास जी के जमाने में भी संतों के लिये वह वर्जित ही रही होगी पर वर्जित तो उनका सीकरी जाना भी था किंतु कुंभनदास जी ने पनही पहनी। सोचा होगा कि जैसे सत्यानाश वैसे साढ़े सत्यानाश। अगर संत होकर सीकरी जा ही रहे हैं तो नंगे पैर या खड़ाऊं पहन कर क्यों जाएं। पनही पहनने से आरामदेह यात्रा के साथ-साथ राजदरबार में प्रवेश में भी सुविधा रहेगी। जब कृष्ण के दरबार तक में नंगे पांव आने पर सुदामा को द्वारपालों ने रोक दिया था तो यह तो अकबरी दरबार था। यहां प्रवेश की कोई गुंजाइश ही नहीं बनती थी। अतः पनही पहनना आवश्यक था। सो कुंभनदास जी ने पहनी।

वे राजा से मिलने गये थे न कि राजन्य वर्ग में सम्मिलित होने। नंगे पांव यात्रा करने से पांव में मार्ग के कंकड़-कांटे चुभते। खड़ाऊं पहन कर इतनी लंबी यात्रा बहुत कष्टसाध्य होती। कांटों से भी बहुत बचाव नहीं हो पाता। अगल-बगल से चुभते ही रहते। कपड़े या रबर के जूते तब तक प्रचलन में नहीं थे। अर्थात् काफी सोच-विचार

के बाद कुंभनदास जी ने पनही पहनने का निर्णय लिया होगा। हो सकता है इसके लिए अपने अखाड़े से अनुमति भी लिया हो। अनुमति के बिना संत-समाज से निष्कासन का भय जो था। वे समाज से बहिष्कृत हो सकते थे। बताया होगा कि अकबर ने बुलाया है। जाना चाहता हूं पर बगैर पनही के यात्रा नहीं हो सकती है। बिना पनही राजदरबार में प्रवेश भी दुष्कर होगा। अतः पनही पहन कर सीकरी जाने की अनुमति दीजिए। संतों ने भी समाज का कुछ काम बन जाने की आशा में सहमति दे दी होगी।

कुंभनदास जी सीकरी गये। वापस लौटे तो संतों ने पूछा होगा— कुछ काम बना क्या? आखिर बादशाह के बुलावे पर गये थे। काम बनने की पूरी आशा थी। संतों ने कुछ-न-कुछ काम अवश्य बताए रहे होंगे। कुछ व्यक्तिगत, कुछ सार्वजनिक। कुछ धार्मिक तो कुछ सामाजिक। कुंभनदास ने भी कुछ काम सोचे रहे होंगे। काम तो कुछ बना नहीं था। बादशाह से शायद भेंट ही नहीं हो सकी थी। संतों से कैसे कहते कि अकबर से मिल ही नहीं पाये। संत-हंसाई होती। झूठ भी नहीं बोल सकते थे। युधिष्ठिर जैसा बीच का रास्ता निकाला। कवि तो थे ही। अपनी प्रतिभा का उपयोग किया। कवित्त में उत्तर दिया— संतन को कहां सीकरी सो काम। कुछ रुक कर टूट चुकी पनही की ओर इशारा करके कहा होगा— आवत-जात पनहिया टूटी, बिसरि गयौ हरि नाम।

इस बयान से संतों को पता चल गया होगा कि बात कुछ बनी नहीं। इस कवित्त में अपनी दशा बताने के साथ-साथ कुंभनदास ने संतों को भविष्य के लिये सीख भी दे दी। कुंभनदास जी की इस सीख को संतों ने सदियों तक गांठ बांधे रखा। सीकरी की ओर मुंह नहीं किया। कभी जाने का मन होता तो कुंभनदास जी का कवित्त याद आ जाता। पता नहीं स्वामी हरिदास का मामला इस घटना से पहले हुआ था या बाद में, पर तर्कों के आधार पर यदि देखें तो यह परवर्ती ही सिद्ध होती है। बादशाह, संत को सीकरी नहीं बुला पाये और उनका गायन सुनने उन्हें ही चलकर वृंदावन जाना पड़ा। निमित्त बने, तानसेन।

संत अब सीकरी नहीं जाते थे। अकबर, संतों की

कुटिया पर आने लगे। संत जब तक अपनी कुटिया में रहे तब तक सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा। जनता को उनसे प्रेरणा और शक्ति मिलती रही। जनता अपने दुखों को सहने की शक्ति उनकी वाणी में पाती रही। संत, जनता और सीकरी- तीनों ही ठीक रहे पर संतों के सीकरी में बस जाने से यह संतुलन बदल गया। मध्य युग में पोप और उन्नीसवीं सदी में रासपुतिन के समय संत और सीकरी गठजोड़ के कारण ऐसा ही हुआ।

सीकरी का ठिकाना बदलता रहा। वह आगरा, दिल्ली, कलकत्ता होती हुई नयी दिल्ली आ गई। ठिकाने के साथ-साथ सीकरी की शक्ल भी बदलती गयी और बदलता रहा संतों का समाज। संत तो बदले, पर पनही न पहनने की उनकी परंपरा नहीं बदली। वे अब भी पनही नहीं पहनते हैं। उनको अब उसकी जरूरत भी नहीं रह गयी है। वातानुकूलित बड़ी कारों, हेलीकॉप्टरों, विमानों या रेलगाड़ियों के उच्चतम श्रेणी में यात्रा करने के लिए पनही की आवश्यकता कहां होगी? इनमें चाहे कपड़े, रबर के जूते, खड़ाऊं पहने या नंगे पांव रहें, कोई असुविधा नहीं होती है। घिसने या टूटने का भी डर नहीं। वैसे अब चमड़े का प्रयोग किए बिना भी उच्च कोटि की पनहियों का निर्माण हो रहा है, पर संतों को पैदल ही कहां चलना है जो उनका उपयोग किया जाए।

कुंभनदास जी ने दुर्गम मार्ग पर पदयात्रा के लिए पनही पहनी थी अगर उनके लिए भी हाथी या पालकी उपलब्ध होती, तो न तो उन्हें पनही पहननी पड़ती और न ही वह टूटती। कुंभनदास जी के पास आज के संतों की भांति संपन्न भक्त नहीं थे। पनही जुटाना भी उनके लिए समस्या ही रही होगी।

संतों ने कुंभनदास के कवित्त का समाधान निकाल लिया है। वे सीकरी की यात्रायें पनही के बिना कर रहे हैं। न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी। जब पनही पहनेंगे ही नहीं तो फिर टूटेगी कैसे? उन्होंने एक और काट निकाला है। सीकरी में अपना स्थायी आश्रम बना लिया है, जिससे यह न हो कि संत वहां जा रहे हैं। कोई अपने स्थायी निवास- जाता नहीं बल्कि आता है। अतः अब संत सीकरी जाते नहीं बल्कि आते हैं। कुंभनदास जी का शाप जैसा कवित्त इससे स्वयं निष्प्रभावी हो गया है।

आज सभी क्षेत्र के संत सीकरी में ही स्थायी रूप से रह रहे हैं। साहित्य, राजनीति, समाज सेवा (\), कला- किसी भी क्षेत्र के संत जब तक सीकरी नहीं पहुंचते, महंत नहीं बनते। यहां सभी के अपने अड्डे हैं। जनसंख्या के हिसाब से देश का हर पचासवां आदमी- सीकरी में है। सारे महंत वहीं हैं। कुछ बनने की इच्छा लिये ढेरों संत और बटुक प्रतिदिन सीकरी आ रहे हैं और रातों-रात महंत बन जा रहे हैं। यह सब सीकरी का प्रभाव है। तीर्थराज प्रयाग प्रभाव से- काक होइ पिक, बकउ- मराला कम-से-कम तुलसीदास जी का तो यही कहना है, फिर तीर्थराज सीकरी के प्रभाव से बटुक-महंत क्यों नहीं बन सकते? बन ही रहे हैं।

देश की सारी सड़कें, सारे यात्रा मार्ग-सीकरी को जाते हैं। संत करें तो क्या करें? उन्हें तो चलते ही रहना है। वे जनता की सेवा करना चाहते हैं। संत से महंत और महंत से अकबर बनने से जनता की सेवा अधिक सुविधाजनक ढंग से हो सकेगी। महंत बनने में कोई समस्या नहीं है। सीकरी पहुंचते ही सभी महंत बन जाते हैं। वह कुंभनदास हो या नित्यानंद अथवा रासपुतिन। सभी क्षेत्रों का यही हाल है। चाहे वह कला हो या धर्म। महंत तक तो ठीक है पर महंत के बाद अकबर बनने के लिए पानीपत या रामलीला मैदान का युद्ध जीतना होता है। कोई अकबर, थाल में रखकर सीकरी किसी को नहीं सौंप देता है।

प्रस्ताव है युद्ध जीतिये तो अकबर बनिये। हारिये तो कुंभनदास को याद करते हुए टूटी पनही के साथ ब्रजभूमि लौट जाइये और पुनः संत या पुनर्संतो भव। युद्ध नहीं करना है तो आप भी महंत बन कर सीकरी में सुख और समृद्धिपूर्वक रहिये। इच्छा है तो नौरत्न भी बनाये जा सकते हैं।

संतजन अकबर के इस प्रस्ताव पर गंभीरतापूर्वक विचार कर रहे हैं।

अधिकांश स्वीकार भी कर चुके हैं।

मुख्य परिचालन प्रबंधक
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

**आसमां को जिद है जहां बिजलियां गिराने की
हम भी हौसला रखते हैं वहां आशियां बनाने की...।**

◆ गजलें ◆
डा. कृष्ण कुमार सिंह 'मयंक'

एक

मेरे बच्चों के लिए दो वक्त का आटा न था।
हां मगर घर में मताए ज़र्फ़ का घाटा न था।
उसके मरने पर किसी की आंख में आंसू न थे।
जिंदगी का जिसने मिल-जुलकर सफ़र काटा न था।
दोस्तों की दोस्ती ने दिल के टुकड़े कर दिए।
दुश्मनों ने तो कभी मेरा गला काटा न था।
जीत में तो जीत थी ही, हार में भी जीत थी।
था मुनाफा ही मुनाफा प्यार में घाटा न था।
नफरतों की चोटियों पर बैठकर रोता रहा।
जिसने दिल की खाइयों को प्यार से पाटा न था।
अब वही समझा रहा है इश्क का मुझको चलन।
जिसने इक लम्हा किसी के हिज्र का कांटा न था।
दिल धड़कने की सदा आती रही थी ऐ 'मयंक'।
मेरी तन्हाई थी तन्हा, फिर भी सन्नाटा न था।

दो

जिस घड़ी जल जाएंगे दिल के चराग़।
खुद-ब-खुद हो जाएंगे रोशन दिमाग़।
आएगा गुलशन में जब जाने बहार।
दिल चमन का हो उठेगा बाग़-बाग़।
मसलहत उसकी है क्या, जाने वही।
दे दिया इंसां को जो रब ने दिमाग़।
क्या पता उसका बताएं हम तुम्हें।
अपना जब मिलता नहीं हमको सुराग़।
शामे ग़म मेरी चराग़ां हो गई।
जल रहे हैं मेरी पलकों पर चराग़।
हंस रहे हैं क्यों गुनाहों पर मेरे।
वह कि जिनका भी है दामन दाग़-दाग़।
मोतकिद हम तो सभी के हैं 'मयंक'।
'मीर' हों, 'मोमिन' हों, 'ग़ालिब' हों कि 'दाग़'।

तीन

कैसे कह दूं मैं बुजुर्गों का है फ़रमाना ग़लत।
जो समझकर भी न समझे उनको समझाना ग़लत।
उस सितमगर की समझ में यह न आएगा कभी।
जो हैं ठुकराए हुए उनको है ठुकराना ग़लत।
भर के अपने आंसुओं को इशरतों के थाल में।
ले के उनके पास हम पहुंचे हैं नज़राना ग़लत।
देखना जो चाहते हैं हमको रोते ज़ार-ज़ार।
ऐसे लोगों से बहर सूरत है याराना ग़लत।
इस कदर बेग़ानगी छाई हुई है ऐ 'मयंक'।
लग रहा है मुझको हर इक जाना-पहचाना ग़लत।

गजल-5/597

विकास खंड गोमती नगर

लखनऊ-226010

संपर्क: 09415418569

◆ कविताएं ◆
सुधीर कुमार 'चंदन'

मुक्तक

जन-जन का अंधेरा हरे सबेरे की उज्ज्वल भोर
चरण चले चलें लक्ष्य-पथ पर चीरकर अटकल घोर
नयन, नयन भर-भर निहारें 'हर्ष-हरियाली' हरदम
'अमन-मयूर' नाचे नित्य 'जीवन-भूतल' जोर शोर।

सूरज भर-भर दे निज गुनगुनी सौगात शीतल मन
अंधेरे में छिटकी रहो ओ चांदनी! पल-पल सघन
री वर्षा! बरसाओ घनघोर 'अमन-अमानत' हिंद
अरी प्रीति! करो सूने दिलों पे चहल-पहल पावन।

गंगा! न तेरा तन चंगा

किस मुंह से लोग हे गंगाजी! तुझे मां कहते हैं
जब तेरे पावन आंचल में गंदगी भरते हैं
पॉलिथिन से प्राण तेरे आज बेहद छटपटाते
तभी तो तिरे आंसू ज़हर-धार बनकर बहते हैं।

तन-मन के तेरे सब ठेकेदार तुझे ठगते हैं
तेरी सफाई खर्च से अपनी जेबें भरते हैं
भला क्यों न तू ज़हर उगलेगी गंगा मैया
क्योंकि मिल-फैक्ट्री-रसायनों से दूषित करते हैं।

उतारें तन-आरती, मन-आरती न उतारते हैं
आशीष पाने जी से जोर-जोर पुकारते हैं
तन-मन-व्यथा-कथा क्या कहेगी, मां है ना, बस कहेगी,
'सदा सुखी रहो लाल! मेरे प्राण तो सिधरते हैं।'

गोपनीय सहायक
वरिष्ठ मंडल इंजीनियर(समन्वय)
इज्जतनगर-243122
संपर्क: 9997689075

◆ गीत ◆
अशोक कुमार श्रीवास्तव (ऋषि)

दूर से ही

कभी, दूर से ही-
उनके कदमों की आहट जान लेते थे हम
लाख छिपायें अपनी नजरें हमसे
हसरते उनकी जान लेते थे हम॥
दूरियां चाहे लाख हो गयीं क्यों न तब भी,
मगर वक्त, बे-वक्त अक्सर अपनी एहसास जता जाते थे 'वो'।
सवाल बेरुखी होने की नहीं उनकी,
'ऋषि' को तो आज भी पहले की तरह नजर आते हैं 'वो'॥

नहीं कोई चाहत

अब तो न कोई चाहत
न कोई हसरत उनसे मिलने की।
दबा रक्खी है मैंने, अपने सीने में हर गम उनका।
देखना है तो आ के देख ले 'वो' दिल मेरा,
डूब जायेंगी उसमें, क्यों कि वह है समंदर जैसा।
मांझी को भी नहीं पता उन गहराइयों का,
जो जख्म दिये हैं 'वो'
'ऋषि' की उन हसीन अरमानों का॥
अब तो न कोई चाहत,
न कोई हसरत उनसे मिलने की॥

महाप्रबंधक कार्यालय
गोरखपुर

स्वामी रामकृष्ण परमहंस का अनुभव है कि जब मैं दुनिया का पीछा कर रहा था, तो दुनिया मुझसे दूर भाग रही थी। जब मैंने दुनिया की चाटुकारिता छोड़ दी, तो मैं आगे-आगे और दुनिया मेरे पीछे-पीछे-

भागती फिरती थी दुनिया जब तलब करते थे हम।
जब से नफरत हमने की तो बेकरार आने को है॥

◆ कविताएं ◆
अनिल कुमार दत्ता

बिंदी ही सही

उचित नहीं
नुक्ते और बिंदियों से खेलना!
यद्यपि आसान है अब
की-बोर्ड पर कित-कित खेलतीं
मासूम उंगलियों की
चूक की आड़ में
अहं या पूर्वाग्रह का
भावनाओं और संभावनाओं
के साथ खिलवाड़ करना
और विस्मृत कर देना
एक यथार्थ
नुक्ते के हेर-फेर से
खुदा का जुदा हो जाना
बिंदी
जो शांति में भी है,
जो क्रांति में भी है,
जो संरक्षा में भी है,
जो संहार में भी है
और जो है स्वयं
जिंदगी में भी
प्रदान करती
निरर्थकता को सार्थकता
असमर्थता को समर्थता भी।
बिंदी कोई दाग नहीं,
दर्शन है, विज्ञान है,
सभ्यता है, संस्कृति है,
पद्धति है, परंपरा है, दृष्टि है
हर भाषा हर लिपि का
आवश्यक श्रृंगार है
बिंदी एक संस्कार है।
कदाचित्
जिंदगी के माथे की बिंदी को
इधर-उधर खिसका देने मात्र से
नहीं बदल जाती है 'जिंदगी'
या परिभाषा जिंदगी की,
नहीं बदल जाता है-
अर्थ, चरित्र, उद्देश्य,
या कि यथार्थ जिंदगी का
नहीं टूट जाता है धैर्य, हौसला,
खंडित नहीं हो जाता है- विश्वास
रेल रश्मि-आकाश में जाती है- आस्था
मिट नहीं जाता है प्रेम-शाश्वत
अपितु और भी बढ़ जाता है

जिंदगी के प्रति
मोह, मान-सम्मान,
और भी बढ़ जाती है
श्रद्धा, भक्ति और आस्था
और भी बलवती हो जाती है
अपनी इस अनमोल 'जिंदगी' को
हर जन्म में, इसी रूप में पाने की
पवित्र कामना...
आमीन...!

. मेरी अभिलाषा

स्मृतियों में रहना चाहूं
चाह मेरी कुछ और नहीं
क्योंकि मैं सामान्य-समर्पित
मेरे माथे मौर नहीं।
सुलभ तुझे ही रहे सभी कुछ
नहीं मेरी हो भागीदारी
स्नेह मात्र मुझ को मिल जाये
चलती रहे हमारी गाड़ी
एक तुम्हीं रह लो भू-तल पर
जिस पर मेरा ठौर नहीं...
क्योंकि मैं सामान्य समर्पित...
अनंत गगन के पंखी को भी
शीतल छायायुक्त डाल हो,
प्रीत की रीत सदा रहनी है
परिवर्तन चाहे विशाल हो
अंकुश हो अरमानों पर भी
ऐसा कोई दौर नहीं...

क्योंकि मैं सामान्य समर्पित...
आत्मतोष है और निश्छल मन
फिर क्यों अमृत कलश छला?
क्षणभर का है खेल, जिंदगी!
अहंकार तुम में क्यों भला?
एक नैसर्गिक योग प्रेम है,
कोई अंधी दौड़ नहीं...

क्योंकि मैं सामान्य समर्पित...
आत्मदेव कह रहा, त्याग से
पाते हैं संतोष, सरलता
और कभी अपनों से हारना
भी होता है बड़ी सफलता
जीत सदा दे जाये खुशियां
यह संभव किसी तौर नहीं...

क्योंकि मैं सामान्य समर्पित...

कार्यालय अधीक्षक
विधि कार्यालय (कार्मिक)
गोरखपुर

◆ कविताएं ◆
अरुण गोरखपुरी

सरकस

सरकस में

सर कस कर उतरे

ऊ सरकस मिरदंगी लाल

बजा नगाड़ा

तुरही तासा

भालू नाचे

देख बतासा

तब तक सोनपरी

बांसे पर

बउराये नौरंगी लाल।

मेहरारु के

ऊपर तकिया

तकिया पर

लकड़ी का पटिया

तब तक हाथी

चढ़ा ठुमक के

चिल्लाये बजरंगी लाल

सिर पर पोल

पोल पर लड़की

नैन कंटीली

बड़की-बड़की

सोना-सोना

रूप जो देखा

चौन्हाए हुड़दंगी लाल

बड़की कुर्सी

छोटकी कुर्सी

बनी छुहाड़ा

मोटकी कुर्सी

छोटा तोता

तोप चलाए

भकुआये सौ जंगी लाल

हम भी सरकस

तुम भी सरकस

सरकस में सब

जोकर सरकस

तीनों बंदर

लिये झुनझुना

ता-ता थइया रंगी लाल।

गीत

टूटी तो

टूट गई

पत्थर की वह लकीर

टूट गई

शाभा रे

गाभा रे

बुधुआ के

मामा रे

कल तक

वीरानी थी

दुखियारी

रानी थी

पत्थर पर दूब जमी

अन्हियरिया छूट गई

टूट गई

पत्थर की वह लकीर

टूट गई।

नन्हकू से

छोटे से

पिंजरे के

तोते से

कोखभरी का

रोना

ननदी का

छूटा रे

सासू का

भरमजाल

टूटा रे।

कहना था

कहनी थी

छूट गई

टूट गई

पत्थर की वह लकीर

टूट गई।

चंदा सा
 सूरज सा
 एक लाल कोरां
 दो दिन से
 मांगे है
 दूध का कटोरा
 दूर बहुत दिल्ली है
 सांकल है किल्ली है
 पहरा है यहां वहां
 सांकल है किल्ली है
 देखो रे
 जागो रे
 भारत का

माल जरा
 गोदी का
 लाल मरा
 दुखिया की
 वह लाठी
 टूट गई
 भूखी, नंगी
 देही छूट गई
 टूट गई
 पत्थर की वह लकीर
 टूट गई।

ए-24, विंध्यवासिनी नगर
 बैंक रोड, गोरखपुर

कविताएं अरुण श्रीवास्तव

गुज़ल

मेरी खामोशियों का रंगी बयान तुम हो
 मेरी चाहतों का हमदम इम्तिहान तुम हो।
 तेरे बगैर कुछ भी अच्छा नहीं लगता है
 मेरे लिए तो जैसे सारा जहान तुम हो।
 चमका करे है जिसमें महताब की किरण भी
 इस कायनात में वो आसमान तुम हो।
 तेरी याद आये हरदम मैं तुझे न भूल पाऊं
 मेरे खुदा तुम्हीं हो, मेरा कुरान तुम हो।
 तेरी याद के सहारे मैं जी रहा हूँ अब तक
 मेरी जिंदगी के मालिक मेरी दास्तान तुम हो।
 मैं बोलना भी चाहूँ तो न बोल पाऊं या रब
 मेरा मुंह भी तुम्हीं हो, मेरी जुबान तुम हो।
 तेरी कुदरतों के जलवे मेरी जिंदगी का हासिल
 ये 'अरुण' के बदन में बेमिसाल जान तुम हो।

गीत

उत्तर को सींच रही गंगा दक्षिण को कावेरी धारा
 है कायनात में महक रहा फूलों-सा वतन हमारा।

केरल से उठ के बादल लद्दाख जा के बरसें
 इसकी मुहब्बतों को सारा जहान तरसे
 धरती पे ऐसे चमके ज्यों आसमां का तारा,
 है कायनात में महक रहा फूलों-सा वतन हमारा।

सागर पखारता है पांवों को जिसके हर दिन
 कल-कल हैं करती नदियां सीने पे इसके क्षण-क्षण,
 नक्शे कदम पे चलता आलम है इसके सारा,
 है कायनात में महक रहा फूलों-सा वतन हमारा।

इक घर में रहते जैसे आपस में मिल के भाई,
 हिंदू औ सिख के संग इस्लाम औ' ईसाई,
 हर धर्म पंथ करते मिलकर 'अरुण' गुजारा,
 है कायनात में महक रहा फूलों-सा वतन हमारा।

लेखा परीक्षा विभाग
 गोरखपुर-273015
 संपर्क: 9450256174

◆ कविताएं ◆
नरसिंह बहादुर चंद 'कौशिक'

यह देश अजेय अमर है!

‘यहां पादस्पर्शम क्षमस्व मे’ कहकर धरती पर पांव पड़े
यहां देश धर्म हित ललनाएं जौहर-व्रत करके चिता चढ़े
यहां लोग घरों में सुबह-शाम गीता का शुभ संदेश पढ़े
नदियां, पहाड़, तरुवर मिट्टी में लोग यहां भगवान गढ़ें
इसका प्रहरी भूधर है, हर दृश्य यहां पर मनहर है
यह देश अजेय अमर है!

इस पूत-धरा के आंगन में बलिदानी खेला करते हैं
वीणा वादिनी के पूत यहां मुर्दों में भी दम भरते हैं
यहां किसी जान के बदले में अपना तन अर्पित कर देते हैं
और अतिथि देवो भवः की मर्यादा पर भी जीते-मरते हैं
इसका कण-कण शंकर है, पग-पग पावन परिसर है
यह देश अजेय अमर है!

यहां देशभक्त आजादी के हित घास की रोटी खाये हैं
फांसी के फंदे चूम-चूम यहां गीत वतन के गाये हैं
यहां जन्मभूमि के लिए लोग आजीवन लड़ते आये हैं
इस पर कुदृष्टि रखने वाले हरदम ही मुंह की खाये हैं
यहां घर-घर पूजा घर है, चरणों में नतहर सागर है
यह देश अजेय अमर है!

चंद सवाल

व्यर्थ हुआ है यत्न हमारा पैसठ सालों का
अब भी है कायम वजूद मकड़ी के जालों का
दिन पर दिन कुछ दर्द बढ़ा है घटा नहीं कुछ भी
मिल न सका है मरहम तन के रिसते छालों का
घृणा-द्वेष के खूनी मंजर का आकार बढ़ा
ना जाने क्या हो मजहब के बर्छी-भालों का
किसकी थी जिम्मेदारी और किसने सोख लिया पानी
प्रेम, दया, पर-हित, स्वधर्म के सुंदर तालों का
गुनहगार है कौन बताओ, और कौन संरक्षक है
भ्रष्टाचार और शोषण के गंदे नालों का
अगली पीढ़ी का क्या होगा, सोचो कुछ तो सोचो
उत्तर दे सकते हो क्या इन ‘चंद’ सवालियों का।

33, रीड्स साहब धर्मशाला
गोरखपुर-273001
संपर्क: 9335635326

सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ का विवाह 14 वर्ष की अल्पायु में ही हो गया था। उनकी पत्नी हिंदी अच्छी जानती थीं। पत्नी से हिंदी सीखने की इच्छा होते हुए भी जब तक वे उनसे कुछ कह पाते, उसके पूर्व ही वे काल-कवलित हो गईं। सूर्यकांत ने ‘सरस्वती’ पत्रिका के अंक ढूंढ़ निकाले और अपने अध्यवसाय के बल पर हिंदी सीखनी आरंभ कर दी। पर उनकी रचनाएं लौट-लौटकर आती रहीं। उनका उपहास भी हुआ। अंततः एक पारखी ने उनका काव्य संग्रह प्रकाशित किया। यह उस समय का एक निराला प्रयोग था। ‘निराला’ वास्तव में छा गए और साहित्याकाश में चमक उठे। बाल्यावस्था में विवाहित सूर्यकांत को ‘निराला’ बनाने का श्रेय परोक्ष रूप से उनकी पत्नी को ही जाता था, जो कि यह सब देखने के लिए जीवित नहीं रहीं।

◆ कविताएं ◆
पढ़त गुनत में हो गई कविताई
तारकेश्वर शर्मा 'विकास'

॥ एक ॥

संभव नहीं हो पाता
निकहत लिखे हुए पर
दुबारा-तिबारा लिखना
क्योंकि
जो लिखी जा चुकी है
कइयों की कलम से
बार-बार
अब तक सहस्र बार
तो क्या
लिखना अब भी जरूरी है?
हां, जरूरी तो है
तभी तो लिखत-पढ़त में
कुछ लोग
लिखे जा रहे हैं
बीघा का बीघा खेत
कार बंगला फ्लैट
और तो और
अपनी पूरी जिंदगी
आवारगी में
अपनी-अपनी
अनारकली के नाम
आवारजा में अविकल।
इसीलिए-
तू लिख मत!
लिखवा!!
अकूत संपदा
अपने नाम
गैरों के काम।

॥ दो ॥

लिखूंगा,
जरूर लिखूंगा मैं
जाने-पहचाने चेहरों पर
तिल-माशाओं पर
हंसने पर आते
गाल के गड्ढों पर

रेल रश्मि-अंक 59

हंसी-ठूठा में
खिलवत की बोलियों पर
दंवरी खत्म करने के बाद
खिलाकर बैलों को सानी-पानी
खग-पीड़ा के गीत
खंजरीट के नेत्र पर
पिक की मादक तान पर
अलापते हुए
चैती-बिरहा-फाग।

॥ तीन ॥

मिजाजपुरसी में
एक दिन
वे निकहत पूछ ही डाले
एक चांदनी की जन्मतिथि
वो बताई थीं-
शायद इकतीस मार्च,
सन् उन्नीस सौ छि... ।
समझ चुके थे वे
वित्तीय वर्ष की समाप्ति
अपने प्रेम की पूर्णाहुति
पता नहीं-
फरवरी माह के अंत तक
वे टैक्स भरे
या भरे उसकी मांग में सिंदूर
तब तक उड़ती खबर आई
एक कवि
अपनी कविता की पूर्णोपमा में
कर ली आत्म-हत्या।

॥ चार ॥

सफर चाहे जैसा भी हो
अगर हों देखने के लिए
पर्वत, नदियां, झीलें, दृश्य
और हों यादों में किसी की
सुलगती मीठी-चुभन
या मां की गायी हुई लोरियां
हींग से छौंकी दाल की गंध

दोलायमान हिंडोले में बैठने का सुख
 सखी के संग रस-चर्चा
 दादी की बनाई हुई फुलकी रोटियां
 मांडू भात-चोखा संग
 चना-बथुआ का साग
 चोंचा भगत के आल्हा-राग
 तो सफर भला
 काहे ना अच्छा

॥ पांच ॥

अरे भाई!
 कविता कोई पढ़ता भी है क्या?
 खुद ही बताओ!
 एक कवि को
 करना ही क्या होता है?
 गणित-सा हल
 या राजनीति-सा हलचल।
 अब देखो ना!
 जो है संपादक, प्रकाशक
 या किसी लेखक संघ के सदस्य
 या हिंदी के मठाधीश
 अध्यापक प्राध्यापक
 या राजभाषा के प्रहरी
 वे दनादन लिखे जा रहे हैं
 कविता के नाम
 अ-कविता, न-कविता
 अब जमाना कहाँ रहा
 सूर-कबीर-तुलसी का
 जायसी-जयदेव-विद्यापति का
 नर नाहर निराला का
 पंत-अज्ञेय-बच्चन का
 अब तो जमाना है
 पटाखा उड़ाने का
 गद्य-सा छितराकर
 होलिका-दहन करने का
 बिन उत्सव के

होली-ईद मनाने का
 दूसरों के चेहरे पर
 कालिख पोतने का
 जलेस-प्रलेस में
 क्लेश लाने का
 अपना खेमा चलाने का
 दूसरों की खटिया खड़ी करने का
 शब्दों के बारूद से
 कवितालय में आग लगाने का
 अल्फर्ड नोबल की तरह
 डायनामाइट बनाने का।

॥ छः ॥

दिमाग में कुछ न भी आता हो
 तौ भी लिखी जा सकती है कविताएं
 बशर्ते-
 वाक्य-विन्यास में हो अनुशासन
 चित्त शांत हो, चित्तवृत्ति सामान्य हो
 तो निश्चय ही शब्द टपकेंगे
 मीठे अंबुआ के मानिंद
 और चित्त पर चढ़ने लगेंगे भाव
 उस वक्त चित्त देना होगा
 अपनी कविता को
 कि चूस, मन भर रस
 ले, मिठरस का स्वाद।
 हां, बस ध्यान रहे-
 चित्त ना बंटे
 चित्त में धंसे जो कुछ भी
 चित्त चुराए
 चित्त से न उतरे
 तो समझो! हो गई कविताई
 राम-राम भाई

न्यू ट्रेफिक रेलवे कालोनी, इंदा खड़गपुर
 क्वार्टर नं. डब्लू-36, यूनिट-2
 इंदा खड़गपुर-721305 (प. बं.)

संपर्क: 09933615074

जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न मिले, हममें शक्ति और गति न पैदा हो, हमारा सौंदर्य-प्रेम न जाग्रत हो, जो हम में सच्चा संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह आज हमारे लिए बेकार है, वह साहित्य कहाने का अधिकारी नहीं।
 -प्रेमचंद

◆ कविताएं ◆

ज्योत्स्ना श्रीवर्मा

संदेश (गद्य रूप में)

ये आज कोई नई घटना नहीं हुई है घटित,
क्यों है देश हमारा, आश्चर्य-चकित?
बारंबार!
देश में हो रहा दुष्कर्म!
प्रसरित, पल्लवित होता रहा है,
अधर्म!
ठीकरे फोड़ते रहे एक दूसरे के सर,
भुक्तभोगी!

न्याय मांगता रहा हो कर कातर!
बेटियों के साथ दुष्कर्म करने वालों,
चेतो!
संभल जाओ!!
आज तुम किसी की बेटी को छल रहे हो,
तो!
उधर कहीं,
किसी स्थान पर,
छली जा रही!!
तुम्हारी भी बेटियां!!!
अब! उफ! कर लो!
छोड़ दो दरिंदगी! मत बनो! भ्रष्टाचारी, दुराचारी, व्यभिचारी
अपने सुविवेक को जगाओ! आंखें खोलो! बनो सुविचारी!
वरना!!
तुम्हारी भी फट जाएंगी छातियां!
जब बहू बन कर तुम्हारे ही घर में आएंगी ये बेटियां!
अरे!
ये तो-
बेटियां हमारी आंगन की किलकारियां हैं!
बेटियां हमारी बगान की फुलवारियां हैं!
बेटियां हमारी आकाश को छूने वालियां हैं!
बेटियां हमारी पहाड़ की चोटी तक चढ़ जाने वालियां हैं!
परंतु!
तब!
बेटियां हमारी बन जाती हैं बोझ भी!
जब उन मांओं की बेटियों के साथ,
कुछ मनबढ़े मनचले-
बेशर्म हरकत करते हैं।
तब!
तड़प उठती हैं,
बेटियों को जन्म देने से,
और
रेल रश्मि-अंक 59

करुण क्रंदन कर उठती
उन बेटियों की मम्मियां हैं।
ओह!
पहले अपराध!
फिर सजा (दंड) का क्या है प्रकरण?
पहले से ही!
कानून!! नियम!!
कठोर से कठोर ऐसे बनाएं
कि, हर इक इंसां!
दुर्व्यवहार! भ्रष्टाचार! अमानुषपन!
करने से पहले,
करने वाले के,
शरीर की सारी की सारी हड्डियां तक
कांप जाए! कां S S S प जा S S S एं
अरे! वो! तो!
जागृतावस्था में क्या?
सुप्तावस्था में भी उसे,
कंपकंपी, पसीने छूट जाए!!!

मां तुझे कोटि-कोटि प्रणाम!

सांसें के बंधन से, कर लिया अपने को मुक्त, हो उन्मुक्त
चल पड़ी उस डगर, जो तुम्हें ले गया मोक्ष की राह पर।
शांत! निःशब्द! चेहरे पर ओज लिए,
सब की आंखों में नमी दिए।
बेसुध, बेखबर!
आज अपनों के नाम पर।
अपने तो अपने, पूरा मुहल्ला खड़ा है।
ठंडक भी अपने पूरे जोरों पर अड़ा है।
जिन बच्चों को कल तक अपने कंधे पर थी झुलाती, पुचकारती
आज वही ढेर सारे कंधे, तुम्हारे लिए एकत्रित हुए हैं
जिन्हें तुम थी दुलारती।
मां तुमने एक बार फिर अपनी ममता को जाते-जाते दिखा दिया
इस बर्फीली ठंडी घनी रात्रि में, दाह-संस्कार करने वाले सुपुत्र को
गंगा स्नान करा कर, अर्द्धनगनावस्था में अपने समीप बिठा लिया
धू-धू कर जल उठी थी कि मेरे लाल को न होवे सिहरन,
स्वयं को अग्नि में समर्पित, दे रही थी अपने अगन से तपन
मां तुम धन्य हो!
मां तुम्हें कोटि-कोटि प्रणाम!

बंगला नं.56/बी
कौवाबाग रेलवे कालोनी, गोरखपुर

◆ कविताएं ◆
यशवीर सिंह

होली तो धरती पर मानों संगम है

गांवों में सब ओर कबीरा हो रहा,
ढोलक धिनके साथ मजीरा खो रहा।
खेल रही होली मोहन से राधिका,
बेसुध तन-तन-मगन प्रेम की साधिका।
गोकुल का कांधा राधा के साथ में
दोनों के ही पिचकारी है हाथ में
दोनों के माथे पर लगा अबीर है,
आंखों में कुछ नई-नई तस्वीर है।
माथे से रंगीन पसीना चू रहा,
दोनों का ज्यों अधर अधर को छू रहा।
होली का त्योहार मनाने के लिए,
आए हैं नर-नारी गाने के लिए।
फड़क रहा सुन कर के फागुन अंग है,
नस-नस में नव-युग का भरा उमंग है।
आगे से है कोई होली खेलता,
पीछे से आ कोई रोली मेलता।
पी कर कोई भंग लुढ़कता जा रहा,
बन कोई गंधर्व उड़ा-सा आ रहा।
काले-गोरे की भी न पहिचान है,
सबके मुंह में रंग, रंगा परिधान है॥
झांक रही उषा पूरब के द्वार से,
दबी हुई अपने ही यौवन भार से।
बिखर रही यह अधरों की मुस्कान है,
निखर रही छवि न्योछावर तन-प्राण है।
ले कर कोटि किरण-पिचकारी हाथ में,
खेल रही होली हिम-गिरिवर साथ में।
रंग-बिरंगी शैल-श्रेणियां हो रहीं,
नदियां कल-कल बहती सुध-बुध खो रहीं।
बन-उपवन धरती का आंचल लाल है,
आज प्रकृत के मुख में लगा गुलाल है॥
होली तो धरती पर मानों संगम है,
महिमा इसकी स्वर्ग-लोक से न कम है।
पावन इतना महाकुंभ के जैसा है,
गंगा-जमुना-सरस्वती के जैसा है।
रंग-बिरंगी टोली साधु-संतों की

जगह-जगह पर उमड़ी भीड़ महंथों की
बोल रहे जो तरत-तरह की बोली हैं,
किंतु दीखते जैसे सब हमजोली हैं।
सपना या कि इन्द्रजाल-सा लगता gS]
ltk gqv;k ;k fdlh ekWy&lk yxr;k

gSA

दामिनी : एक श्रद्धांजलि

माथे पे लगा आज जो अपमान का टीका
हैवानियत के रूप में है काम उन्हीं का।
जो लग गया है दाग छिपाया न जायेगा,
कर लो जतन पे लाख मिटाया न जायेगा।
लगता है कि कोई यहां महफूज नहीं है,
अबला की आबरु की कोई गूंज नहीं है
'सारे जहां से अच्छा' का नारा कहां गया,
फिर आज अपना देश वह प्यारा कहां गया।
धिक्कार जहां बेटियों की आबरु लूटे,
अपराधियों की फौज जहां रात-दिन जुटे।
जिसने सुना भी हाल, कलेजा निकल गया,
सारे नसों का खून था जैसे उबल गया।
संसार पूछता है कहां दामिनी गई,
सबको जगा के आज कहां दामिनी गई।
आई थी जहां यान से पर मौन पड़ी थी,
आंखों से जहां छूटती आंसू की लड़ी थी।
जिसके महाप्रयाण पर जहां थी सोनिया गई,
आंसू से मगर भीग जहां सोनिया गई।
चमके घटाओं में कभी हैं दामिनी वही,
झंझा की झकोरों में पली दामिनी वही।
चारों तरफ से आज यह आवाज उठा दो,
अपराधियों को जल्द ही फांसी की सजा दो।
लगता है यहां कोई न्यायाधीश नहीं है,
भगवान के इस देश में भी ईश नहीं है।
फिर देश की महिलाओं की न आबरु लूटे,
घर के किसी चिराग की फिर से न लौ बुझे।

452, पुरदिलपुर
गोरखपुर

संपर्क: 9455239774

56

◆ कविता ◆
रंगों की सेल
सुनील कुमार श्रीवास्तव

वैसे तो बाजार में सालों-साल
चलता है विज्ञापनों का खेल,
पर एक दुकान के विज्ञापन ने
मुझे चौंकाया,
लिखा था होली के अवसर
पर रंगों की सेल
दुकानदार कह रहा था
आइये मेरी दुकान पर है
रंगों की भरमार
कहिये, दिखाऊँ आपको भी
दो-चार
मैंने सहमति में जब मुड़ी
हिलाई
तो उसने सब रंगों की महिमा
सुनाई
देखिये साहब
यह पैरवी का रंग है,
इसकी विक्री देखकर हम दंग हैं,
आजकल इस रंग का
सिक्का खूब चलता है
पैरवी के बिना चुनाव का
टिकट तक नहीं मिलता है
आप भी खरीदकर इसको
ले जाइए
मनचाही जगह पर ट्रांसफर
कराइए
इधर देखिए, इस रंग का
नाम भ्रष्टाचार है,
आजकल इसका खूब ही प्रचार है
इस रंग की यह बहुत बड़ी
खूबी है
कि सारी राजनीति इसी
रंग में ही डूबी है
आजकल नकल का रंग भी
सक्रिय है
स्कूल के विद्यार्थियों में
बहुत लाकप्रिय है
विक्री इसकी चालू है
बच गया आधा है
कवि गोष्ठियों में भी
रंग रश्मि-अंक 59

इसकी मांग ज्यादा है
यह है बेईमानी का रंग
इसकी विक्री धुआधार है,
इसी के बल पर कायम
आज का बाजार है,
आतंकवाद के रंग को
बाहर भेजने का इरादा है,
क्योंकि पड़ोसी देशों में
इसकी मांग ज्यादा है,
विश्वासघात के रंग का भी
कई लोगों को इंतजार है
दल बदलुओं में इसका
बहुत प्रचार है,
इसके बाद हम ईमानदारी
के रंग पर आते हैं,
इसके खरीददार जल्दी
नहीं मिल पाते हैं,
जो भी कोई यह रंग
खरीद कर ले जाता है,
बड़े-बड़े चेहरों का रंग
उतर जाता है,
प्रेम का रंग,
नैतिकता का रंग,
दया का रंग और
सच्चाई का रंग,
इनकी वैधता तिथि
समाप्त हो गई है,
इनको स्क्रीन में बेचने
की बात हो गई है
इसके अलावा अब कोई
सूरत नहीं है,
समाज को अब इनकी
जरूरत नहीं है,
कौन सा रंग लूँ मैं
यह तय नहीं कर पाया हूँ
यही एक सवाल लेकर
आज यहां आया हूँ।

772/ए,
कौवाबाग रेलवे कालोनी, गोरखपुर
संपर्क: 9794840189

◆ कविता ◆
महेंद्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

हकीकत

जब वह
छोटा था,
कहता था-
आजीवन
माता-पिता की
सेवा करूंगा
और उनका
मकसद पूरा करूंगा

कल उसकी
शादी हुई,
आज वह
कहता है-
पहले माता-पिता को
घर से
बाहर करूंगा
फिर घर में अपना
पैर धरूंगा

धक्के खाइए

एक नई कवयित्री
हमारे सामने अड़ी है
बहुत दिनों से वह
हमारे पीछे पड़ी है
कहती है-
कवि जी,
कवि सम्मेलन में
जाते हो
हमें कुछ नहीं खिलाते हो!
आखिर हैरान होकर
हम उन्हें एक मेले में
में ले गए
और अपने पैसे पहले ही
श्रीमती जी को दे गए!
मेले में वह
खुश होकर बोली-
अपने दिल की गांठ खोली-
कवि जी क्या-क्या खिलाओगे
बतलाइए
हमने कहा-
बड़े मजे से धक्के खाइए।

उत्साही प्रकाशन
22 बजरंग वाटिका, रावण गेट
झोटावाड़ा, जयपुर-302012
संपर्क: 09928139594

क्या बहार है बसंत की

मृदु मंजु रसाल मनोहर मंजरी, मोर-पखा सिर पै लहरें।
अलबेलि नबेलिन बेलिन में, नवजीवन जोति छटा छहरें॥
पिक-भृंग सुगुंज सोई मुरली, सरसों-सुम पीत पटा फहरें।
रसवंत विनोद अनंत भरे, ब्रजराज बसंत हिए बिहरें॥

◆ गतिविधियाँ ◆

मुख्यालय

महाप्रबंधक श्री कृष्ण कुमार अटल की अध्यक्षता में 27.02.13 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई जिसमें गोरखपुर नगर के विभिन्न कार्यालयों, निगमों आदि के कार्यालयाध्यक्ष उपस्थित हुए और अपने कार्यालयों में किए जा रहे हिंदी कार्यों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। उक्त बैठक में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार की प्रगति की गहन समीक्षा की गई।

17.01.13 को मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री एच.के.अग्रवाल की अध्यक्षता में मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें विभिन्न विभागों, विभागेतर इकाइयों, कारखानों तथा प्रशिक्षण केंद्रों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार की प्रगति की गहन समीक्षा की गई।

मुख्यालय के परिचालन विभाग में 24.12.12 को, संरक्षा विभाग में 19.12.12 को, विद्युत विभाग में 17.12.12 को समीक्षा बैठकें एवं निर्माण संगठन में 20.12.12 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया।

पर्यवेक्षक प्रशिक्षण केंद्र/गोरखपुर में 12.01.13 को समपार फाटक पर संचालित संरक्षित ट्रेन संचालन, टाइप लॉक सीबीसी, फॉगी मौसम में ट्रेन संचालन एवं ब्रेक बाईंडिंग, 05.01.13 को कोहरे के समय सुरक्षित ट्रेन संचालन, समपार पार करते समय अपनाई जाने वाली सावधानियां एवं 19.10.13 को माइक्रोप्रोसेसर लोको की ट्रबल शूटिंग विषयों पर तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

21.12.12 को मुख्यालय के इंजीनियरी विभाग में विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

17.01.13 माह में मुख्य राजभाषा अधिकारी ने मुख्यालय स्थित केंद्रीय हिंदी पुस्तकालय का निरीक्षण किया।

इज्जतनगर

06.12.12 को श्री उमेश सिंह, मंडल रेल प्रबंधक की अध्यक्षता में मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार की प्रगति की गहन समीक्षा की गई।

16.01.13 को वरि. सहा. नगर इंजीनियर कार्यालय,

21.01.13 को बदायूं एवं मथुरा छावनी, 23.01.13 को काठगोदाम, 25.01.13 को काशीपुर एवं 28.01.13 को वरि.मंडल यांत्रिक इंजीनियर/डीजल में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

08.12.12 को फतेहगढ़, 01.12.12 एवं 20.01.13 को बदायूं, 15.01.13 को बरेली सिटी, 16.01.13 को इज्जतनगर एवं मथुरा छावनी, 23.01.13 को काठगोदाम, 25.01.13 को काशीपुर एवं 28.01.13 को डीजल शेड/इज्जतनगर स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया।

मंडल रेल प्रबंधक श्री उमेश सिंह ने 02.12.12 को गाड़ी सं. 55334 से मथुरा छावनी-कासगंज खंड एवं गाड़ी सं. 52217 से कासगंज-बरेली ज. खंड का विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण किया। 14.12.12 को 25013 से मुगदाबाद-रामनगर खंड का विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण किया। 20.12.12 को काठगोदाम स्टेशन तथा गाड़ी सं. 14119 से काठगोदाम-लालकुआं खंड का फुटप्लेट निरीक्षण किया। 09.01.13 को सड़क मार्ग द्वारा इज्जतनगर-कासगंज खंड, स्टेशन एवं रनिंग रूम का निरीक्षण किया और उसी दिन कासगंज-फर्रुखाबाद खंड विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण एवं फर्रुखाबाद स्टेशन का निरीक्षण किया। 12.01.13 को गाड़ी सं. 55349 से इज्जतनगर-लालकुआं विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण तथा 23.01.13 को कासगंज-फर्रुखाबाद खंड, बरेली-कासगंज खंड का निरीक्षण किया। इन सभी निरीक्षणों के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार संबंधी कार्यों का भी निरीक्षण किया।

अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री सोमेश कुमार ने 06.12.12 को इज्जतनगर से पूरनपुर तक फुटप्लेट, 07.12.12 को पूरनपुर स्टेशन, 15.12.12 को दिल्ली में गाड़ी सं. 15013 से रानीखेत एक्सप्रेस के रैक तथा लाजपतनगर विश्रामगृह, 22.12.12 को रामनगर स्टेशन एवं समपार सं.22/सी का निरीक्षण किया जिसमें राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार संबंधी कार्यों का भी निरीक्षण किया।

राजभाषा अधिकारी श्री राजेंद्र कुमार द्वारा 01.12.12 को बदायूं स्थित सीसेई/कार्य एवं सीसेई/रेलपथ, 08.12.12 को फतेहगढ़ स्थित स्टेशन प्रबंधक कार्यालय एवं महादेवी वर्मा हिंदी ग्रंथालय का निरीक्षण किया गया।

लखनऊ

08.02.13 को मंडल रेल प्रबंधक श्री विनोद कुमार यादव की अध्यक्षता में मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार की प्रगति की गहन समीक्षा की गई।

हिंदुस्तान एरोनोटिक्स लिमिटेड, लखनऊ के तत्वावधान में 29.01.13 को लखनऊ नगर की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में लखनऊ मंडल कार्यालय को सर्वाधिक कार्य हिंदी में करने के लिए विशिष्ट कार्यालय का पुरस्कार प्राप्त हुआ।

12.02.13 को बादशहनगर स्टेशन पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कर्मचारियों ने भाग लिए।

06.12.12 को नौतनवां, 26.12.12 को गोरखपुर/पश्चिम, 28.12.12 को डीजल शेड/ इज्जतनगर एवं 02.01.13 को बलरामपुर स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया।

अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री एम.के.अग्रवाल ने 26.12.12 को लखनऊ जं. स्थित अमृतलाल नागर हिंदी ग्रंथालय 02.01.13 को संयुक्त कार्यालय/गोंडा के हिंदी ग्रंथालय, डीजल शेड/गोंडा एवं बलरामपुर, 03.01.13 को कानपुर अनवरगंज के हिंदी ग्रंथालय, 04.01.13 को मंडल हिंदी ग्रंथालय/ लखनऊ एवं 09.01.13 को आनंदनगर तथा गोरखपुर के हिंदी ग्रंथालयों का निरीक्षण किया जिसमें राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार संबंधी कार्यों का भी निरीक्षण किया।

राजभाषा अधिकारी श्री शैलेश कुमार मिश्र द्वारा 31.12.12 को मंडल के परिचालन विभाग तथा 04.02.13 को आनंदनगर स्टेशन स्थित विभिन्न कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार संबंधी कार्यों का निरीक्षण किया गया।

राजभाषा सहायकों द्वारा 06.12.12 को नौतनवां, 10.12.12 को बस्ती एवं 26.12.12 को खैराबाद स्टेशनों

का निरीक्षण किया गया।

लखनऊ दर्पण का अंक-7 अक्टूबर-दिसंबर/2012 का प्रकाशन किया गया।

वाराणसी

12.12.12 को अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री आनंद भाटिया की अध्यक्षता में वाराणसी मंडल में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार की प्रगति की गहन समीक्षा की गई।

07.12.12 को कप्तानगंज, 14.12.12 को देवरिया सदर, 18.12.12 एवं 23.01.13 को मंडल प्रशिक्षण केंद्र/मंडुवाडीह 07.01.13 को मंडल कार्यालय और 16.01.13 को वाराणसी सिटी स्टेशन पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कर्मचारियों को राजभाषा नीति एवं पुरस्कारों के विषय में जानकारी दी गई।

20.02.13 को मंडल कार्यालय में मुख्यालय के सहयोग से यूनिकोड एवं वेबसाइट विषयक तकनीकी संगोष्ठी प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

07.12.12 को कप्तानगंज, 12.12.12 को गोरखपुर पूर्व, 11.12.12 को औड़िहार जं., 18.12.12 को सीवान, 14.12.12 को देवरिया सदर, 23.01.13 को मंडुवाडीह, 29.01.13 को आजमगढ़, 16.01.13 को वाराणसी सिटी, 24.01.13 को गाजीपुर सिटी एवं 24.01.13 को मऊ जं. स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया गया।

राजभाषा अधिकारी श्री संजय सिंह द्वारा 07.12.12 को कप्तानगंज, 14.12.12 को देवरिया सदर, 18.12.12 को मंडल प्रशिक्षण केंद्र/ मंडुवाडीह एवं 04.01.13 को इलाहाबाद सिटी स्थित हिंदी ग्रंथालय के कार्यों का निरीक्षण किया गया।

कलम धर्म है, कलम कर्म है
कलम बड़ा ईमान है।
जिस सीमा का अंत नहीं,
वह कलमों का मैदान है।



29.01.13 को लखनऊ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में एच.ए.एल. के महाप्रबंधक श्री चंद्र कैलाश विश्वकर्मा से सर्वाधिक कार्य हिंदी में करने के लिए विशिष्ट कार्यालय का शील्ड व पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री एम. के. अग्रवाल, अमरेंद्र एवं अपर मुराधि



08.02.13 को लखनऊ मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक को संबोधित करते श्री विनोद कुमार यादव, मरिप्र साथ में श्री एम. के. अग्रवाल, अमरेंद्र एवं अपर मुराधि एवं श्री शैलेश कुमार मिश्र, राधि



20.02.13 को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय वाराणसी में आयोजित तकनीकी संगोष्ठी में यूनिफाइड की सक्रियता एवं इंस्क्रिप्ट की-बोर्ड के अभ्यास पाठ्यक्रम में भाग लेते मंडल के कंप्यूटर प्रयोक्ता



20.02.13 को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय वाराणसी में आयोजित तकनीकी संगोष्ठी में यूनिफाइड की सक्रियता एवं इंस्क्रिप्ट की-बोर्ड के अभ्यास पाठ्यक्रम पर व्याख्यान देते श्री श्याम बाबू शर्मा, कनिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय राजभाषा विभाग



06.12.12 को इज्जतनगर मंडल सभागार में विशेष हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते श्री सुधीर विद्यार्थी, साहित्यकार व स्तंभकार साथ में श्री उमेश सिंह, मरिप्र, श्री सोमेश कुमार, अमरेंद्र एवं अपर मुराधि



12.12.12 को इज्जतनगर अधिकारी क्लब में आयोजित कवि सम्मेलन में काव्य पाठ करते श्री विश्वजीत निर्भय व मंचासीन अन्य कविवगण



महावीर प्रसाद द्विवेदी



महादेवी वर्मा



रघुपति सहाय 'फिराक'



नागार्जुन

श्री एच. के. अग्रवाल, मुख्य राजभाषा अधिकारी, पूर्वोत्तर रेलवे द्वारा प्रकाशित एवं
श्री बी. पी. वर्मा, वरि. प्रबंधक, मुद्रण एवं लेखन सामग्री, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर द्वारा मुद्रित